देश विदेश की लोक कथाऐं — चलो हम भी चलें ः

चलो हम भी चलें

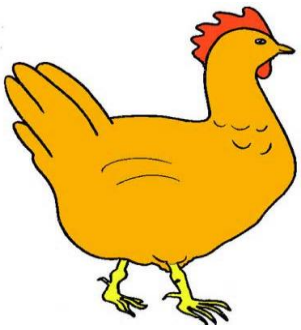

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Chalo Hum Bhi Chalein (Let's Go Together)
Cover Picture : Three Animals Go Together
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5

चलो हम भी चलें 7

1 अनन्सी और बोलता हुआ तरबूज 9

2 किस्टल का मुर्गा 20

3 आधा मुर्गा 28

4 मकड़ी और पिस्सू 43

5 चूहा और बिल्ली 48

6 छोटी बूढ़ी दादी 56

7 बागीचे में बकरियॉ 61

8 दुनियॉ का इनाम 67

9 लम्बू, चौड़ू और दूर का देखने वाला 73

10 जमीन और पानी पर चलने वाली नाव 87

11 एक बेवकूफ और उड़ने वाला पानी का जहाज 100

12 पॉच रोग 119

13 मोमोटारो या खूबानी का बच्चा 137

14 एक बिल्ले और एक मुर्गी की कहानी 141

15 बेवकूफ बन्दर और केकड़ा 146

16 दस्ताने 154

17 बड़ा दिल और तीन इम्तिहान 160

18 सुनहरी बतख 172

19 जैक ने अपनी किस्मत कैसे बनायी 182

20 जैक और उसके साथी 187

21 भेड़ा और सूअर... 201

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब सौ साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
जून **2022**

चलो हम भी चलें

अक्सर ऐसा होता है कि अगर कोई किसी काम से कहीं निकलता है या कहीं जाता है तो रास्ते में मिलने वाले भी उसके साथ साथ हो लेते हैं। यह कभी फायदेमन्द होता है तो कभी नुकसान भी पहुँचाता है। और यह केवल एक या दो देशों की ही बात नहीं है ऐसा कई देशों की लोक कथाओं में पाया जाता है।

यहाँ हम अलग अलग देशों से इकट्ठी की गयी कुछ ऐसी ही लोक कथाऐं दे रहे हैं जिनमें जब कुछ लोग इस तरह से कहीं जाने के लिये निकले हैं तो रास्ते में उनको मिलने वाले लोग भी उनके साथ चल दिये। आदमियों के साथ आदमी और जानवर दोनों और जानवरों के साथ अक्सर जानवर ही हैं।

इन कथाओं को पढ़ो और देखो कि इन कथाओं में साथ चलने वाले साथियों ने अपने साथी की किस तरह सहायता की और जाने वाले को अपने उन साथियों से कितना फायदा हुआ। तो लो पढ़ो ये इतनी सारी लोक कथाऐं साथ में चलने वाले लोगों की।

ये सारी लोक कथाऐं हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से ख़ास तौर पर इकट्ठी की हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों का मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी बतायेंगी और तुम्हें पसन्द आयेंगी।

1 अनन्सी और बोलता हुआ तरबूज[1]

साथ चलने की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये उत्तरी अमेरिका के दक्षिण पूर्व में स्थित कैरिब्बियन द्वीप समूह की लोक कथाओं से ली है।

एक दिन अनन्सी मकड़ा एक बहुत बड़े कॉटों के पेड़ पर बैठा हुआ था। उस पेड़ के नीचे हाथी का तरबूज का खेत था। वह वहॉ बैठा बैठा उसी को देख रहा था।

हाथी अपने खेत में से तरबूज निकाल रहा था। तरबूज पके हुए थे सो उनको देख कर अनन्सी के मुँह में पानी आ रहा था। उसको ऐसा लग रहा था जैसे वे कह रहे हों कि "देखो हम कितने रसीले और मीठे हैं। आओ और हमको खा लो।"

अनन्सी को तरबूज बहुत अच्छे लगते थे पर वह उनको अपने आप उगाने के लिये बहुत आलसी था।

इसी लिये वह उस कॉटे वाले पेड़ पर बैठा था कि वह वहॉ से उनको देखता रहेगा और उनको खाने के लिये समय का इन्तजार

[1] Anansi and the Talking Melon – A folktale from Caribbean islands, North America
This story taken from the book "Anansi and the Talking Melon". By Eric A Kimmel. Anansi is a spider fairy whose folktales are very famous and popular in West Africa. Many stories of Anansi are available from hindifolktales@gmail.com in Hindi in e-book form free of charge – "Anansi Makada Africa Mein-1" and "Anansi Makadaa Africa Mein-2"

करता रहेगा कि जब सूरज आसमान में ऊपर चढ़ जायेगा और दिन गर्म हो जायेगा तभी वह उनको तोड़ेगा।

जब दोपहर हो गयी तो बहुत गर्म हो गया और इतनी गर्मी में हाथी के लिये काम करना बहुत मुश्किल हो गया तो हाथी ने अपना हल रख दिया और थोड़ी देर के लिये सोने के लिये अपने घर चला गया।

अनन्सी के लिये बस यही तो समय था। इसी पल का तो वह इन्तजार कर रहा था। उसने पेड़ से एक कॉटा तोड़ा और एक तरबूज को निशाना बनाते हुए तरबूज के खेत में नीचे फेंक दिया।

उसने यह कॉटा एक सबसे बड़े और सबसे ज़्यादा पके हुए तरबूज में छेद करने के लिये फेंका था। उसका कॉटा सीधा उस तरबूज में लगा और उसमें एक छेद कर दिया। उस कॉटे ने उसका वह काम कर दिया जो वह चाहता था।

यह देख कर अनन्सी उस पेड़ से नीचे उतरा और उस छेद में से उस तरबूज के अन्दर घुस गया और उसे खाना शुरू कर दिया।

वह उसे खाता रहा खाता रहा और तब तक खाता रहा जब तक कि उसे खा खा कर वह एक बैरी[2] के बराबर मोटा नहीं हो गया।

[2] Berries are wild fruits with or without stones, such as straw berries, black berries, blue berries etc. See their picture above.

आखिर अनन्सी बोला — "ओह। अब मेरा पेट भर गया। हाथी भी अब आता ही होगा सो अब मुझे यहॉ से चलना चाहिये।"

पर जब वह उस छेद से बाहर निकलने की कोशिश करने लगा जिसमें से वह आया था तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह तो अब उस छेद में से निकल ही नहीं पा रहा था।

वह छेद किसी पतले से मकड़े के लिये तो ठीक था पर किसी बहुत मोटे मकड़े के लिये बहुत छोटा था।

अनन्सी रो पड़ा "अरे मैं तो यहॉ अटक कर ही रह गया। मैं तो अब बाहर निकल ही नहीं सकता। मुझे तो अब तब तक इन्तजार करना पड़ेगा जब तक मैं फिर से पतला नहीं हो जाता।"

सो अनन्सी वहीं तरबूज के अन्दर उसके बीजों के ढेर पर बैठ गया और अपने पतले होने का इन्तजार करने लगा। समय बड़ी धीरे धीरे गुजर रहा था।

अनन्सी इस तरह बैठे बैठे थक गया। वह बोला — "मैं तो यहॉ इस तरह बैठे बैठे थक गया काश यहॉ मेरे पास करने के लिये कुछ होता।"

उसी समय उसने हाथी के आने की आवाज सुनी। वह डर गया कि अब क्या होगा तो उसके दिमाग में एक विचार आया।

उसने सोचा — "जब हाथी और पास आ जायेगा तो मैं इसके अन्दर से कुछ बोलूँगा। उसको लगेगा कि यह तरबूज तो मुझसे बात कर रहा है। बड़ा मजा आयेगा।"

हाथी अपने तरबूज के खेत की तरफ बढ़ा चला आ रहा था। उसने एक बड़ा सा पका हुआ तरबूज देखा तो उसको उठाते हुए बोला — "अरे देखो तो इस बढ़िया तरबूज की तरफ देखो। यह कितना बड़ा और कितना पका हुआ है।"

अनन्सी चिल्लाया — "आह।"

तरबूज में से आती आवाज सुन कर हाथी उछल पड़ा और बोला — "आह। यह आह किसने कहा?"

अनन्सी ने तरबूज में से कहा — "यह मैंने कहा, तरबूज ने।"

हाथी बोला — "मुझे नहीं मालूम था कि तरबूज भी बोलते हैं।"

अनन्सी बोला — "हॉ हॉ हम भी बोलते हैं। हम तो हमेशा ही बात करते हैं। बस मुश्किल यह है कि तुम लोग हमारी बात कभी सुनते ही नहीं।"

हाथी आश्चर्य में भर कर फिर बोला — "मुझे तो अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हो रहा। एक बोलता तरबूज। इस पर विश्वास भी कौन करेगा? मैं इसको राजा को ले जा कर दिखाऊँगा।"

वह उस तरबूज को जिसमें अनन्सी बैठा था ले कर राजा के महल की तरफ जाने वाली सड़क पर बढ़ चला।

रास्ते में उसको एक हिप्पो मिला तो हिप्पो ने हाथी से पूछा — "अरे हाथी भाई, तुम इस तरबूज को ले कर कहॉ जा रहे हो?"

हाथी बोला — "हिप्पो भाई, मैं इस तरबूज को राजा के पास ले जा रहा हूँ।"

हिप्पो बोला — "पर क्यों? राजा के पास तो सैंकड़ों तरबूज हैं। तुम्हारे इस तरबूज में क्या खास बात है जो तुम इसको राजा के पास ले कर जा रहे हो?"

हाथी ने मुस्कुराते हुए कहा — "हाँ हिप्पो भाई यह तरबूज तो बहुत खास है। उसके पास ऐसा तरबूज नहीं है जैसा यह है। यह बोलता हुआ तरबूज है।"

हिप्पो को हाथी की बात पर विश्वास नहीं हुआ तो वह बोला — "क्या कहा तुमने बोलता हुआ तरबूज? अरे वाह। यह तो बड़ी अजीब सी बात है।"

तभी तरबूज बोल पड़ा — "अरे ओ पतले दुबले हिप्पो।"

यह सुन कर हिप्पो इतना नाराज हुआ कि उसका चेहरा लाल पड़ गया। वह बोला — "किसने कहा यह? मैं और पतला दुबला? क्या तुमने कहा यह हाथी भाई?"

हाथी हँस कर बोला — "नहीं नहीं। मैंने नहीं कहा यह। मैं ऐसी बात तुम्हारे लिये कैसे कह सकता हूँ। यह तो यह तरबूज बोला। मैंने तुमसे कहा था न कि यह तरबूज बोलता है। अब तो तुमको मेरी बात का विश्वास हो गया न?"

हिप्पो अभी भी अविश्वास के साथ बोला — "हॉ अब मुझे विश्वास हो गया। मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा। मुझे भी जानना है कि जब तुम इस बोलते हुए तरबूज को राजा को दोगे तब राजा क्या कहता है।"

हाथी बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। तुम भी चलो मेरे साथ।" और दोनों राजा के पास उस बोलते हुए तरबूज को ले कर चल दिये।

चलते चलते उनको रास्ते में एक बड़ा सूअर[3] मिला तो बड़े सूअर ने भी उनसे पूछा — "तुम दोनों इस तरबूज को ले कर कहॉ जा रहे हो?"

हाथी और हिप्पो दोनों एक साथ बोले — "हम इस तरबूज को राजा के पास ले कर जा रहे हैं।"

बड़ा सूअर बोला — "पर क्यों? राजा के पास तो सैंकड़ों तरबूज होंगे। इस तरबूज में ऐसी क्या खास बात है जो तुम लोग इस तरबूज को राजा को देने के लिये ले जा रहे हो?"

हिप्पो बोला — "तुम ठीक कहते हो सूअर भाई कि राजा के पास तो सैंकड़ों तरबूज हैं पर राजा के पास ऐसा तरबूज नहीं है

[3] Translated for the word "Warthog". Warthog is a wild member of the pig family, but much larger than it, found in grassland, savanna, and woodland in sub-Saharan Africa. Today its scientific name is restricted to the desert warthog of Northern Kenya, Somalia, and Eastern Ethiopia. See its picture above.

जैसा कि यह है। क्योंकि यह तरबूज बोलता है। मैंने भी इसको बोलते हुए सुना है।"

यह सुन कर बड़ा सूअर हॅस पड़ा और बोला — "क्या? तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? तरबूज भी कहीं बोलता है क्या? एक बोलता हुआ तरबूज? यह तो बड़ी अजीब बात है।"

तभी तरबूज में से अनन्सी बोला — "ओ सुन्दर बड़े सूअर।"

इसको सुन कर तो बड़ा सूअर भी इतना गुस्सा हुआ कि उसका सारा शरीर हिल गया। वह बोला — "किसने कहा मुझे यह बड़ा सूअर? हाथी तुमने कहा क्या यह? या हिप्पो तुमने कहा यह?"

हिप्पो और हाथी दोनों ने ही एक साथ कहा — "नहीं हमने नहीं कहा यह। हम क्यों कहेंगे? यह तो तरबूज ने कहा। अब तो तुम्हें हमारा विश्वास हो गया न कि यह तरबूज बोलता है?"

बड़े सूअर ने भी उनका विश्वास न करते हुए भी कहा — "हॉ अब मुझे विश्वास हो गया। चलो मैं भी तुम लोगों के साथ चलता हूॅ। मैं भी सुनना चाहता हूॅ कि जब तुम लोग इस तरबूज को राजा को दोगे तो वह क्या कहेगा।"

सो हाथी, हिप्पो और बड़ा सूअर तीनों उस तरबूज को ले कर राजा के पास चले।

चलते चलते रास्ते में उनको एक शुतुरमुर्ग, एक राइनो और एक कछुआ मिले। उन्होंने भी हाथी आदि से पूछा कि वे उस तरबूज को ले कर कहाँ जा रहे थे।

तो उन्होंने उनको भी बताया कि वह तरबूज कोई मामूली तरबूज नहीं था बोलने वाला तरबूज था सो वे उसको राजा के पास ले कर जा रहे थे।

उन तीनों को भी यह विश्वास नहीं हुआ कि कोई तरबूज बोल सकता है जब तक उन्होंने खुद अपने कानों से उसको बोलते हुए नहीं सुन लिया। सुन कर तो वे भी बहुत आश्चर्य में पड़ गये और वे भी उनके साथ साथ चल दिये।

वे तीनों भी यह जानना चाहते थे कि जब वे लोग वह तरबूज राजा को देंगे तो राजा क्या कहेगा।

सो सब जानवर उस तरबूज को ले कर राजा के पास आये। हाथी ने राजा के सामने सिर झुकाया और वह तरबूज उसके पैरों के पास रख दिया।

राजा ने उस तरबूज को देखा और हाथी से पूछा — "तुम यह तरबूज मेरे पास क्यों ले कर आये हो? मेरे खेत में तो सैंकड़ों तरबूज उग रहे हैं।"

हाथी बोला — "पर आपके पास ऐसा तरबूज नहीं है राजा साहब जैसा कि यह तरबूज है। यह तरबूज बोलता है।"

"क्या कहा बोलने वाला तरबूज? मुझे तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं होता।"

राजा ने फिर उस तरबूज को अपने पैर से कोंचते हुए कहा — "ओ तरबूज कुछ बोलो। यह हाथी कहता है कि तुम बोलते हो। हमें भी तो कुछ बोल कर बताओ।"

पर तरबूज तो कुछ बोला नहीं।

राजा ने फिर कुछ और तेज़ आवाज में कहा — "ओ तरबूज, शर्माने की जरूरत नहीं है। बोलो, कुछ भी बोलो जो तुम्हारा मन करे। मैं तो बस तुमको बोलते सुनना चाहता हूँ।"

पर तरबूज फिर भी कुछ नहीं बोला तो राजा का धीरज छूट गया। उसने एक बार फिर कहा — "तरबूज अगर तुम बोल सकते हो तो कुछ तो बोलो। मैं चाहता हूँ कि तुम कुछ बोलो और मैं तुमको बोलते हुए सुनूँ।"

पर तरबूज फिर भी कुछ नहीं बोला। अब राजा को गुस्सा आ गया — "ओह यह बेवकूफ तरबूज।"

तभी वह तरबूज बोल पड़ा — "क्या कहा? मैं बेवकूफ हूँ? तुम मुझे ऐसा क्यों कहते हो? मैं कोई बेवकूफ तरबूज नहीं हूँ जो बातें करता है। बेवकूफ तो तुम हो जो तरबूज से बात करते हो।"

यह सुन कर तो राजा का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया। जानवरों ने पहले कभी राजा को इतने में गुस्से में नहीं देखा था।

राजा ज़ोर से चिल्लाया — "इस तरबूज की यह हिम्मत कि यह मेरी इतनी बेइज़्ज़ती करे।"

उसने वह तरबूज उठाया और घुमा कर उसको जितनी दूर वह फेंक सकता था उतनी दूर फेंक दिया। तरबूज उछलता कूदता हाथी के घर के पास वाले कॉटों के पेड़ पर जा पड़ा और उसके टुकड़े टुकड़े हो गये।

अनन्सी उन टूटे हुए तरबूज के टुकड़ों में से बाहर निकल आया। इस सबने उसको और पतला कर दिया था। अब क्योंकि वह पतला हो गया था इससे उसको फिर से भूख लग आयी थी।

वहीं पास में एक केले का पेड़ लगा था सो वह उस पर चढ़ गया और केले के एक गुच्छे के बीच में जा कर बैठ कर एक केला खाने लगा।

हाथी राजा के पास से वापस आया तो वह सीधा अपने तरबूज के खेत पर गया और कहने लगा — "तुम तरबूजों ने मुझे आज राजा के सामने बड़ी मुसीबत में डाल दिया।

अब आगे से तुमको जितनी बातें करनी हों कर लेना। मैं तुम्हारी एक बात भी नहीं सुनने वाला।"

अनन्सी जो वहीं पास वाले केले के पेड़ पर बैठा था बोला — "यह तुम्हारे लिये अच्छा है, हाथी। हम केलों को भी तुमको यह पहले से ही बता देना चाहिये था कि बोलने वाले तरबूज तो होते ही परेशान करने वाले हैं।"

2 क्रिस्टल का मुर्गा[4]

साथ चलने की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है। इस लोक कथा में कई जानवर मिल कर एक शादी में जाते हैं पर बीच में एक भेड़िया भी उनके साथ लग जाता है। उसको देखो वह क्या गुल खिलाता है।

वह उन सबको खा जाता है पर उनमें से एक छोटा सा चिड़ा उस भेड़िये को चकमा दे कर मार डालता है। कैसे? यह तुम यहाँ पढ़ो।

एक बार एक मुर्गा था जो दुनियाँ घूमने के लिये निकला। चलते चलते उसको सड़क पर पड़ी हुई एक चिट्ठी मिल गयी। उसने उस चिट्ठी को अपनी चोंच से उठा लिया और उसे पढ़ने लगा। उसमें लिखा था —

"क्रिस्टल के मुर्गे, क्रिस्टल की मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी, ऐबैस बतख, पीले पंखों वाला चिड़ा – चलो सब टौम थम्ब की शादी में चलो।"[5]

---

[4] Crystal Rooster – a folktale from Italy from its Marche area.
Aadapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980. Its Most of the stories are available in Hindi from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.

[5] Crystal Rooster, Crystal Hen, Countess Goose, Abbess Duck, Gold Finch Birdie. Let's be off to Tom Thumb's Wedding.

मुर्गा यह पढ़ कर बहुत खुश हुआ सो वह उसी दिशा में चल दिया जिस तरफ टौम थम्ब का घर था। चलते चलते उसको क्रिस्टल की मुर्गी मिल गयी।

मुर्गी ने उससे पूछा — "मुर्गे भाई, कहॉ चले?"

"मैं तो टौम थम्ब की शादी में जा रहा हूॅ।"

"क्या मैं भी उसकी शादी में चल सकती हूॅ?"

"अगर तुम्हारा नाम बुलावे की इस चिट्ठी में लिखा हो तो।"

सो उसने बुलावे की वह चिट्ठी फिर से खोली और पढ़ी — "क्रिस्टल के मुर्गे, क्रिस्टल की मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी..."

"हॉ हॉ तुम्हारा नाम तो यहॉ लिखा है तुम भी चल सकती हो। चलो चलें।"

सो वह मुर्गा और मुर्गी दोनों टौम थम्ब की शादी में चल दिये। कुछ दूर जाने पर उनको काउन्टैस हंसिनी मिली।

हंसिनी ने पूछा — "मुर्गी बहिन और मुर्गे भाई, कहॉ चले?"

मुर्गा बोला — "हम लोग टौम थम्ब की शादी में जा रहे हैं।"

"क्या मैं भी आप दोनों के साथ टौम थम्ब की शादी में चल सकती हूॅ?"

"अगर तुम्हारा नाम बुलावे की इस चिट्ठी में लिखा हो तो।"

सो मुर्गे ने वह चिट्ठी फिर से खोली और फिर से पढ़ी – "क्रिस्टल के मुर्गे, क्रिस्टल की मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी..."

"ओह यहॉ तो तुम्हारा नाम भी लिखा है हंसिनी बहिन इसलिये तुम भी हमारे साथ चल सकती हो। चलो तुम भी चलो।"

अब वे तीनों टौम थम्ब की शादी में चल दिये। चलते चलते उनको काउन्टैस बतख मिल गयी।

बतख ने पूछा — "बहिन हंसिनी, बहिन मुर्गी, और भाई मुर्गे, आप सब लोग कहॉ जा रहे हैं?"

"हम सब लोग टौम थम्ब की शादी में जा रहे हैं।"

"क्या मैं भी आप सबके साथ टौम थम्ब की शादी में चल सकती हूँ?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। पर अगर तुम्हारा नाम बुलावे की इस चिट्ठी में लिखा हो तो।"

सो मुर्गे ने वह चिट्ठी फिर से खोली और पढ़ी – "क्रिस्टल के मुर्गे, क्रिस्टल की मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी, ऐबैस बतख..."

"ओह यहॉ तो तुम्हारा नाम भी लिखा है बतख बहिन सो तुम भी हमारे साथ चल सकती हो। चलो तुम भी हमारे साथ चलो।"

अब वे चारों टौम थम्ब की शादी में चल दिये। चलते चलते उनको पीले पंखों वाला चिड़ा मिल गया।

उसने पूछा — "बहिन बतख, बहिन हंसिनी, बहिन मुर्गी, और भाई मुर्गे, आप सब लोग कहॉ जा रहे हैं?"

मुर्गा बोला — "हम लोग टौम थम्ब की शादी में जा रहे हैं।"

"क्या मैं भी आप सबके साथ टौम थम्ब की शादी में चल सकता हूँ?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। पर अगर तुम्हारा नाम बुलावे वाली इस चिट्ठी में लिखा हो तो।"

सो मुर्गे ने वह चिट्ठी फिर से खोली और पढ़नी शुरू की – "क्रिस्टल के मुर्गे, क्रिस्टल की मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी, ऐबैस बतख, पीले पंखों वाला चिड़ा..."

"ओह यहॉ तो तुम्हारा नाम भी लिखा है चिड़े भाई सो चलो तुम भी हमारे साथ चलो।"

अब वे पॉचों टौम थम्ब की शादी में चल दिये। अब क्या था वे सब आनन्द में बातें करते चले जा रहे थे कि चलते चलते उनको एक भेड़िया मिल गया।

उसने भी उनसे पूछा — "आप सब कहॉ जा रहे हैं?"

मुर्गे ने जवाब दिया — "हम सब टौम थम्ब की शादी में जा रहे हैं।"

"क्या मैं भी आप सबके साथ वहॉ चल सकता हूँ?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। पर अगर तुम्हारा नाम बुलावे वाली इस चिट्ठी में लिखा हो तो।"

सो मुर्गे ने एक बार फिर वह चिट्ठी निकाली और उसको पढ़नी शुरू की। पर उसमें भेड़िये का नाम तो कहीं भी नहीं था।

मुर्गा बोला "पर बुलावे की इस चिट्ठी में तुम्हारा नाम तो कहीं है नहीं भेड़िये भाई।"

भेड़िया बोला — "पर मैं तो जाना चाहता हूँ।"

यह सुन कर सारे जानवर डर गये। वे तो उसको न हाँ कर सके और न उसको ना कर सके। वे डर के मारे बोले — "ठीक है। चलो तो फिर तुम भी हमारे साथ चलो हम सब चलते हैं।"

वे अभी बहुत दूर नहीं गये थे कि भेड़िया बोला — "मुझे तो भूख लगी है।"

मुर्गा बोला — "अफसोस मेरे पास तो तुमको देने के लिये कुछ भी नहीं है।"

"तो मैं तुमको ही खा जाऊँगा।" कह कर उसने अपना बड़ा सा मुँह खोला और मुर्गे को साबुत ही निगल गया।

कुछ दूर आगे जाने के बाद भेड़िया फिर बोला — "मुझे तो अभी और भूख लगी है।"

इस बार मुर्गी बोली — "अफसोस हमारे पास तो तुमको देने के लिये कुछ भी नहीं है।"

"तो मैं तुमको ही खा जाऊँगा।" कह कर उसने अपना बड़ा सा मुँह खोला और मुर्गी को भी साबुत ही निगल गया। यही हाल हंसिनी और बतख का भी हुआ।

अब केवल भेड़िया और पीला चिड़ा ही रह गये। कुछ दूर आगे चलने के बाद भेड़िया फिर बोला — "ओ पीले चिड़े, मुझे तो अभी भी भूख लगी है।"

पीला चिड़ा बोला — "तुम क्या सोचते हो कि मैं तुमको क्या दे सकता हूँ?"

"अगर तुम मुझे कुछ नहीं दे सकते तो फिर मैं तुम्हें ही खा जाता हूँ।" कह कर उसने चिड़े को खाने के लिये अपना मुँह खोला तो वह चिड़ा उड़ कर उसके सिर पर बैठ गया।

भेड़िये ने उसको पकड़ने की बहुत कोशिश की पर वह चिड़ा इधर उधर उड़ता रहा। फिर वह एक पेड़ पर बैठ गया, एक शाख से दूसरी शाख पर फुदकता रहा और उसके हाथ नहीं आया।

वह फिर भेड़िये के सिर पर आ बैठा, फिर वह उसकी पूँछ पर चला गया। इस तरह वह भेड़िये को तब तक नचाता रहा जब तक कि वह भेड़िया पूरी तरह से थक नहीं गया।

उसी समय भेड़िये को एक स्त्री आती दिखायी दी जिसके सिर पर खाने की एक टोकरी रखी थी। वह खाना वह अपने पति के लिये ले जा रही थी।

उसको देख कर चिड़े ने भेड़िये से कहा — "अगर तुम मुझे छोड़ दो तो मैं तुम्हारे लिये नूडिल्स और मॉस का बहुत ही बढ़िया खाने का इन्तजाम कर सकता हूँ जो वह स्त्री ले कर आ रही है।

जैसे ही वह मुझे देखेगी वह मुझे पकड़ने की कोशिश करेगी। मैं उड़ जाऊँगा और एक शाख से दूसरी शाख पर फुदकता रहूँगा। वह अपनी टोकरी नीचे रख देगी और मेरे पीछे दौड़ेगी। तब तुम उसका सारा खाना ले लेना और खा लेना।"

और फिर ऐसा ही हुआ। वह स्त्री जब वहाँ आयी तो उसकी निगाह उस सुन्दर चिड़े पर पड़ी तो वह तुरन्त ही उसको पकड़ने के लिये उसके पीछे भागी।

चिड़ा वहाँ से उड़ कर थोड़ी दूर बैठ गया तो उसने अपनी खाने की टोकरी तो नीचे रख दी और फिर उस चिड़े के पीछे भागी।

बस भेड़िये को मौका मिल गया। वह भी तुरन्त ही उस टोकरी के पास गया और उसने उस टोकरी में से खाना खाना शुरू कर दिया।

भेड़िये को अपना खाना खाते देख कर वह स्त्री चिल्लायी — "अरे कोई मेरी सहायता करो। यह भेड़िया मेरा खाना खा रहा है।"

उसकी चिल्लाहट सुनते ही उसकी सहायता के लिये वहाँ बहुत सारे किसान अपने अपने डंडे और बड़े बड़े चाकू ले कर आ गये। वे सब उस भेड़िये पर टूट पड़े और उसे तुरन्त ही मार दिया।

उसके मरते ही उसके पेट में से क्रिस्टल मुर्गा, क्रिस्टल मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी और ऐबैस बतख सब निकल पड़े। वे सब फिर से

पीले चिड़े को साथ ले कर हॅसते गाते बातें करते टौम थम्ब की शादी में चल दिये।

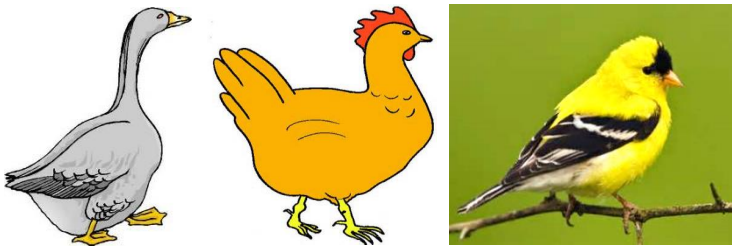

3 आधा मुर्गा[6]

साथ चलने की यह मज़ेदार लोक कथा यूरोप महाद्वीप के अल्बेनिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बुढ़िया चिल्लायी — "ओ आलसी बुड्ढे, अगर तुम इतने आलसी नहीं होते तो शायद हम लोग किसी अच्छे घर में रह रहे होते और हमारे पास बहुत सारा खाना होता। मैं गरीब होने से तो तंग हूँ ही और साथ में तुमसे भी।"

उधर वह बूढ़ा भी अपने आपको आलसी सुनते सुनते तंग आ गया था। असल में तो वह अपने आपको केवल आलसी सुनते सुनते ही नहीं बल्कि अपनी पत्नी की आवाज से ही तंग आ गया था।

सो वह अपनी पत्नी से बोला — "अगर तुम मुझसे इतनी ही तंग हो तो हमारे पास जो कुछ भी है उसका आधा आधा बॉट लो और यहॉ से खिसको।"

बुढ़िया चिल्ला कर बोली — "वाह, यह तो बहुत ही अच्छा विचार है। यह तो आज तुमने सालों में पहली बार कोई काम की बात की है।"

---

[6] Half Rooster - a folktale from Albania, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/albania/albania_folktale.htm
Collected and retold by Phillip Martin

उन बूढ़े और बुढ़िया के लिये घर की चीज़ों को आधा आधा बॉटना कोई मुश्किल काम नहीं था। उनके पास एक बिल्ला था और एक मुर्गा था। बुढ़िया ने बिल्ला उठाया और दरवाजे में से तूफान की तरह से बाहर निकल गयी।

उसने सोचा — "कम से कम यह बिल्ला मेरे लिये चिड़ियें तो पकड़ेगा और मैं कुछ पका पाऊँगी। यह मुर्गा तो न कुछ पकड़ सकता है और न ही अंडे दे सकता है।"

इस मामले में वह बुढ़िया ठीक सोचती थी। बुढ़िया के जाने के बाद तो अब उसके पति के पास तो खाने के लिये कुछ भी नहीं बचा था।

एक दिन पति इतना ज़्यादा भूखा था कि उसको अपने मुर्गे से कहना पड़ा — "मेरे दोस्त, मुझे बहुत अफसोस है पर मेरे पास अब और कोई चारा नहीं है और मुझे आज तुमको खाना पड़ रहा है।"

मुर्गा बोला कि वह समझ गया। हालॉकि बूढ़े की बात उसको बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगी पर वह क्या करता। उसका मालिक तो वह बूढ़ा ही था न। सो बूढ़े ने अपनी कुल्हाड़ी से मुर्गे को बीच में से काट दिया।

अब उसने आधा मुर्गा तो पका कर खा लिया और दूसरा आधा अपने पालतू की तरह से रखा रहने दिया। उस दिन से लोग उसको आधा मुर्गा पुकारने लगे।

उस आधे मुर्गे के लिये एक टॉग पर इधर से उधर कूदते रहना कोई मुश्किल काम नहीं था। पर वह इतना जरूर जान गया था कि अगर वह इस भूखे बूढ़े के साथ रहा था तो एक दिन वह फिर भूखा हो जायेगा और उस बचे हुए आधे को भी खा जायेगा।

सो उसने सोचा कि अब उसको दुनियॉ में कहीं बाहर जा कर अपनी किस्मत आजमानी चाहिये। उसने यह भी सोचा जब मैं काफी सोना कमा लूँगा तब मैं अपने घर फिर वापस आ जाऊँगा।

सो यही सोच कर वह घर से बाहर निकल गया और कूद कूद कर एक तालाब के किनारे पहुँच गया। वहॉ उसने देखा कि उसका दोस्त मेंढक लिली के एक पत्ते पर बैठा हुआ है

वह उससे चिल्ला कर बोला — "मैं अपनी किस्मत आजमाने निकला हूँ। मुझे मशहूर होना है। और तुम क्योंकि मेरे दोस्त हो तो तुम भी वैसा ही क्यों नहीं करते हो?"

मेंढक को दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी वह बोला — "चलो चलो यह तो बड़ा अच्छा है। दोनों मिल कर दुनियॉ देखते हैं। दोनों थोड़ा आनन्द लेते हैं। दो दोस्तों का साथ साथ यात्रा करना एक आदमी के अकेले यात्रा करने से ज़्यादा अच्छा है।"

यह कह कर मेंढक अपने लिली के पत्ते से कूद कर पानी में तैरता हुआ किनारे पर आ गया। वह मुर्गे के पंख के नीचे और उसके पेट के ऊपर आराम से बैठ गया।

आधे मुर्गे ने अपनी यात्रा जारी रखी। कूदते कूदते मुर्गे को एक लोमड़ा मिला। हालॉकि लोमड़ा काफी ऊपर एक चट्टान पर बैठा हुआ था फिर भी उसने मुर्गे के पंख में से बाहर निकलती एक हरे रंग की टॉग देख ली।

लोमड़ा बोला — "क्या यह मेंढक है जो तुम्हारे पंख के नीचे छिपा बैठा है? तुम लोग क्या करने जा रहे हो?"

आधे मुर्गे ने चट्टान के ऊपर बैठे लोमड़े को देखा और कुकड़ूँ कू की आवाज लगायी — "मैं अपनी किस्मत बनाने चला हूँ लोमड़े भाई। मैं दुनियॉ में मशहूर होने चला हूँ। तुम मेरे दोस्त हो तुम भी वैसा ही क्यों नहीं करते, आओ न?"

उस आधे मुर्गे को लोमड़े से भी दोबारा पूछने की जरूरत नहीं पड़ी। लोमड़ा बोला — "चलो हम सब दुनियॉ देखते हैं। थोड़ा आनन्द लेते हैं। तीन दोस्तों का साथ साथ यात्रा करना एक आदमी के अकेले यात्रा करने से ज़्यादा अच्छा है।"

सो लोमड़ा भी अपनी चट्टान से कूद कर एक आराम वाली जगह में बैठ गया – मुर्गे के पंख के नीचे और उसके पेट के ऊपर।

आधे मुर्गे ने फिर अपनी यात्रा शुरू कर दी। चलते चलते वह एक गुफा के पास आ गया। वहॉ उसने देखा कि एक जोड़ी पीली ऑखें उसको घूर रही हैं।

वे ऑखें किसी को भी डरा सकती थी पर आधे मुर्गे को नहीं। वे ऑखें उसके दोस्त भेड़िये की थीं। उस गहरी गुफा में अपने घर

से भेड़िये ने देखा कि आधे मुर्गे के पंखों में से हरे और लाल रंग का मॉस झॉक रहा है।

यह देख कर भेड़िया मुस्कुरा दिया और मुर्गे से पूछा — "अरे ओ आधे मुर्गे, तुम ये लोमड़े और मेंढक को अपने पंखों में छिपाये क्या कर रहे हो?"

आधे मुर्गे ने गुफा के अँधेरे में झॉका और बोला — "कुकडूँ कू ओ भेड़िये भाई, मैं अपनी किस्मत बनाने चला हूँ। मैं दुनियॉ में मशहूर होने चला हूँ। तुम मेरे दोस्त हो तुम भी वैसा ही क्यों नहीं करते?"

भेड़िये को भी दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी। वह भी अपनी गुफा से बाहर निकल आया और बोला — "चलो हम सब दुनियॉ देखते हैं। थोड़ा आनन्द लेते हैं। चार दोस्तों का साथ साथ यात्रा करना एक आदमी के अकेले यात्रा करने से ज़्यादा अच्छा है।"

उसकी पीली ऑखें दिन के उजाले में भी इतनी भयानक दिखायी नहीं दे रहीं थीं जितनी कि उस गुफा के अँधेरे में। सो भेड़िया भी अपनी गुफा से निकल कर एक आराम वाली जगह में बैठ गया – आधे मुर्गे के पंख के नीचे और उसके पेट के ऊपर।

आधा मुर्गा फिर कूदता हुआ अपने अमीर बनने और मशहूर होने की यात्रा पर आगे चला। अब वह एक जानवर रखने के बाड़े के पास आ गया।

वहॉ उसने एक गुलाबी नाक भूसे में से बाहर निकली हुई देखी। वह पहचान गया कि वह नाक उसके प्यारे दोस्त चूहे की है।

चूहा उस भूसे के ढेर में से बाहर निकल कर आया और आधे मुर्गे के फूले हुए पंखों की तरफ घूरा और बोला — "अगर मैं गलत नहीं हूॅ तो तुम्हारे पंखों के नीचे मेंढक, लोमड़ा और भेड़िया हैं। तुम सब यहॉ क्या कर रहे हो भाई लोगों?"

आधे मुर्गे ने भूसे से निकले हुए अपने दोस्त चूहे की तरफ देखा और बोला — "कुॅकडू कू प्यारे चूहे? मैं अपनी किस्मत बनाने चला हूॅ। मैं दुनियॉ में मशहूर होने चला हूॅ। तुम मेरे दोस्त हो तुम भी वैसा ही क्यों नहीं करते?"

चूहे को भी दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी। उसने अपने बाड़े में अपना भूसा छोड़ा और बोला — "चलो हम सब दुनियॉ देखते हैं। थोड़ा आनन्द लेते हैं। पॉच दोस्तों का साथ साथ यात्रा करना एक आदमी के अकेले यात्रा करने से ज़्यादा अच्छा है।"

वह भी आराम से एक जगह में बैठ गया – आधे मुर्गे के पंख के नीचे और उसके पेट के ऊपर। पर अब वहॉ उस पंख के नीचे किसी और दोस्त के लिये कोई जगह नहीं थी।

आधा मुर्गा फिर कूदता हुआ अपने अमीर बनने और मशहूर होने की यात्रा पर आगे चला।

एक दिन दोस्तों की यह मंडली एक सब्जी के बागीचे से गुजरी। सब सब्जियॉ तोड़ने लायक थीं और आधे मुर्गे को भूख लगी थी। वह चिल्लाया – "कुकडूँ कू। देखो कितना सारा खाना और यह सब केवल मेरे लिये है।"

पर उस बगीचे का मालिक तो वैसा नहीं सोचता था और उस बगीचे का मालिक था वहॉ का राजा। राजा ने अपने नौकरों को उस मुर्गे को पकड़ने का हुक्म दे दिया। उसने अपने नौकरों से कहा कि वह मुर्गा आधा जरूर है पर देखने में बड़ा स्वादिष्ट लगता है।

नौकर उस मुर्गे को पकड़ने दौड़े और वह मुर्गा उनसे बचने के लिये भागा। इस भाग दौड़ में राजा के बहुत सारे बढ़िया टमाटर कुचल गये।

नौकरों के भारी जूतों के नीचे आ कर राजा की स्ट्रौबैरी[7] की क्यारियॉ की क्यारियॉ बर्बाद हो गयीं।

जब बन्द गोभी का आखिरी पौधा कट गया तभी कहीं जा कर वह मुर्गा पकड़ा जा सका। राजा ने चिल्ला कर कहा — "इस मुर्गे को सूप बनाने वाले बर्तन में डाल दो। और उसमें कुछ टमाटर और एक बन्द गोभी डालना मत भूलना।"

[7] Strawberry – berry is a kind of wild fruit, normally without seed. There are several types of berries – strawberries, blue berries, black berries, cran beries etc. See its picture above.

आधे मुर्गे को पता चल गया कि वह तो बड़ी भारी मुसीबत में फॅस गया है। नीचे आग की लपटें उठ रही थीं और बर्तन का पानी बहुत ज़ोर से गर्म होता जा रहा था।

आधे मुर्गे ने मेंढक की तरफ देखा और चिल्लाया — "कुकडूॅ कू। अगर कभी मुझे दोस्त की जरूरत थी तो वह अब है। मेंढक, मेरे दोस्त, क्या तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?"

मेंढक को मालूम था कि उसे क्या करना है। उसने उस बर्तन का सारा पानी पी लिया और बाकी जो कुछ उसमें बचा उसे उसने बर्तन उलटा कर के आग के ऊपर डाल दिया जिससे वह आग पूरी तरीके से बुझ गयी।

गीला सा मुर्गा उस बर्तन में से बाहर निकल आया और कूद कर बाहर भाग गया।

पर वह राजा को नौकरों से बच नहीं सका। वे उसके लिये बहुत तेज़ थे। उन्होंने तुरन्त ही उस मुर्गे को फिर से पकड़ लिया और अबकी बार उसे मुर्गे के बाड़े में फेंक दिया।

यहॉ भी आधा मुर्गा मुसीबत में था। यहॉ की मुर्गियॉ कोई बहुत अच्छे स्वभाव की नहीं थीं। वे कभी भी उसको चोंच मार सकती थीं। और अगर एक बार उन्होंने उसको चोंच मारना शुरू कर दिया तो बस फिर तो वे उसको मार कर ही छोड़तीं।

सो मुर्गे ने लोमड़े की तरफ देखा और बोला — "कुकडूँ कू। अगर कभी मुझे दोस्त की जरूरत थी तो वह अब है। ओ लोमड़े, मेरे दोस्त, क्या तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?"

लोमड़े को मालूम था कि उसे क्या करना है। उसने अपने होठ चाटे और उन मुर्गियों की तरफ देख कर मुस्कुराया। पर वे मुर्गियॉ भी बेवकूफ नहीं थीं। उनको मालूम था कि लोमड़े को मुर्गियॉ खाना कितना पसन्द था।

इससे पहले कि लोमड़े की मुर्गियों की दावत हो मुर्गियों ने बाड़े की चहारदीवारी में एक बड़ा सा छेद बना लिया जिसमें से वे सब निकल कर भाग गयीं और साथ में आधा मुर्गा भी।

पर एक बार राजा के नौकरों ने आधे मुर्गे को फिर से पकड़ लिया। इस बार उन्होंने उसे राजा के घोड़ों के अस्तबल में फेंक दिया। उन्होंने सोचा कि ये घोड़े इसको अच्छा सबक सिखायेंगे।

एक बार फिर मुर्गे को पता चल गया कि वह बहुत बड़ी मुसीबत में फॅस गया है। घोड़ों के खुर उसके पास आते जा रहे थे। किसी भी समय वे उसको कुचल कर मार सकते थे।

इस बार उसने भेड़िये की तरफ देखा और बोला — "कुकडूँ कू। अगर कभी मुझे दोस्त की जरूरत थी तो वह अब है। भेड़िये भाई, मेरे दोस्त, क्या तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?"

भेड़िये को मालूम था कि उसको क्या करना है। वह तो उसकी सहायता करने के लिये बड़ी खुशी से तैयार था। उसका तो मजा

आ गया था। वह तुरन्त अस्तबल में घुसा और घोड़ों के ऊपर टूट पड़ा।

पर कोई भी घोड़ा भेड़िये का शिकार नहीं होना चाहता था सो उन्होंने अपने अस्तबल के चारों तरफ लगी बाड़ तोड़ी और निकल कर भाग गये। और उनके साथ साथ भाग गया आधा मुर्गा भी।

पर राजा के नौकर भी उसको छोड़ नहीं रहे थे। एक बार फिर उन्होंने उस मुर्गे को पकड़ लिया पर इस बार वे नहीं सोच पाये कि वे इस मुर्गे का क्या करें।

सो राजा ने उनको सलाह दी कि वे उसको उस बक्से में बन्द कर दें जिसमें सोना रखा था। वह बोला — "ज़रा ध्यान रखना कि वह बक्सा सबसे ज़्यादा मजबूत हो।" सो उसके नौकरों ने यही किया।

मुर्गा एक बार फिर से बड़ी भारी मुसीबत में फॅस गया था। अगर वह इस बक्से में से समय से बाहर नहीं निकला तो वहॉ तो वह भूखा ही मर जायेगा। और वह जानता था कि राजा उसको उस बक्से में बहुत देर तक रखने वाला था।

सो उसने चूहे की तरफ देखा और बोला — "कुकड़ूँ कू। अगर कभी मुझे दोस्त की जरूरत थी तो वह अब है। ओ चूहे, मेरे दोस्त, क्या तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो?"

और चूहे को भी पता था कि उसको क्या करना था। वह बोला — "मुझे इस बक्से में इधर उधर घूमने के लिये थोड़ी सी जगह चाहिये। क्या तुम थोड़ा सा सोना निगल सकते हो?"

आधा मुर्गा जानता था कि वह यह काम कर सकता था। वह चूहे की सहायता करना चाहता था। सो उसने उस बक्से का करीब करीब सारा सोना निगल लिया।

अब चूहे ने लकड़ी के बक्से को काटना शुरू कर दिया और कुछ ही देर में उसने उस बक्से में इतना बड़ा छेद कर दिया जिसमें से वे दोनों भाग सकते थे।

इस समय वहॉ पर कोई नौकर नहीं था। क्योंकि किसी को यह उम्मीद ही नहीं थी कि मुर्गा उस बक्से में से निकल जायेगा सो किसी ने उसकी पहरेदारी करने की भी कोशिश नहीं की।

आधे मुर्गे ने ज़रा सा भी समय बर्बाद नहीं किया। उसने सोने के बचे हुए टुकड़े इकट्ठे किये और कूद कर उस बक्से में से निकल कर भाग गया।

इस भागने में उसका कुछ सोना रास्ते में गिर गया पर उसकी चिन्ता करने का उसके पास समय नहीं था। उसको तो बस राजा से बचना था और अपने घर पहुॅचना था।

जब वह घर पहुॅच गया तो उसको मालूम था कि उसके अब घूमने के दिन गये। वह अपने मालिक की तरफ दौड़ा और उससे

लिपटने के लिये अपने पंख फैला दिये। वह बूढ़ा अपने पुराने दोस्त को वापस आया देख कर बहुत खुश हुआ।

वह यह देख कर और भी खुश हुआ जब उसने सोने के कुछ टुकड़े आधे मुर्गे के पंखों के नीचे देखे।

"ये तुमको कहाँ से मिले ओ मेरे आधे मुर्गे?" उसने पूछा।

आधा मुर्गा मुस्कुरा कर बोला — "यह एक लम्बी कहानी है।"

बूढ़ा बोला — "चलो, ये हमारे कुछ दिन के खाने के लिये काफी हैं। मैं अभी बाजार जाता हूँ और हमारे लिये खाना खरीद कर लाता हूँ।"

मुर्गा बोला — "जब तक तुम यह सब करते हो तब तक तुम मुझे कुछ भूसा दे दो ताकि मैं उस पर आराम से सो सकूँ। मैं बहुत थक गया हूँ।"

"जो तुम चाहो, ओ मेरे आधे मुर्गे।"

जब उस बूढ़े ने सारा सोना खर्च कर दिया तो आधे मुर्गे ने उससे कहा कि वह चिन्ता न करे। अगर वह उसको झाड़ू से मारेगा, बहुत जोर से मारने की जरूरत नहीं है केवल धीरे से ही मारने की जरूरत थी, तो वह सोने का एक टुकड़ा उगल देगा जो उन लोगों के कई दिन के खाने के लिये काफी होगा।

और फिर यही हुआ। जब भी उनकी रसोई की आलमारियॉ खाली होतीं तो वह बूढ़ा अपनी झाड़ू उठाता, मुर्गे को मारता और कुछ सोना निकाल लेता।

अब आधे मुर्गे के पास खाने के लिये खूब सारा खाना था और सोने के लिये आरामदेह बिस्तर। अब बूढ़े की ज़िन्दगी भी बहुत अच्छी हो गयी थी।

वे अपने घर में खुश थे और अक्सर अपने दोस्तों को शाम को खाने पर बुलाते थे जिनमें मेंढक, लोमड़ा, भेड़िया और चूहा भी शामिल थे।

पर कहानी के आखीर में सारे लोग खुश नहीं थे। बुढ़िया इस सबसे बहुत गुस्सा थी। वह केवल गुस्सा ही नहीं थी वह बूढ़े से जल भी रही थी। वह रो रही थी — "मैंने बिल्ले को क्यों लिया, मुर्गे को क्यों नहीं? यह सब सोना तो मेरे पास होना चाहिये था।"

और फिर एक दिन उसने एक प्लान बनाया। उसने अपनी झाड़ू उठायी और बिल्ले को घर से बाहर निकाल दिया — "ओ आलसी जीव, जा दुनियॉ में बाहर जा और सोना ढूँढ कर ला। और तब तक वापस मत आना जब तक हमारे पास खाने के लिये काफी न हो जाये। तू सुन रहा है न?"

बिल्ले ने ठीक सुना और बाहर चल दिया। रास्ते में उसको सोने का एक टुकड़ा मिल गया जो आधे मुर्गे से आते समय गिर गया

था। उसने उसको तुरन्त ही निगल लिया पर उसको और सोना कहीं नहीं मिला।

सो उसने अपना पेट सॉप, चुहिया, बालों वाले मकड़े आदि जानवरों से भर लिया। जब वह उन्हें और नहीं निगल सका तो वह घर वापस आ गया।

बुढ़िया अपने बिल्ले के देख कर बहुत खुश हुई — "अरे तू तो अपना पेट भर कर बड़ी जल्दी वापस आ गया। मैं अपनी झाड़ू ले आऊँ।"

वह जल्दी जल्दी अन्दर गयी और झाड़ू ले कर आयी और उससे बिल्ले को जरूरत से भी ज़्यादा ज़ोर से मारा। फिर भी बिल्ले ने सोने का एक टुकड़ा उगल दिया। सोना देख कर वह बहुत खुश हुई पर एक टुकड़ा तो उसके लिये काफी नहीं था सो उसने बिल्ले को दूसरी बार मारा।

दूसरी बार के मारने से उसमें से एक सॉप लहराता हुआ निकल आया और उस बुढ़िया के जूते की तरफ भागा। वह चिल्लायी और उसने बिल्ले को और ज़ोर से मारा। फिर तो उसके पेट से चुहिया और बालों वाले मकड़े निकल पड़े।

वह चिल्लायी — "यह सब क्या है? यह तूने क्या किया?"

जितनी बार वह गुस्से से बिल्ले को मारती गयी उतनी ही बार वह बिल्ला जानवर उगलता गया। इस तरह कमरे में बहुत सारे जानवर इकट्ठा हो गये।

जब उस बुढ़िया ने उस बिल्ले को आखिरी बार मारा तो बड़े बालों वाला एक बहुत बड़ा मकड़ा निकल आया। वह बहुत ही गुस्सा था सो वह उस बुढ़िया की तरफ दौड़ा। वह बुढ़िया को जंगल तक खदेड़ कर ले गया और फिर किसी ने उन दोनों के बारे में कभी कुछ नहीं सुना।

अगर तुममें से किसी को उन दोनों के बारे में पता चल जाये तो उनसे सावधान रहना क्योंकि वे दोनों ही बहुत खतरनाक हैं।

बिल्ला बूढ़े और मुर्गे के पास वापस आ गया और बाकी ज़िन्दगी भर आराम से रहा।

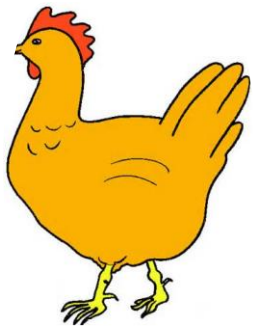

4 मकड़ी और पिस्सू[8]

साथ साथ काम करने की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक मकड़ी और एक मादा पिस्सू एक घर में एक साथ रहा करते थे। वे अपनी बीयर अंडे के एक खोल में बनाते थे।

एक दिन जब मकड़ी उस अंडे के खोल में अपनी बीयर चला रही थी तो वह उसमें गिर गयी और जल कर मर गयी। यह देख कर मादा पिस्सू चीख पड़ी।

दरवाजे ने पूछा — "ओ मादा पिस्सू क्या हुआ। तुम क्यों चीख रही हो?"

मादा पिस्सू बोली — "क्योंकि मकड़ी बीयर के टब में गिर गयी है और जल कर मर गयी है।"

यह सुन कर दरवाजे ने चूँ चूँ की आवाज करनी शुरू कर दी जैसे उसको बहुत दर्द हो रहा हो।

वहीं एक कोने में झाड़ू खड़ी थी उसने दरवाजे को चूँ चूँ करते सुना तो उससे पूछा — "दरवाजे भाई तुम यह चूँ चूँ क्यों कर रहे हो?"

---

[8] The Spider and the Flea - a folktale from Europe. Taken from the Web Site : http://pinkmonkey.com/dl/library1/story153.pdf by Jacob and Wilhelm Grimm

दरवाजा बोला — "क्या मैं चूँ चूँ भी नहीं कर सकता? क्या तुम्हें मालूम है कि छोटी मकड़ी जल कर मर गयी है और वह मादा पिस्सू बेचारी उसके लिये रो रही है?"

यह सुन कर झाड़ू ने बहुत जल्दी जल्दी झाड़ू लगाना शुरू कर दिया। तभी वहाँ एक छोटी गाड़ी आयी। झाड़ू को ज़ोर ज़ोर से झाड़ू लगाते देख कर उसने उससे पूछा — "झाड़ू बहिन तुम इतनी ज़ोर ज़ोर से झाड़ू क्यों लगा रही हो?"

झाड़ू बोली — "क्या मैं ज़ोर ज़ोर से झाड़ू भी नहीं लगा सकती? क्या तुम्हें मालूम है कि छोटी मकड़ी जल कर मर गयी है और वह मादा पिस्सू बेचारी रो रही है? वह दरवाजा भी बेचारा उसके दर्द से चूँ चूँ कर रहा है। इसी लिये मैं ज़ोर ज़ोर से झाड़ू लगा रही हूँ।"

यह सुन कर तो गाड़ी बोली — "तो फिर मैं भागती हूँ।" यह कह कर उसने बहुत तेज़ी से भागना शुरू कर दिया। भागती भागती वह एक राख के ढेर के पास से गुजरी तो राख का ढेर बोला — "गाड़ी गाड़ी तुम इतनी तेज़ी से कहाँ भागी जा रही हो?"

गाड़ी बोली — "क्योंकि छोटी मकड़ी उबलती बीयर में जल कर मर गयी है और वह मादा पिस्सू बेचारी उसके लिये रो रही है। उसकी वजह से दरवाजा भी दर्द से चूँ चूँ कर रहा है और झाड़ू भी

जल्दी जल्दी सफाई कर रही है। कम से कम मैं भाग तो सकती हूँ।"

राख बोली — "अरे तो मैं बहुत ज़ोर से जलती हूँ।" और उसने बहुत ज़ोर से जलना शुरू कर दिया।

उसी राख के ढेर के पास एक पेड़ खड़ा था। राख को इतनी ज़ोर से जलते देख कर पेड़ ने उससे पूछा — "ओ राख के ढेर तुम इतना तेज़ क्यों जल रहे हो?"

राख का ढेर बोला — "क्योंकि छोटी मकड़ी उबलती बीयर में जल कर मर गयी है और वह मादा पिस्सू बेचारी रो रही है। उसकी वजह से दरवाजा भी दर्द से चूँ चूँ कर रहा है और झाड़ू भी जल्दी जल्दी सफाई कर रही है। गाड़ी बहुत तेज़ भागी जा रही है। मैं इसी लिये जल रहा हूँ।"

इस पर पेड़ रो कर बोला — "तो मैं बहुत ज़ोर ज़ोर से हिलता हूँ।" और उसने बहुत ज़ोर ज़ोर से हिलना शुरू कर दिया। इससे उसकी सारी पत्तियाँ नीचे गिर पड़ीं।

तभी पास में से एक छोटी लड़की एक घड़ा ले कर पानी भरने जा रही थी। उसने पेड़ को इतनी ज़ोर ज़ोर से हिलते देखा तो पेड़ से पूछा — "पेड़ जी आप इतनी ज़ोर ज़ोर से क्यों हिल रहे हैं?"

पेड़ बोला — "क्योंकि छोटी मकड़ी उबलती बीयर में जल कर मर गयी है और वह मादा पिस्सू बेचारी उसके लिये रो रही है। उसकी वजह से दरवाजा भी दर्द से चूँ चूँ कर रहा है और झाड़ू भी

जल्दी जल्दी सफाई कर रही है। गाड़ी तेज़ तेज़ भागी जा रही है और राख बहुत ज़ोर ज़ोर से जल रही है। इसी लिये मैंने ज़ोर ज़ोर से हिल कर अपने पत्ते गिरा दिये हैं।"

लड़की यह सुन कर बोली — "अगर ऐसा है तो मैं अपना घड़ा तोड़े देती हूँ।" और यह कह कर उसने अपना घड़ा नीचे जमीन पर फेंक दिया जिससे उसका घड़ा टूट गया।

यह देख कर जिस नदी से वह पानी भरती थी उस नदी ने उससे पूछा — "बेटी तुमने आज अपना घड़ा क्यों तोड़ दिया?"

लड़की बोली — "क्योंकि छोटी मकड़ी उबलती बीयर में जल कर मर गयी है और वह मादा पिस्सू बेचारी रो रही है। उसकी वजह से दरवाजा भी दर्द से चूँ चूँ कर रहा है और झाड़ू भी जल्दी जल्दी सफाई कर रही है।

गाड़ी तेज़ तेज़ भागी जा रही है और राख बहुत ज़ोर ज़ोर से जल रही है। पेड़ ने ज़ोर ज़ोर से हिल कर अपने पत्ते गिरा दिये हैं। इसी लिये मैंने अपना यह घड़ा तोड़ दिया है।"

नदी बोली — "तो फिर मैं ऐसा क्यों नहीं कर सकती। क्योंकि छोटी मकड़ी उबलती बीयर में जल कर मर गयी है और वह मादा पिस्सू बेचारी रो रही है। उसकी वजह से दरवाजा भी दर्द से चूँ चूँ कर रहा है और झाड़ू भी जल्दी जल्दी सफाई कर रही है।

गाड़ी तेज़ तेज़ भागी जा रही है और राख बहुत ज़ोर ज़ोर से जल रही है। पेड़ ने ज़ोर ज़ोर से हिल कर अपने पत्ते गिरा दिये हैं

और इस बच्ची ने अपना यह घड़ा तोड़ दिया है। तो मुझे अब तेज़ तेज़ बहना चाहिये।" और यह कह कर उसने तेज़ तेज़ बहना शुरू कर दिया।

बहते बहते वह नदी बड़ी होती गयी बड़ी होती गयी। यहाँ तक कि उसने उस छोटी लड़की को, पेड़ को, राख को, गाड़ी को, झाड़ू को, दरवाजे को, पिस्सू को और आखीर में मकड़ी को भी सबको डुबो दिया।

5 चूहा और बिल्ली[9]

साथ साथ काम करने की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक बिल्ली शादी करना चाहती थी सो वह एक कोने पर खड़ी हो गयी। आते जाते जानवर उससे पूछ रहे थे — "ओ बिल्ली रानी क्या बात है तुम यहाँ ऐसे क्यों खड़ी हो?"

बिल्ली बोली — "अरे बात क्या है मैं शादी करना चाहती हूँ। बस इतनी ही बात है।"

तभी एक कुत्ता उधर से गुजरा तो उसने पूछा — "क्या तुम मुझे चाहती हो? क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

बिल्ली बोली — "पहले मैं तुम्हारा गाना सुनना चाहती हूँ तब देखूँगी।"

कुत्ता ज़ोर ज़ोर से भौंका।

"उफ़, यह क्या गाना है? यह कोई गाना है? मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती।"

उसके बाद सूअर आया तो उसने भी बिल्ली से पूछा — "क्या तुम मुझसे शादी करोगी बिल्ली रानी?"

---

[9] The Mouse and the Cat – a folktale from Italy, Europe.
Adapted from the book: "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. London, 1885. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com" as e-book free of charge.

"जब मैं तुम्हारा गाना सुनूँगी तब बताऊँगी।"

सूअर ने गाया "उह उह।"

"उफ़ क्या भयानक गाना है। चले जाओ यहाँ से। मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती।" सूअर बेचारा वहाँ से चला गया।

उसके बाद वहाँ एक बछड़ा आया और उसने भी बिल्ली से पूछा — "ओ बिल्ली रानी क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

"जब मैं तुमको गाता हुआ सुनूँगी तभी बता सकती हूँ कि मैं तुमसे शादी कर सकती हूँ या नहीं।"

बछड़े ने गाया "ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ।"

"उफ़ चले जाओ। तुम तो बहुत ही भयानक गाते हो। तुम्हें मुझसे क्या चाहिये?"

उसके बाद आया एक चूहा। चूहे ने भी उससे पूछा — "अरे बिल्ली रानी तुम यहाँ क्या कर रही हो?"

"मैं शादी करना चाहती हूँ।"

"क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

"पर तुम मुझे ज़रा गा कर तो सुनाओ।"

और चूहे ने गाया "चीं चीं चीं चीं।"

बिल्ली को उसका गाना अच्छा लगा और उसने उसको अपने पति के रूप में स्वीकार कर लिया।

वह बोली — "चलो हम शादी कर लेते हैं क्योंकि तुम मुझे बहुत अच्छे लगे।" और उन्होंने शादी कर ली।

एक दिन बिल्ली पेस्ट्री खरीदने बाजार गयी और चूहे को घर छोड़ गयी। जाते जाते वह चूहे से कहती गयी — "देखो मैं ज़रा पेस्ट्री खरीदने बाजार जा रही हूँ तुम घर से बाहर मत जाना।"

बिल्ली के जाने के बाद चूहा रसोईघर में चला गया तो उसने देखा कि एक बर्तन आग पर रखा है और उस बर्तन में पानी उबल रहा है और उसमें बीन्स उबल रही हैं।

वह उस बर्तन में घुस गया क्योंकि वह बीन्स खाना चाहता था। पर वह वहाँ बीन्स नहीं खा सका क्योंकि बर्तन में पानी उबलने लगा था और वह बहुत गर्म था। चूहा उसी बर्तन में बैठा रहा।

जब बिल्ली आयी तो उसने चूहे को पुकारा पर जब चूहा कहीं दिखायी नहीं दिया तो उसने अपनी पेस्ट्री उसी बर्तन में रख दी जिसमें पानी उबल रहा था और जब वह तैयार हो गयी तब उसने उसमें से थोड़ा सी खा ली और बाकी बची पेस्ट्री उसने चूहे के लिये एक प्लेट में रख दी।

जब बिल्ली ने पेस्ट्री निकाली तो उसने देखा कि चूहा तो उसमें खूब ज़ोर से चिपका हुआ है। वह बोली — "ओह मेरे छोटे चूहे, ओ मेरे छोटे चूहे।"

कहते हुए वह वहाँ से चली गयी और दरवाजे के पीछे जा कर बैठ गयी और चूहे के लिये रोने लगी। बिल्ली को रोते देख कर दरवाजा बोला — "बिल्ली रानी क्या बात है क्यों रोती हो? तुम

अपनी खाल इतनी ज़ोर से क्यों खुजला रही हो जैसे उसको छील ही डालोगी?"

बिल्ली बोली — "मैं ऐसा क्यों कर रही हूँ? मेरा चूहा मर गया है इसलिये मैं अपने बाल नोच रही हूँ।"

यह सुन कर दरवाजे ने ज़ोर ज़ोर से आवाज करना शुरू कर दिया और बोला — "और मैं दरवाजा इसलिये ज़ोर से आवाज करता हूँ क्योंकि तुम दुखी हो।"

दरवाजे के पास एक खिड़की थी उसने दरवाजे से पूछा — "ओ दरवाजे तुम इतनी ज़ोर से आवाज क्यों कर रहे हो?"

दरवाजा बोला — "बिल्ली का चूहा मर गया है। बिल्ली उसके दुख में अपने बाल नोच रही है और मैं बिल्ली के दुख में इतने ज़ोर की आवाज कर रहा हूँ।"

यह सुन कर खिड़की बोली — "तो मैं खिड़की भी खुलती और बन्द होती हूँ।"

खिड़की के बाहर एक पेड़ खड़ा था वह बोला — "ओ खिड़की तुम इतनी ज़ोर से क्यों खुल और बन्द हो रही हो?"

खिड़की बोली — "बात यह है कि बिल्ली का चूहा मर गया है। बिल्ली उसके दुख में अपने बाल नोच रही है। दरवाजा बिल्ली के दुख में आवाज कर रहा है और मैं खिड़की उसके दुख में खुल और बन्द हो रही हूँ।"

पेड़ बोला — "अगर ऐसा है तो मैं उसके दुख में नीचे गिर जाता हूँ।" और वह नीचे गिरने लगा।

उस पेड़ पर एक चिड़िया बैठी थी। चिड़िया ने पूछा — "पेड़ पेड़ तुम नीचे क्यों गिर रहे हो?"

पेड़ बोला — "बात यह है कि बिल्ली का चूहा मर गया है। बिल्ली उसके दुख में अपने बाल नोच रही है। दरवाजा बिल्ली के दुख में आवाज कर रहा है। खिड़की उसके दुख में खुल और बन्द हो रही हूँ और मैं पेड़ उसके दुख में नीचे गिर रहा हूँ।"

यह सुन कर चिड़िया बोली — "तो मैं उसके दुख में अपने पंख गिराती हूँ।" कह कर चिड़िया वहाँ से एक फव्वारे पर जा बैठी और अपने पंख गिराने लगी।

फव्वारे ने पूछा — "चिड़िया बहिन तुम अपने पंख क्यों गिरा रही हो?"

चिड़िया बोली — "बात यह है कि बिल्ली का चूहा मर गया है। बिल्ली उसके दुख में अपने बाल नोच रही है। दरवाजा बिल्ली के दुख में आवाज कर रहा है। खिड़की उसके दुख में खुल और बन्द हो रही हूँ। पेड़ उसके दुख में नीचे गिर गया है और मैं उसके दुख में अपने पंख गिरा रही हूँ।"

यह सुन कर फव्वारा बोला — "तो मैं उसके दुख में सूख जाता हूँ।" सो बिल्ली के दुख में फव्वारे ने पानी फेंकना बन्द कर दिया।

उसी समय एक कोयल वहॉ फव्वारे पर पानी पीने आयी तो उसने फव्वारे को सूखे हुए देखा तो उससे पूछा — "फव्वारे तुम सूख क्यों गये?"

फव्वारा बोला — "बात यह है कि बिल्ली का चूहा मर गया है। बिल्ली उसके दुख में अपने बाल नोच रही है। दरवाजा बिल्ली के दुख में आवाज कर रहा है। खिड़की उसके दुख में खुल और बन्द हो रही हूॅ। पेड़ उसके दुख में नीचे गिर गया है। चिड़िया उसके दुख में अपने पंख गिरा रही है और मैं उसके दुख में सूख गया हूॅ।"

कोयल बोली — "तो मैं कोयल उसके दुख में अपनी पूॅछ आग में डाल देती हूॅ।"

जब कोयल अपनी पूॅछ आग में डाल रही थी तो सेन्ट निकोलस वहॉ आये तो उन्होंने कोयल से पूछा — "कोयल कोयल तुम्हारी पूॅछ आग में क्यों है?"

कोयल बोली — "बात यह है कि बिल्ली का चूहा मर गया है। बिल्ली उसके दुख में अपने बाल नोच रही है।

दरवाजा बिल्ली के दुख में आवाज कर रहा है। खिड़की उसके दुख में खुल और बन्द हो रही हूॅ। पेड़ उसके दुख में नीचे गिर गया है। चिड़िया उसके दुख में अपने पंख गिरा रही है। फव्वारा उसके दुख में सूख गया है और मैं उसके दुख में अपनी पूॅछ आग में डाल रही हूॅ।"

जब सेन्ट निकोलस ने यह सुना तो बोला — "तो मैं सेन्ट निकोलस आज बिना अपने रस्मी कपड़े पहिने ही मास[10] पढ़ूँगा।"

जब सेन्ट निकोलस बिना अपने रस्मी कपड़े पहिने मास पढ़ रहे थे तो उस देश की रानी वहाँ आयी। उसने उनसे पूछा — "सेन्ट निकोलस, आप आज यह मास बिना अपने रस्मी कपड़े पहने क्यों पढ़ रहे हैं?"

सेन्ट निकोलस बोले — "रानी जी, बात यह है कि बिल्ली का चूहा मर गया है। बिल्ली उसके दुख में अपने बाल नोच रही है।

दरवाजा बिल्ली के दुख में आवाज कर रहा है। खिड़की उसके दुख में खुल और बन्द हो रही हूँ। पेड़ उसके दुख में नीचे गिर गया है। चिड़िया उसके दुख में अपने पंख गिरा रही है। फव्वारा उसके दुख में सूख गया है।

कोयल उसके दुख में अपनी पूँछ आग में डाल रही है और मैं उसके दुख में यह मास बिना अपने रस्मी कपड़े पहने ही पढ़ रहा हूँ।"

यह सुन कर रानी बोली — "तो मैं रानी उसके दुख में जा कर आटा छानती हूँ।"

[10] Mass is one of the names by which the sacrament of the Eucharist is commonly called in the Catholic Church. The term Mass often colloquially refers to the entire church service in general.

जब रानी आटा छान रही थी तो राजा वहॉ आ गया। राजा ने पूछा — "रानी जी आज आटा आप क्यों छान रही हैं? क्या हमारे घर के सारे नौकर मर गये?"

रानी बोली — "नहीं राजा साहब ऐसा नहीं है। बात यह है कि हमारे राज्य की एक बिल्ली का चूहा मर गया है। बिल्ली उसके दुख में अपने बाल नोच रही है। दरवाजा बिल्ली के दुख में आवाज कर रहा है। खिड़की उसके दुख में खुल और बन्द हो रही है।

पेड़ उसके दुख में नीचे गिर गया है। चिड़िया उसके दुख में अपने पंख गिरा रही है। फव्वारा उसके दुख में सूख गया है।

कोयल उसके दुख में अपनी पूँछ आग में डाल रही है। सेन्ट निकोलस उसके दुख में मास बिना अपने रस्मी कपड़े पहने ही पढ़ रहे हैं और मैं उसके दुख में आटा छान रही हूँ।"

राजा मुस्कुराया और बोला — "और मैं राजा उसके दुख में अपनी कौफी पीने जा रहा हूँ।"

और इस तरह से यह कहानी अचानक यहीं खत्म हो जाती है।

6 छोटी बूढ़ी दादी[11]

साथ चलने वालों की यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप में कैनेडा में रहने वाले ज्यूज़ बच्चों में बड़े शौक से कही सुनी जाती है।

एक छोटी बूढ़ी दादी एक जंगल के किनारे के पास रहती थी। वह आस पास के शैतान बच्चों को ठीक से बर्ताव करना सिखाती थी।

एक दिन एक मॉ अपनी छोटी सी बेटी को दादी के पास ले कर आयी और बोली — "मॉ, मेरी बेटी को भी कुछ सिखा दो यह मेरे घर के कामों में बिल्कुल भी सहायता नहीं करती।"

दादी मुस्कुरायी और बोली — "ठीक है इसे छोड़ जा मेरे पास। मैं सिखा दूँगी।" बच्ची की मॉ चली गयी और दादी ने बच्ची को सिखाना शुरू कर दिया।

अगले दिन वे दोनों जंगल में लकड़ियॉ चुनने गये। उनके जाने के बाद एक छोटा भालू दादी की झोंपड़ी के पास आया और उसके आस पास चक्कर काटने लगा।

[11] The Little Old Grandmother – a folktale of Canadian Jews who migrated from Poland and Russia and settlted in Toronto and Montreal.

इतने में ही एक छोटा कुत्ता आ गया और भालू से बोला — "छोटे भालू, तुम इस झोंपड़ी के आस पास चक्कर क्यों काट रहे हो?"

छोटा भालू बोला — "तुम्हें इससे क्या? तुम चाहो तो तुम भी चक्कर काट लो।" और फिर दोनों दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर काटने लगे।

इतने में एक छोटा हिरन उधर आ निकला और उन दोनों से बोला — "ओ छोटे भालू और छोटे कुत्ते, तुम लोग दादी की झोंपड़ी के आस पास क्यों घूम रहे हो?"

भालू और कुत्ते ने जवाब दिया — "तुम्हें इससे क्या, तुम चाहो तो तुम भी घूम सकते हो।" और फिर तीनों दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ घूमने लगे।

इतने में एक मुर्गा आया और उसने उन तीनों से पूछा — "छोटे भालू, छोटे हिरन और छोटे कुत्ते, तुम सब दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर क्यों काट रहे हो?"

तीनों बोले — "तुम चाहो तो तुम भी आ जाओ। तुमको कौन मना कर रहा है।" और इस तरह फिर चारों दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर काटने लगे।

इतने में एक केटली का ढक्कन उधर से गुजरा। उन सबको इस तरह से चक्कर काटते देख कर उसने उनसे पूछा — "ओ छोटे भालू, छोटे कुत्ते, छोटे हिरन, और मुर्गे, आप सब लोग इस तरह दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर क्यों काट रहे हैं?"

वे सब एक आवाज में बोले — "तुम्हें इससे क्या, तुम चाहो तो तुम भी चक्कर काट लो।" सो अब पॉचों दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर काटने लगे।

इतने में एक पिन और कोलतार आये और उन पॉचों को इस तरह चक्कर काटते देख कर आश्चर्य से पूछने लगे — "ओ छोटे भालू, छोटे कुत्ते, छोटे हिरन, मुर्गे और केटली के ढक्कन। आप सब लोग इस तरह दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर क्यों काट रहे हैं?"

वे सब फिर एक साथ बोले — "तुम्हें इससे क्या लेना देना है तुम चाहो तो तुम भी आ कर चक्कर काट लो न।" सो अब वे सातों दादी की झोंपड़ी के चारों तरफ चक्कर काटने लगे।

चक्कर काटते काटते उन सातों को शाम हो गयी। अब उन सबको नींद आने लगी। दादी अभी तक घर नहीं लौटी थी सो वे दादी की झोंपड़ी में घुस कर सोने की जगह तलाश करने लगे।

छोटा भालू दादी के बिस्तर पर सो गया। छोटा कुत्ता दादी के पालने में सो गया। छोटा हिरन दादी के ओवन के ऊपर चढ़ गया। मुर्गा उड़ कर अलमारी के ऊपर बैठ गया।

केटली का ढक्कन चिमनी में ऊपर चढ़ गया और कोलतार दियासलाई की डिबिया में दुबक कर बैठ गया। पिन को समझ में नहीं आया कि वह कहॉ जाये सो वह एक तौलिये में लग कर बैठ गयी।

उसी समय दादी और वह लड़की जंगल से लकड़ी ले कर वापस लौटे और सोने की तैयारी करने लगे। जब वे बिस्तर में घुसने की कोशिश कर रहे थे तो भालू ने उनको अपना पैर मार कर इतना डरा दिया कि वे दोनों कूद कर वहॉ से हट गये।

उन्होंने पालने में घुसने की कोशिश की तो वहॉ से कुत्ता भौंका और उसने उनको काट लिया। वे चिल्लाये — "कौन हो तुम?"

फिर उन्होंने ओवन के ऊपर जगह ढूँढी तो वहॉ से छोटे हिरन ने उनको डरा दिया। दादी स्टोव के पास अपने आपको गर्म करने के लिये गयी तो ऊपर से केटली का ढक्कन उसके सिर पर गिर पड़ा।

दादी डर गयी और बोली — "आज मेरी झोंपड़ी में यह सब क्या हो रहा है। उसने सोचा कि उसे लैम्प जला कर देखना चाहिये कि उसकी झोंपड़ी में आज यह सब क्या हो रहा है।"

सो लैम्प जलाने के लिये उसने दियासलाई की डिबिया उठायी। दादी ने डिबिया खोली ही थी कि उसका हाथ कोलतार से चिपक गया और वह उससे अपना हाथ ही नहीं छुड़ा सकी।

किसी तरह उसने कोलतार से अपना हाथ छुड़ाया और हाथ धोने गयी तो हाथ धो कर जब उसने हाथ पोंछने के लिये तौलिया उठाया तो पिन उसके हाथ में इतनी ज़ोर से चुभी कि वह तो दर्द के मारे चीख ही पड़ी।

इतने में मुर्गा उड़ कर उसके पास आया और बोला — "आज का दिन बहुत बुरा है न दादी।"

इस बात ने तो दादी को इतना ज़्यादा डरा दिया कि वह तो बेहोश हो कर वहीं गिर गयी।

दादी के गिरने से लड़की इतनी ज़्यादा डर गयी कि अपनी मॉ के पास भाग गयी। उस दिन से उसने अपनी मॉ का कहना मानना शुरू कर दिया। मॉ दादी की इस एक दिन की ट्रेनिंग से बहुत खुश थी।

7 बागीचे में बकरियॉ[12]

यह लोक कथा साथ चलने की तो नहीं है पर हॉ कुछ ऐसे लोगों की है जिसमें वे एक आदमी को मुश्किल में पड़े देख कर उसकी सहायता के लिये चले आते हैं। यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के नौर्स देशों[13] के नौर्वे देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार नौर्वे में एक परिवार रहता था। उनके एक बेटा था जिसका नाम था जौनी[14]। परिवार की बकरियों की देखभाल करना जौनी का खास काम था। उनके पास तीन बकरियॉ थीं।

वह रोज सुबह उन बकरियों को दुह कर उनका दूध निकालता था और फिर उनको पहाड़ों की तरफ हॉक कर ले जाता था जहॉ वे सारा दिन घास चरती रहतीं। शाम को वह उनको वापस घर ले आता और फिर उनका दूध निकालता था।

वैसे तो वे बकरियॉ ठीक से ही रहती थीं पर एक दिन एक दादी के बागीचे का दरवाजा खुला था सो उसकी तीनों बकरियॉ उस दादी के बागीचे में घुस गयीं और उन्होंने दादी के शलगमों[15] के सारे पत्ते खाने शुरू कर दिये।

---

[12] The Goats in the Garden – a folktale from Norway, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=231
Retold and written by Mike Lockett.

[13] Norse or Nordic or Scandinavian countries are five – Denmark, Finland, Iceland, Norway and Sweden – all are situated at the far Northern coast of Europe continent.

[14] Johnny – name of the boy

[15] Translated for the word “Turnips”. See their picture above.

"ओह यह नहीं हो सकता।" कहते हुए जौनी ने एक डंडी उठायी और उससे उनको दादी के बागीचे से बाहर निकालना शुरू कर दिया। पर बकरियॉ तो वहॉ से बाहर निकलने का नाम ही नहीं ले रही थीं वे तो बस चारों तरफ घूम घूम कर उसके बागीचे में लगी शलगमों की पत्तियॉ ही खाये जा रही थीं।

जब जौनी कुछ नहीं कर सका तो वह रुक गया और थक हार कर बैठ गया। बकरियॉ वे पत्ते खाती रहीं और जौनी ने वहॉ बैठे बैठे रोना शुरू कर दिया।

तभी सड़क पर एक लोमड़ी आयी। उसने जौनी से पूछा — "तुम क्यों रो रहे हो जौनी भाई?"

जौनी बोला — "मैं इसलिये रो रहा हूॅ क्योंकि मेरी ये बकरियॉ दादी के बागीचे में घुस कर उनके पत्ते खा रही हैं और मैं उनको उसके बागीचे से बाहर नहीं निकाल पा रहा हूॅ।"

लोमड़ी बोली — "अच्छा, तुम यहीं बैठो, मैं उनको बागीचे में से बाहर निकालने की कोशिश करती हूॅ।" यह कह कर वह लोमड़ी बागीचे के अन्दर घुस गयी औ उन बकरियों को बाहर की ओर निकालने की कोशिश करने लगी।

पर वे बकरियॉ तो बागीचे के बाहर निकल ही नहीं रही थीं। वे चारों तरफ तो भागती रहीं पर बाहर नहीं निकलीं। आखिर लोमड़ी भी थक कर बैठ गयी। जब लोमड़ी बैठ गयी तो बकरियों ने दादी के पौधे फिर से खाने शुरू कर दिये।

इधर लोमड़ी भी जौनी के पास बैठ गयी और रोने लगी। तभी सड़क पर एक कुत्ता आया। उसने उन दोनों से पूछा — "तुम लोग क्यों रो रहे हो जौनी भाई और लोमड़ी बहिन?"

लोमड़ी बोली — "मैं इसलिये रो रही हूँ क्योंकि जौनी रो रहा है, और जौनी इसलिये रो रहा है क्योंकि उसकी बकरियाँ दादी के बागीचे में घुस गयीं हैं और हम उनको बाहर नहीं निकाल पा रहे हैं।"

कुत्ता बोला — "अच्छा, तो तुम लोग यहीं बैठो, मैं उनको बागीचे में से निकालने की कोशिश करता हूँ।"

यह कह कर वह कुत्ता बागीचे के अन्दर घुस गया और उन बकरियों को बाहर की ओर निकालने की कोशिश करने लगा।

पर वे बकरियाँ तो बागीचे के बाहर निकल ही नहीं रही थीं। वे फिर चारों तरफ भागती रहीं और दादी के बागीचे में लगी शलगमों की पत्तियाँ खाती रहीं।

कुत्ता भी आखिर थक कर बैठ गया। जब कुत्ता बैठ गया तो बकरियों ने दादी के पौधे फिर से खाने शुरू कर दिये।

सो कुत्ता भी लोमड़ी और जौनी के पास बैठ गया और उसने भी रोना शुरू कर दिया। तभी सड़क पर एक खरगोश आता दिखायी दिया। उसने जब तीनों को रोता देखा तो उनसे पूछा — "तुम सब क्यों रो रहे हो जौनी भाई, लोमड़ी बहिन और कुत्ते भाई?"

कुत्ता बोला — "मैं इसलिये रो रहा हूँ क्योंकि लोमड़ी रो रही है, और लोमड़ी इसलिये रो रही है क्योंकि जौनी रो रहा है और जौनी इसलिये रो रहा है क्योंकि उसकी बकरियाँ दादी के बागीचे में घुस गयीं हैं और हम उनको बाहर नहीं निकाल पा रहे हैं।"

खरगोश बोला — "अच्छा, तो तुम लोग यहीं बैठो, मैं उनको बागीचे में से बाहर निकालने की कोशिश करता हूँ।"

यह कह कर वह खरगोश बागीचे के अन्दर घुस गया और उन बकरियों को बाहर की ओर निकालने की कोशिश करने लगा।

पर बकरियाँ थीं कि बागीचे के बाहर निकलने का नाम ही नहीं ले रहीं थीं। वे चारों तरफ भागती रहीं पर बागीचे के बाहर नहीं निकलीं।

आखिर खरगोश भी थक कर बैठ गया। जब खरगोश बाहर आ कर बैठ गया तो बकरियों ने दादी के पौधे फिर से खाने शुरू कर दिये।

खरगोश भी कुत्ता, लोमड़ी और जौनी के पास आ कर बैठ गया और उसने भी रोना शुरू कर दिया। तभी एक मधुमक्खी उधर से गुजरी तो उसने जब इन चारों को रोते देखा तो पूछा — "तुम सब क्यों रो रहे हो?"

खरगोश बोला — "मैं इसलिये रो रहा हूँ क्योंकि कुत्ता रो रहा है। कुत्ता इसलिये रो रहा है क्योंकि लोमड़ी रो रही है, और लोमड़ी इसलिये रो रही है क्योंकि जौनी रो रहा है और जौनी इसलिये रो

रहा है क्योंकि उसकी बकरियॉ दादी के बागीचे में घुस गयीं हैं और हम सब उनको बाहर नहीं निकाल पा रहे हैं।"

मधुमक्खी हॅसी और बोली — "अच्छा, तुम सब यहीं बैठो, मैं उनको बागीचे में से बाहर निकालने की कोशिश करती हूॅ।"

यह सुन कर खरगोश बोला — "तुम? इतनी छोटी सी इन बकरियों को बाहर निकालोगी? जब हम सब यानी मैं, कुत्ता, लोमड़ी और जौनी मिल कर भी इनको बाहर नहीं निकाल सके तो तुम इतनी छोटी सी इनको बाहर कैसे निकालोगी?"

मधुमक्खी बोली — "तुम बस देखते जाओ।" यह कह कर वह मक्खी उस बागीचे में उड़ी और उन बकरियों में से सबसे बड़ी बकरी के कान में जा कर घुस गयी।

उस बकरी ने अपना सिर ज़ोर ज़ोर से हिलाया ताकि वह उस मक्खी को अपने कान के बाहर निकाल सके तब तक वह मक्खी उस बकरी के दूसरे कान में जा कर घुस गयी। आखिर वह बकरी तंग हो कर बागीचे के दरवाजे से बाहर की तरफ भागने लगी।

फिर वह मक्खी दूसरी बकरी के एक कान में घुस गयी और फिर उसके दूसरे कान में घुस गयी और उसको वह जब तक तंग करती रही जब तक कि वह भी बागीचे के दरवाजे के बाहर की ओर नहीं भाग गयी।

यही उसने तीसरी बकरी के साथ भी किया और इस तरह उस छोटी सी मक्खी ने तीनों बकरियों को दादी के बागीचे से बाहर निकाल दिया।

जौनी बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद तुम्हारा ओ छोटी मक्खी।" और वह पहाड़ों की तरफ अपनी बकरियों की देखभाल करने के लिये दौड़ गया जैसे वह रोज करता था।

इस कथा से हमें यह सीख मिलती है कि कोई काम करने के लिये किसी आदमी या जानवर का साइज़ मायने नहीं रखता उसकी अक्ल मायने रखती है और अक्लमन्द की हमेशा जीत होती है।

8 दुनियॉ का इनाम[16]

साथ चलने की लोक कथाओं की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिण अफ्रीका देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार दक्षिण अफ्रीका में एक आदमी रहता था जिसके पास एक कुत्ता था। वह कुत्ता अब काफी बूढ़ा हो गया था। इतना बूढ़ा कि वह अब उससे बचना चाहता था।

वह कुत्ता जब जवान था तो उसने अपने मालिक की बहुत वफादारी से सेवा की पर दुनियॉ मे वफादारी का इनाम तो बेवफाई ही होता है न। और इसी लिये वह आदमी उस कुत्ते को बाहर निकालना चाहता था।

उस बूढ़े कुत्ते को अपने मालिक के इरादों का पता चल गया सो उसने अपने आप ही मालिक को छोड़ कर जाने का फैसला कर लिया और एक दिन वह उसको छोड़ कर चला गया।

वह कुछ दूर ही गया था कि उसको एक बूढ़ा बैल मिला। उसने बैल से पूछा — "दोस्त बैल मैं घूमने जा रहा हूँ क्या तुम मेरे साथ घूमने चलना पसन्द करोगे?"

बैल ने पूछा — "हॉ हॉ पर कहॉ?"

---

[16] The World's Reward – a folktale from South Africa, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft10.htm

कुत्ता बोला — "उन बूढ़ों की दुनियॉ में जहॉ परेशानियॉ तुमको परेशान न करें और जहॉ बेवफाई आदमी को बदनाम नहीं करे।"

बैल बोला — "यह तो बहुत ही अच्छी बात है। मैं तुम्हारे साथ हूँ। चलो चलते हैं।" और दोनों आगे चल दिये।

आगे जा कर उनको एक बूढ़ा बकरा मिला। कुत्ते ने अपना प्लान उसके सामने भी रखा तो वह भी उन दोनों के साथ चल दिया। आगे जा कर उनको एक बूढ़ा गधा, एक बूढ़ा बिल्ला, एक बूढ़ा मुर्गा और एक बूढ़ा बतख मिले।

कुत्ते ने जब उन सबको अपना प्लान बताया तो वे सब भी उसके साथ हो लिये। इस तरह सातों – कुत्ता, बैल, बकरा, गधा, बिल्ला, मुर्गा और बतख सब कुत्ते के साथ अपनी यात्रा पर निकल पड़े।

वे लोग रात तक चलते रहे और रात को एक घर के सामने आ पहुँचे। उस घर का दरवाजा खुला था सो उन्होंने उस खुले दरवाजे में से झॉक कर देखा कि एक मेज लगी हुई है और उस पर बहुत बढ़िया बढ़िया खाना सजा हुआ है।

कुछ डाकू वहॉ बैठे हुए वह खाना खा रहे हैं।

अन्दर आने की इजाज़त मॉगना तो बेकार था क्योंकि इतने सारे जानवरों को अन्दर कौन आने देता और यह देख कर कि वे भूखे थे वे और कुछ सोच भी नहीं सकते थे।

सो गधा बैल के ऊपर चढ़ा। बकरा गधे के ऊपर चढ़ा। कुत्ता बकरे के ऊपर चढ़ा। बिल्ला कुत्ते के ऊपर चढ़ा। बतख बिल्ले के ऊपर चढ़ा और मुर्गा बतख के ऊपर चढ़ा।

और वे सब एक साथ अपनी अपनी आवाज में बहुत ज़ोर से बिना रुके चिल्लाये।

घर में जो लोग बैठे थे वे ये आवाजें सुन कर इतने डर गये कि वे तो जैसे हिल डुल ही नहीं सके। उन्होंने बाहर के दरवाजे की तरफ झॉका तो उनको तो एक अजीब सा दृश्य दिखायी दिया।

उनमें से कुछ लोग पीछे के दरवाजे से रस्सी लाने दौड़ गये और कुछ खिड़की से कूद कर भाग गये और इस तरह कुछ ही पल में सारा घर खाली हो गया।

सातों जानवर एक के बाद एक कर के नीचे उतरे, घर में अन्दर गये और उन्होंने वह स्वादिष्ट खाना पेट भर कर खाया। पर वह खाना इतना ज़्यादा था कि उनके पेट भर कर खाने के बाद भी बहुत सारा बच रहा।

वह बचा हुआ खाना भी इतना ज़्यादा था कि वे उसे अपने साथ नहीं ले जा सकते थे। सो उन्होंने सोचा कि वे रात को वहीं रहेंगे और सुबह नाश्ता करने के बाद ही वहॉ से जायेंगे।

कुत्ता बोला — "मुझे तो अपने मालिक के दरवाजे पर पहरा देने की आदत है।" सो वह भाग कर घर के दरवाजे पर चला गया। बैल दरवाजे के पीछे चला गया और वहॉ जा कर बैठ गया।

बकरा बोला — "मैं इस मकान की उस खाली जगह में चला जाता हूँ।"

गधा बोला — "मैं घर के बीच के दरवाजे पर बैठता हूँ।"

बिल्ला बोला — "मैं आग जलाने की जगह बैठता हूँ।"

बतख बोला — "मैं पीछे के दरवाजे पर जा कर बैठता हूँ।"

मुर्गा बोला — "मैं बिस्तर पर सोता हूँ।"

और इस तरह वे सब उस घर में पहरा देने लगे।

कुछ देर बाद डाकुओं के सरदार ने अपने एक आदमी को अपना घर देखने के लिये भेजा कि वहाँ वे जानवर अभी भी वहीं थे या वहाँ से चले गये।

वह आदमी बेचारा धीरे धीरे अपने घर के पड़ोस में आया और इधर उधर कुछ सुनने की कोशिश करने लगा पर उसको कोई आवाज सुनायी नहीं पड़ी।

उसने खिड़की से अन्दर झाँका तो देखा कि आग जलाने की जगह केवल दो कोयले जल रहे थे। इसलिये वह सामने के दरवाजे से ही घर में घुसा। पर सामने के दरवाजे पर तो कुत्ता था सो उसने उस आदमी का पैर पकड़ लिया।

आदमी ने किसी तरह से कुत्ते से अपना पैर छुड़ाया और घर में अन्दर कूदा तो दरवाजे के पीछे बैल बैठा था। उसने अपने सींगों से उसको उछाल कर घर की खाली जगह में फेंक दिया।

खाली जगह में बकरा बैठा था वहॉ से उसने उसको उछाल दिया। इससे वह बेचारा जमीन पर आ पड़ा।

वहॉ से वह बीच वाले दरवाजे की तरफ भागा तो वहॉ गधा लेटा हुआ था। वह वहॉ इतनी ज़ोर से रेंका और उसने उसको इतनी ज़ोर से लात मारी कि वह आग जलाने की जगह जा गिरा।

आग जलाने की जगह बिल्ला बैठा था। वह उसके ऊपर इतनी ज़ोर से कूदा कि उसने उसको कई जगह नोच लिया।

सो वह पीछे के दरवाजे से भागा। वहॉ बतख बैठा था उसने उसकी पैन्ट पकड़ ली। वह बतख की पकड़ से छूट कर भागा तो मुर्गे ने ज़ोर की आवाज लगायी "कुकड़ूँ कूँ।"

यह सब देख सुन कर वह और तेज़ी से भागा तो अँधेरे में पत्थरों पर गिर पड़ा। चोट खाने से लाल नीला हुआ वह किसी तरह अपने साथियों के पास आ गया।

"उफ़, उफ़।" पहले तो वह केवल यही कह सका फिर बाद में सॉस आने पर उसने उनको सारा हाल बताया।

"पहले मैंने खिड़की से झॉक कर देखा तो मुझे आग जलाने की जगह दो अंगारे जलते हुए दिखायी दिये। और जब मैंने सामने के दरवाजे से देखने के लिये अन्दर जाना चाहा तो मेरा पैर एक लोहे के जाल पर जा पड़ा।

मैं घर के अन्दर कूदा तो मुझे किसी ने कॉटे से पकड़ लिया और घर की खाली जगह में उछाल दिया। वहॉ भी कोई तैयार बैठा था उसने मुझे वहॉ से नीचे फेंक दिया।

मैं बीच वाले दरवाजे से निकल जाना चाहता था तो वहॉ किसी ने बहुत ज़ोर से भोंपू बजाया और मुझे हथौड़े से मारा तो मुझे पता ही नहीं चला कि मैं कहॉ जा कर गिरा। पर फिर जल्दी ही मुझे पता चल गया कि मैं आग जलाने की जगह पर जा कर गिरा था।

वहॉ पर कोई और बैठा था। वह मेरे ऊपर कूदा और उसने तो बस मेरी ऑखें ही निकाल लीं थीं कि मैं वहॉ से पीछे के दरवाजे की तरफ भागा।

और आखीर में छठे ने मेरी टॉगों पर आग के चिमटे से मारा। जब मैं भाग रहा था तो कोई घर के बाहर से चिल्लाया — "रोको उसे, रोको उसे।"

फिर तो मैं बस रुका ही नहीं मैं भागा भागा यहॉ चला आ रहा हूॅ।

9 लम्बू, चौड़ू और दूर का देखने वाला[17]

साथ चलने की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के बोहेमिया देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक बूढ़ा राजा था जिसके एक बेटा था। एक दिन उसने अपने बेटे को बुलाया और बोला — "बेटा, मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ किसी भी दिन मर जाऊँगा। उससे पहले मैं यह देखना चाहता हूँ कि तुम शादी करके खुश रहो और तुम्हारी ज़िन्दगी में भी कोई तुम्हारा सुख दुख बॉटने वाला हो।"

फिर उसने अपनी जेब में से एक सोने की चाभी निकाली और अपने बेटे को दिखायी और बोला — "जाओ, तुम किले की मीनार पर चले जाओ और अपने लिये एक पत्नी ढूँढ लो।"

राजकुमार ने पिता से वह सोने की चाभी ली और तुरन्त ही किले की मीनार पर चला गया। उसे याद नहीं पड़ता था कि पहले कभी उसने किसी और को उस किले की ताला लगी मीनार पर जाते देखा हो। उसको तो यह भी नहीं पता था कि वहॉ था क्या।

उसने ऊपर जा कर दरवाजा खोल कर अन्दर जा कर देखा तो वहॉ दीवार पर बारह बड़ी बड़ी तस्वीरें लगी हुई थीं। उनमें से

[17] Long, Broad and Sharpsighted – a folktale from Bohemia, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=116
Retold by Mike Lockett

ग्यारह तस्वीरें बहुत सुन्दर स्त्रियों की थीं। हर स्त्री के सिर पर ताज था और वे सब अलग अलग पोशाकें पहने हुए थीं।

उसने एक एक कर के सब तस्वीरों को देखा तो उसको ऐसा लगा जैसे वे सब उसकी तरफ देख रही हों। हर दूसरी तस्वीर पहली तस्वीर से ज़्यादा सुन्दर थी।

बारहवीं तस्वीर एक सफेद कपड़े से ढकी हुई थी। राजकुमार ने उसका वह कपड़ा हटाया तो देखा कि वह तस्वीर तो सबसे सुन्दर लड़की की थी। उसने सफेद पोशाक पहन रखी थी और सफेद मोतियों का ताज पहन रखा था।

राजकुमार उसको देख कर मुस्कुराया और बोला — "अगर मेरी पसन्द पूछी जाये तो यही लड़की मेरी पत्नी होगी। मैं इसी से शादी करूँगा।"

जैसे ही उसने ये शब्द कहे उस लड़की ने अपना सिर झुका लिया और दुख भरी नजर से उसको देखा। बस उसी पल सारी तस्वीरें गायब हो गयीं।

राजकुमार नीचे उतर कर अपने पिता के पास गया और बोला — "पिता जी, मैंने अपनी पत्नी चुन ली है और मुझे पूरा विश्वास है कि वह मुझे खुश रखेगी।" फिर उसने राजा को यह भी बताया कि उसने अपने लिये कौन सी पत्नी चुनी है।

राजा उसकी बात सुन कर उदास हो गया और बोला — "बेटे, तुमने अपने लिये एक ऐसी राजकुमारी चुन ली है जो तुमको मिलनी नामुमकिन है।

वह राजकुमारी एक बहुत ही बुरे जादूगर के फन्दे में फॅसी है। वह एक लोहे के किले में कैद है। जो भी उसको उस जादूगर की कैद से आजाद कराने गया वह फिर कभी लौट कर नहीं आया।

पर अगर तुम उसी लड़की से शादी करना चाहते हो तो जाओ, मेरी दुआएँ तुम्हारे साथ हैं। तुम कामयाब हो कर सुरक्षित घर लौटो।"

सो राजकुमार अपनी पत्नी की खोज में चल दिया। उसने चार घोड़े लिये – एक सवारी के लिये और तीन आराम करने के लिये और चल दिया।

उसने जंगल पार किये, पहाड़ पार किये, वह दिन रात चलता रहा। चलते चलते उसको एक आदमी पैदल जाता मिला। यह आदमी बहुत लम्बा था। उसके हाथ और पैर भी बहुत लम्बे थे।

वह आदमी चिल्लाया — "रुको, मुझे भी अपने साथ ले लो।"

राजकुमार ने पूछा — "कौन हो तुम?"

आदमी बोला — "मेरा नाम लम्बू है। मैं अपने हाथ पैर बहुत दूर तक ले जा सकता हूँ। तुम उस पाइन के पेड़ पर वह घोंसला देख रहे हो न?"

कह कर उसने अपना हाथ बढ़ाया तो वह खुद पाइन के पेड़ जितना लम्बा हो गया। फिर उसने उस घोंसले को छुआ और अपने हाथ को वापस ले आया।

राजकुमार बोला — "वाह, आओ, आ जाओ मेरे साथ।"

सो वह लम्बू उसके तीन घोड़ों में से एक घोड़े पर बैठ गया और दोनों घोड़ों पर सवार हो कर अपने सफर पर चल दिये।

जब वे जा रहे थे तो उनको एक और आदमी मिला। यह आदमी बहुत ही छोटा और भारी था और उसका पेट बैरल[18] की तरह आगे निकला हुआ था।

उस आदमी ने भी राजकुमार से कहा — "रुको मुझे भी अपने साथ ले लो न।"

राजकुमार ने उससे पूछा — "तुम कौन हो?"

वह बोला — "मेरा नाम चौड़ू है। मैं अपने आपको कितना भी चौड़ा कर सकता हूँ। तुम मुझसे थोड़ा दूर हट जाओ तो फिर मैं तुमको दिखाता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ।"

जब राजकुमार और लम्बू कुछ दूर चले गये तो चौड़ू ने एक लम्बी साँस ली और अपना पेट और बाँया और दाँया हिस्सा बढ़ाना शुरू किया और वह सब इतना बढ़ा दिया कि वह एक पहाड़ जैसा लगने लगा जिसको किसी ने दबा कर चौरस कर दिया हो।

[18] A barrel, cask, or tun is a hollow cylindrical container, traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. See its picture above.

बाद में जब वह अपने पुराने साइज़ में आ गया तो राजकुमार ने उसे भी एक घोड़ा दे दिया और वह भी उनके साथ हो लिया। अब वे तीनों घोड़ों पर सवार हो कर चलने लगे।

कुछ दूर जाने पर उनको एक और आदमी मिला। उसने अपनी ऑखों पर पट्टी बॉध रखी थी। वह आदमी भी राजकुमार से बोला — "रुक जाओ और मुझे भी साथ ले लो।"

राजकुमार को उसकी बात सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। यह उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह अपनी ऑखों पर पट्टी बॉध कर उसको कैसे देख सका?

उसने उससे पूछा — "तुम कौन हो और तुम ऑख पर पट्टी बॉध कर कैसे देख सकते हो?"

वह आदमी बोला — "मेरा नाम तेज़ देखने वाला है और मैं अपनी ऑख पर पट्टी बॉध कर भी ऐसे ही देख सकता हूॅ जैसे तुम लोग अपनी ऑख खोल कर देखते हो।

अगर में अपनी ऑख की पट्टी खोल दूॅ तो मैं उन चीज़ों के अन्दर तक झॉक कर देख सकता हूॅ जिनको तुम लोग पास से भी नहीं देख सकते।

और अगर मैं किसी को घूर दूॅ तब तो उसमें आग ही लग जायेगी। और जो कुछ जल नहीं पायेगा वह फट कर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

फिर उसने एक बड़ी चट्टान की तरफ घूर कर देखा तो वह चटकने लगी। कुछ ही पलों ही वह टूट कर बिखर गयी और वहॉ रेत का ढेर पड़ा रह गया।

राजकुमार ने उसको भी अपने साथ ले लिया और अब चारों राजकुमार के चारों घोड़ों पर सवार हो कर चल दिये।

थोड़ी देर बाद ही वे सब उस बुरे जादूगर के लोहे के किले के पास पहुॅच गये। उन लोगों ने किले की खाई के ऊपर का पुल पार किया और उस किले में घुस गये।

अन्दर जा कर उन्होंने अपने घोड़े अस्तबल में बॉध दिये। ऐसा लग रहा था जैसे वह अस्तबल उन्हीं के लिये ही तैयार किया गया हो क्योंकि उसमें जानवरों के लिये दाना पानी भी रखा था।

ऑगन में चारों तरफ लोहे की मूर्त्तियॉ खड़ी हुई थीं। पर वे मूर्त्तियॉ ज़िन्दा लोगों की सी लग रहीं थीं। राजकुमार और उसके नये साथी सब लोग दरवाजे में से हो कर उस किले के अन्दर घुस गये।

दरवाजे से हो कर वह जिस कमरे में पहुॅचे वह बहुत चमकीली रोशनी से भरा हुआ था और उसमें एक खाने की मेज लगी थी जिस पर चार आदमियों के लिये कई तरह के खाने और शराब रखी थी।

सो चारों उस मेज पर बैठ गये और वहॉ उन्होंने डट के खाना खाया। खाने के बाद वे किले को देखने के लिये उठे। जैसे ही वे उठे किले का मालिक जादूगर एक दरवाजे से अन्दर आया।

वह एक लम्बी हल्के सलेटी रंग की पोशाक पहने था जो फर्श को छू रही थी। और एक लम्बा नुकीला टोप पहने था जो ऊपर से कुछ मुड़ा हुआ था। उसकी आधी सफेद दाढ़ी करीब करीब उसकी कमर तक आ रही थी।

उसके हाथ में एक रस्सी थी और वह रस्सी से उस लड़की को बॉधे हुए था जिसको राजकुमार ने अपने किले की मीनार की तस्वीर में देखा था।

राजकुमारी को देखते ही राजकुमार उसकी तरफ दौड़ा पर इससे पहले कि वह कुछ बोलता जादूगर बोला — "मुझे मालूम है कि तुम यहॉ क्यों आये हो। तुम यहॉ इस लड़की को लेने के लिये आये हो न। ले लो इसको अगर तुम ले सकते हो तो।

मैं इसको तीन दिनों के लिये यहॉ छोड़ कर जा रहा हूॅ। इसकी तुम तीन दिन तक रखवाली करना। तीन दिनों में अगर यह गायब हो गयी तो मैं तुम्हें और तुम्हारे दोस्तों सबको लोहे की मूर्त्तियों में बदल दूॅगा जैसे मैंने और दूसरे लोगों को बदल कर रखा है जो तुमसे पहले यहॉ इस राजकुमारी को छुड़ाने के लिये आये थे।"

फिर उसने राजकुमारी को एक कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और खुद वहॉ से गायब हो गया।

राजकुमार की ऑख उस सुन्दर राजकुमारी से हट ही नहीं पा रही थी। उसने उससे बात करने की कोशिश की पर वह कुछ नहीं बोली। ऐसा लग रहा था जैसे वह कोई मूर्ति हो।

उसकी ऑखें राजकुमारी पर ही लगी रहीं और उसने सोच लिया कि वह सोयेगा नहीं। वह नहीं चाहता था कि राजकुमारी वहॉ से गायब हो जाये सो वह उसकी तीन दिनों तक रखवाली करेगा।

लम्बू ने अपनी ऑखें और हाथ पैर कमरे की दीवार तक फैला लिये ताकि अगर कोई उस कमरे में आये तो उसको पता चल जाये।

चौड़ू ने अपने आपको इतना फैला लिया कि उसने कमरे का दरवाजा ही रोक लिया ताकि कमरे में न तो कोई अन्दर आ सके और न ही उसमें से कोई बाहर जा सके।

तेज़ नजर वाला कमरे के बीच में खड़ा हो गया और चारों तरफ अपनी निगाह रखने लगा ताकि अगर कोई आये जाये तो वह उसको देख सके।

पर अपनी पूरी कोशिशों के बावजूद वे सब सो गये और रात भर सोते रहे।

अगली सुबह राजकुमार और लोगों से पहले जाग गया। उसने तुरन्त अपनी राजकुमारी की तरफ देखा तो उसका तो दिल बैठ गया। वह वहॉ नहीं थी। वह तो गायब हो चुकी थी।

उसने अपने साथियों को जगाया तो वे भी उतने ही परेशान हुए जितना कि राजकुमार खुद परेशान था।

उसी समय तेज़ नजर वाले ने इधर उधर देखना शुरू किया और बोला — "चिन्ता न करो। मैंने उसको देख लिया है। वह यहाँ से सौ मील दूर है।

एक जंगल के बीच में एक ऊँचा सा ओक का पेड़ है और उस पेड़ पर ओक की गिरी[19] लगी है, वह उस गिरी में छिपी हुई है।"

लम्बू तेज़ नजर वाले के ऊपर बैठ गया ताकि वह उसको बता सके कि वह राजकुमारी कहाँ है। लम्बू ने हर दस मील पर एक कदम रख कर अपने पैर फैलाने शुरू किये।

कुछ पलों में ही वह उस ओक के पेड़ से वह गिरी तोड़ लाया और ला कर राजकुमार को दे दी। राजकुमार ने वह गिरी अपनी पास वाली कुर्सी पर अपने पास ही रख ली। गिरी कुर्सी पर रखते ही राजकुमारी वहाँ तुरन्त ही प्रगट हो गयी।

उसी समय कमरे का दरवाजा धड़ाम से खुला और गुस्से से भरा जादूगर वहाँ आया। उसने तो यह उम्मीद ही नहीं की थी कि राजकुमारी वहाँ उस कमरे में होगी।

वह बोला — "तुम्हारी राजकुमारी आज फिर यहाँ इस कमरे में रहेगी और तुम फिर इसकी पहरेदारी करना। मुझे शक है आज रात भी तुम लोग इसकी इतनी ही अच्छी तरह से पहरेदारी कर सकोगे जितनी कि तुम सबने कल की थी।"

---

[19] Acorn – nut of the Oak tree. See the picture of acorn above.

यह कह कर उस जादूगर ने उस राजकुमारी के कन्धे पर हाथ रखा और दोनों गायब हो गये।

दिन तो जल्दी ही गुजर गया। जब रात हुई तो वह जादूगर राजकुमारी को ले कर फिर उसी दरवाजे से अन्दर आया और बोला — "इसकी पहरेदारी कर सकते हो तो करो। अगर यह सुबह तक चली गयी तो तुम सब भी मेरी उन पत्थरों की मूर्त्तियों की लाइन मे लग जाओगे।"

राजकुमार और उसके दोस्तों ने फिर सारी रात जागने की कोशिश की पर उस जादूगर के जादू ने उन सबको फिर सुला दिया। राजकुमारी दोबारा गायब हो चुकी थी।

अगले दिन फिर से राजकुमार सुबह सबसे पहले जागा और देखा कि राजकुमारी तो वहॉ नहीं थी।

राजकुमार ने अपने दोस्तों से कहा — "दोस्तों मुझे तुम्हारी सहायता की फिर से जरूरत है। राजकुमारी को ढूँढने में मेरी सहायता करो।"

तेज़ देखने वाले ने अपनी ऑखें मलीं और बोला — "मुझे राजकुमारी दिखायी दे रही है। दो सौ मील दूर एक पहाड़ है। उस पहाड़ में एक चट्टान है और उस चट्टान में एक कीमती पत्थर है। राजकुमारी उस कीमती पत्थर के अन्दर है।"

लम्बू ने फिर से अपने हाथ पैर फैलाये और तेज़ नजर वाले की सहायता से उस पहाड़ तक पहुँच गया।

तेज़ नजर वाले ने अपनी ऑख से पट्टी उतारी और उस पहाड़ को जो घूर कर देखा तो वह पहाड़ टूट गया। उस पहाड़ में से वह चट्टान निकल आयी जिसमें वह कीमती पत्थर था।

फिर उसने उस चट्टान को घूरा तो उसमें से वह कीमती पत्थर निकल आया जिसके अन्दर राजकुमारी थी। लम्बू ने वह कीमती पत्थर उठाया और वह कीमती पत्थर ला कर उसने राजकुमार को दे दिया।

राजकुमार ने जैसे ही वह कीमती पत्थर कुर्सी पर रखा तो एक बार फिर वह राजकुमारी उस पत्थर में से बाहर आ गयी।

तभी कमरे का दरवाजा धड़ाम से खुला और वह जादूगर उस कमरे में घुसा। राजकुमारी को वहॉ उस कमरे में देख कर उसकी ऑखें गुस्से से जली जा रही थीं।

आ कर वह बोला — "मैं देख रहा हूँ कि तुम लोगों ने एक बार फिर राजकुमारी की ठीक से निगरानी की है। पर कल यह कहानी कुछ और ही होगी। कल यह राजकुमारी तुमसे खो जायेगी और फिर तुम सब मेरी पत्थर की सेना में शामिल हो जाओगे।"

कह कर उस जादूगर ने उस राजकुमारी के कन्धे पर हाथ रखा और वे दोनों एक बार फिर गायब हो गये।

दिन तो जल्दी ही बीत गया। जब रात हुई तो वह जादूगर उस राजकुमारी को ले कर फिर वहॉ आया और बोला — "अपनी ज़िन्दगी की आज की आखिरी रात तुम और खुशी मना लो क्योंकि

अबकी बार तुम राजकुमारी की निगरानी करने में सफल नहीं हो पाओगे और तुम सब पत्थरों में बदल जाओगे।"

यह कह कर वह राजकुमारी को वहीं छोड़ कर वहॉ से चला गया। उसके जादू से वे चारों फिर से सो गये और राजकुमारी वहॉ से फिर गायब हो गयी।

अगले दिन सुबह को राजकुमार सबसे पहले उठा। जब उसने राजकुमारी को वहॉ नहीं देखा तो उसने तेज़ देखने वाले को उठाया।

वह उठा और इधर उधर देख कर बोला — "हॉ मुझे दिखायी दे रहा है। राजकुमारी यहॉ से तीन सौ मील दूर समुद्र की तली में है। समुद्र में एक सीपी है। सीपी में एक सोने की अॅगूठी है और वह राजकुमारी उस अॅगूठी में है।"

चौड़ू बोला — "लम्बू को मुझे और तेज़ देखने वाले दोनों को साथ ले कर वहॉ चलना चाहिये।"

सो लम्बू ने अपना शरीर बढ़ाया और चौड़ू को और तेज़ देखने वाले को अपने कन्धों पर बिठाया और लम्बे लम्बे कदम रखता हुआ समुद्र की तरफ चल दिया।

तेज़ देखने वाले ने लम्बू को बता दिया था कि उसको उन्हें कहॉ ले कर जाना था। लम्बू ने समुद्र के पास पहुॅच कर देखा कि वह तो सीपी तक नहीं पहुॅच पा रहा है।

सो जब लम्बू उस सीपी तक नहीं पहुँच सका जिसमें राजकुमारी बैठी थी तो चौड़ू बोला — "तुम लोग हटो अब मेरा काम करने का समय है।"

सबको हटा कर वह अपने पेट के बल समुद्र के किनारे पर लेट गया और अपने आपको उसने बहुत चौड़ा करके समुद्र का पानी पीना शुरू कर दिया।

कुछ ही पलों में समुद्र का पानी इतना अधिक नीचे गिर गया कि लम्बू उसमें चलने और अपनी बाँह फैलाने लायक हो गया। उसने तुरन्त ही वह सीपी उठा ली। सीपी को खोल कर उसने उसमें से अँगूठी निकाली और सब लोग वापस किले की तरफ दौड़ पड़े।

चौड़ू ने समुद्र का इतना सारा पानी पी लिया था कि वह बहुत भारी हो गया था सो लम्बू ने उसको अपने कन्धे पर से उतार दिया। चौड़ू के नीचे गिरते ही उसके मुँह में से काफी सारा पानी निकल कर घाटी में फैल गया जिससे उन तीनों को वहाँ से बाहर नकलने में बहुत परेशानी हुई।

इधर किले में राजकुमार बहुत परेशान हो रहा था। सूरज उग आया था और उसके लोग अभी तक नहीं लौटे थे। तभी वह जादूगर कमरे में धम धम करता आ पहुँचा।

उसने देखा कि राजकुमारी तो कमरे में नहीं थी सो उसने अपनी जादू की छड़ी उठायी और राजकुमार और उसके दोस्तों पर उनको

पत्थर का बनाने के लिये अपना जादू फेंकने ही वाला था कि तेज़ नजर वाले ने उसको यह करते देख लिया।

उसने तुरन्त ही लम्बू को यह बताया तो लम्बू ने अपनी बॉह सबसे ज़्यादा लम्बी फैलायी और समुद्र से लायी हुई अंगूठी को कुर्सी पर रख दिया।

अॅगूठी कुर्सी पर रखते ही अॅगूठी में से राजकुमारी निकल आयी। राजकुमारी को देखते ही जादूगर गुस्से से भुनभुनाया और एक रैवन बन कर खिड़की में से बाहर उड़ गया।

उस सुन्दर राजकुमारी ने राजकुमार की तरफ देख कर उसको बार बार धन्यवाद दिया। उधर जैसे ही जादूगर रैवन बन कर उड़ा तो किले में रखी सारी पत्थर की मूर्तियॉ ज़िन्दा हो उठीं।

राजकुमार ने राजकुमारी से शादी करने की इच्छा प्रगट की तो राजकुमारी भी मान गयी। जल्दी ही दोनों की शादी हो गयी। राजकुमार का पिता अपने बेटे की शादी उसकी पसन्द की राजकुमारी से होते देख कर बहुत खुश था।

बाद में उसने राजकुमार के तीनों दोस्तों – लम्बू चौड़ू और तेज़ देखने वाले को आदर दिया। सभी लोग उस राजकुमार के राज्य में बहुत सालों तक खुशी खुशी रहे।

10 जमीन और पानी पर चलने वाली नाव[20]

चलो हम भी चलें की इस पुस्तक की यह लोक कथा यूरोप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इस लोक कथा में एक लड़का अपने नम्र व्यवहार से एक ऐसी नाव बनाता है जो जमीन और पानी दोनों पर चलती है।

एक बार एक राजा ने अपने राज्य में यह मुनादी पिटवायी कि "जो कोई आदमी ऐसी नाव बनायेगा जो जमीन पर भी चलेगी और पानी में भी, तो मैं उस आदमी से अपनी बेटी की शादी कर दूँगा।"

उस देश में एक आदमी रहता था जिसके तीन बेटे थे। उसके पास एक घोड़ा, एक गधा और एक सूअर का बच्चा भी था।

जब उसके सबसे बड़े बेटे ने यह मुनादी सुनी तो उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी आप अपना घोड़ा बेच दीजिये और उससे जो पैसे मिलेंगे मैं उनसे नाव बनाने का सामान खरीदूँगा।

फिर मैं उस सामान से एक ऐसी नाव बनाऊँगा जो जमीन और पानी दोनों पर चल सके। फिर मैं राजकुमारी से शादी कर लूँगा।"

---

[20] A Boat For Land and Water – a folktale from Italy from its Rome area.
Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980.
Its most stories are available in Hindi from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.

पिता अपना घोड़ा नहीं बेचना चाहता था पर अपने बेटे की जिद के आगे उसको झुकना पड़ा। घर में शान्ति बनाये रखने के लिये उसने अपना घोड़ा बेच दिया और उस पैसे से उसके लिये नाव बनाने के लिये औजार खरीद दिये।

अगले दिन वह लड़का सुबह सवेरे उठा और नाव बनाने के लिये लकड़ी काटने के लिये जंगल चल दिया।

जब उसकी नाव आधी बन गयी तो एक छोटा सा बूढ़ा वहॉ आया और उससे बोला — "बेटा, तुम यह क्या बना रहे हो?"

"बस ऐसे ही जो मुझे अच्छा लग रहा है।"

"और तुमको क्या अच्छा लग रहा है?"

"बैरल[21] की पट्टियॉ।"

"तो कल तुमको बैरल की पट्टियॉ अपने आप कटी मिल जायेंगी अभी तुम अपने घर जाओ।" कह कर वह बूढ़ा वहॉ से चला गया।

अगली सुबह जब वह वापस जंगल गया तो जहॉ उसने अपनी वह आधी बनी नाव और लकड़ी और औजार छोड़े थे वहॉ बैरल की पट्टियों का ढेर लगा पड़ा था।

[21] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

उस ढेर को देख कर तो उस लड़के ने अपना सिर पीट लिया और रोता चिल्लाता घर वापस आ गया।

घर आ कर उसने अपने पिता को सब कुछ बताया तो पिता को भी बहुत बुरा लगा। उसने तो अपने बेटे की खुशी के लिये अपना घोड़ा बेचा था पर अब उसका मन अपने बेटे की गर्दन मरोड़ने का कर रहा था।

दो तीन हफ्ते बाद उसके बीच वाले लड़के को अपनी किस्मत आजमाने की खुजली उठी। वह भी नाव बनाना चाहता था। उसने अपने पिता से उसका गधा बेचने के लिये कहा ताकि वह उसको बेचने से आये पैसों से वैसी नाव बना सके।

हालॉकि वह आदमी अपना गधा बेचना नहीं चाहता था पर अपने दूसरे बेटे की जिद के आगे उसको झुकना पड़ा और उसने अपना गधा बेच दिया।

उस पैसे से उसने भी कुछ सामान खरीदा और वह भी नाव बनाने जंगल की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर उसने भी लकड़ी काटी और उसकी नाव बनानी शुरू कर दी।

जब उसकी नाव भी आधी बन गयी तो एक बूढ़ा उसके पास आया और उससे बोला — "बेटा, तुम यह क्या बना रहे हो?"

"बस ऐसे ही जो मुझे अच्छा लग रहा है।"

"और क्या तुम बताओगे कि तुमको क्या अच्छा लग रहा है?"

"मैं झाड़ू के हैन्डिल बना रहा हूॅ।"

"तो कल तुमको झाड़ू के हैन्डिल अपने आप बने मिल जायेंगे अभी तुम अपने घर जाओ।" कह कर वह बूढ़ा वहॉ से चला गया।

शाम को वह लड़का भी अपनी नाव के लिये लकड़ी काट कर घर चला गया। घर जा कर उसने खाना खाया और सो गया। सुबह सवेरे उठ कर जब वह जंगल गया तो उसने देखा कि उसकी काटी सारी लकड़ी के तो झाड़ू के हैन्डिल बने रखे हैं।

यह देख कर उसने भी अपना सिर पीट लिया और रोता चिल्लाता घर वापस आ गया। घर आ कर उसने अपने पिता को सब कुछ बताया तो पिता को भी बहुत बुरा लगा।

उसने तो अपने बेटे की खुशी के लिये अपना गधा बेचा था पर अब उसका मन उसकी गर्दन मरोड़ने का कर रहा था।

वह चिल्ला कर बोला — "तुम्हारे साथ जो कुछ हुआ ठीक ही हुआ। बल्कि तुम दोनों के साथ जो कुछ भी हुआ वह ठीक ही हुआ क्योंकि तुम लोगों के विचार ही बेवकूफी के थे। और यह मेरे साथ भी ठीक हुआ क्योंकि मैंने तुम बेचकूफों की बात सुनी।"

उसका सबसे छोटा बेटा यह सब सुन रहा था। वह बोला — "अब जब हम यहॉ तक आ ही गये हैं पिता जी तो हमको बाकी बचा रास्ता भी पार कर लेना चाहिये।

पिता जी, मैं भी अपनी किस्मत आजमाना चाहता हूँ। हम यह सूअर का बच्चा बेच देते हैं, नये औजार खरीदते हैं और कौन जाने शायद मैं ही वैसी नाव बनाने में कामयाब हो जाऊँ।"

यह सुन कर तो पिता के गुस्से का पारा आसमान पर चढ़ गया पर काफी कहा सुनी के बाद वह सूअर का बच्चा भी बेच दिया गया, नये औजार खरीदे गये और वह लड़का अगले दिन नाव बनाने के लिये लकड़ी काटने के लिये जंगल पहुँच गया।

उसकी भी नाव जब आधी बन गयी तो वही पहले वाला बूढ़ा फिर वहाँ आया और उससे पूछा — "बेटे, तुम क्या कर रहे हो?"

लड़के ने जवाब दिया — "बाबा, मैं एक ऐसी नाव बना रहा हूँ जो जमीन पर भी चल सके और पानी पर भी तैर सके।"

बूढ़ा बोला — "तो तुमको ऐसी नाव जो जमीन पर भी चल सके और पानी पर भी तैर सके अपने आप मिल जायेगी अभी तुम अपने घर जाओ।" और यह कह कर वह बूढ़ा वहाँ से चला गया।

अपने दूसरे भाइयों की तरह वह भी शाम होने पर घर चला गया। जा कर उसने खाना खाया और सो गया। अगले दिन जब वह सुबह सवेरे जंगल पहुँचा तो उसको वैसी ही एक नाव तैयार खड़ी मिली। वह लड़का तो उस नाव को देख कर बहुत खुश हो गया।

उसके पतवार भी थे और उसमें पाल भी लगे हुए थे। वह तुरन्त ही उस नाव पर चढ़ गया और बोला — "चल नाव चल, जमीन पर चल।"

और नाव जंगल में हो कर इतनी आसानी से जाने लगी जैसे कि कोई नाव पानी पर तैरती है। चलते चलते वह उसके घर आ गयी। उसके पिता और भाई उस नाव को देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गये।

लड़का फिर बोला — "चल नाव चल, जमीन पर चल।" अब वह राजा के महल की तरफ चल दी – पहाड़ों पर चढ़ती हुई, मैदानों में से गुजरती हुई और जब भी कोई नदी आती तो उसमें तैरती हुई।

अब उसके पास नाव तो थी पर उसको चलाने के लिये कोई टीम[22] नहीं थी। वह अब एक ऐसी नदी में आ पहुँचा था जिसका पानी समुद्र की एक धारा से आना था पर उसका पानी नदी तक नहीं पहुँच रहा था।

ऐसा इसलिये था क्योंकि नदी के मुँह पर उसके किनारे पर खड़ा एक बहुत ही बड़ा आदमी झुक कर उस समुद्र की धारा में से पानी पी रहा था और उसका पानी नदी में आ ही नहीं पा रहा था जिससे वह धारा सूखी सी हो रही थी।

[22] Crew

लड़का बोला — "हे भगवान, कितना सारा पानी पीने वाला आदमी है यह। क्या ही अच्छा हो अगर यह मेरे साथ राजा के महल तक चले।"

वह चिल्ला कर बोला — "क्या तुम मेरे साथ राजा के महल तक चलना पसन्द करोगे?"

उस बड़े आदमी ने एक घूँट पानी और पिया और बोला — "खुशी से। अब जबकि मेरी प्यास थोड़ी सी बुझ गयी है तो मैं तुम्हारे साथ चल सकता हूँ।" कह कर वह उस नाव पर चढ़ गया।

अब वह नाव पानी पर तैरने लगी क्योंकि समुद्र का पानी अब नदी में आने लगा था। नदी में तैरने के बाद अब वह नाव फिर से जमीन पर चलने लगी थी।

चलते चलते वे दोनों एक ऐसी जगह आये जहाँ एक आदमी एक बड़ी मोटी सी भैंस को लोहे के डंडे मे लगा कर आग के ऊपर भून रहा था।

उस आदमी को देख कर उस लड़के ने उस आदमी से पूछा — "क्या तुम मेरे साथ राजा के महल तक चलना पसन्द करोगे?"

वह बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। मुझे बस ज़रा सा समय दो ताकि मैं यह कौर खा लूँ फिर मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।"

"हाँ हाँ जरूर।"

इस पर उस आदमी ने उस भैंस को उस लोहे के डंडे में से निकाला और अपने मुँह में ऐसे रखा जैसे वह कोई चिड़िया हो और

उसे खा कर उस लड़के के साथ उसकी नाव पर सवार हो गया। सो अब तीनों राजा के महल की तरफ चल दिये।

नाव झीलें पार करती हुई और खेतों में से होती हुई चली जा रही थी कि उनको एक बड़े साइज़ का आदमी[23] मिल गया जो एक पहाड़ के सहारे खड़ा था।

उसको इस तरह खड़े देख कर वह लड़का उससे बोला — "हलो, क्या तुम मेरे साथ राजा के महल तक चलना पसन्द करोगे?"

वह बोला — "मैं तो यहाँ से हिल भी नहीं सकता।"

"पर क्यों?"

"क्योंकि अगर मैं यहाँ से हटा तो यह पहाड़ गिर जायेगा।"

"तो गिर जाने दो।"

वह आदमी उस पहाड़ को एक हाथ से सँभाले हुए उस लड़के की नाव में कूद कर बैठ गया।

पर जैसे ही वह नाव वहाँ से चली उस आदमी का हाथ उस पहाड़ के नीचे से हट गया और वह पहाड़ एक ज़ोर की आवाज के साथ नीचे गिर कर चकनाचूर हो गया।

वह नाव फिर से सड़क और पहाड़ियों पर से होती हुई राजा के महल की तरफ चल दी और आखीर में राजा के महल के सामने आ कर रुक गयी।

[23] Translated for the word "Giant".

वहॉ आ कर वह लड़का नाव में से उतरा — "राजा साहब, यह लीजिये। यह नाव मैंने अपने हाथों से बनायी है। यह जमीन और पानी दोनों पर चल सकती है। अब आप अपने वायदे के मुताबिक अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दें।"

राजा उस लड़के को देख कर बहुत ही दुखी हो गया। वह तो ऐसे गरीब लड़के की आशा ही नहीं कर रहा था कि कोई ऐसा गरीब लड़का इतनी अच्छी नाव बना कर लायेगा जो पानी और धरती दोनों पर चल सकेगी और उसको अपनी बेटी की शादी एक ऐसे आदमी से करनी पड़ जायेगी।

वह यह सब देख कर अपनी मुनादी पर पछताने लगा कि मैंने ऐसी मुनादी पिटवायी ही क्यों। अब उसको अपनी बेटी किसी गरीब को देनी पड़ेगी।

कुछ सोच कर राजा बोला — "ठीक है। मैं अपनी बेटी की शादी तुमसे करूँगा पर तुमको मेरी एक शर्त माननी पड़ेगी। मेरी दावत में जो भी मैं तुमको दूँगा वह सारी चीज़ें तुमको और तुम्हारी टीम के लोगों को खत्म करनी पड़ेंगी। तुम उनमें से एक पंख या एक किशमिश भी नहीं छोड़ सकते।"

"ठीक है। यह बताइये कि यह दावत है कब?"

"कल।" और अगले दिन उसने यह सोचते हुए एक हजार चीज़ों की दावत का इन्तजाम किया कि न तो उस लड़के ने इतनी

सारी चीज़ें कभी देखीं होंगी और न ही वह अपनी टीम के साथ ये सब चीज़ें खा पायेगा।

सो अगले दिन वह लड़का केवल एक आदमी को साथ ले कर उस दावत में आया। यह वही आदमी था जो भुनी हुई भैंस भुनी हुई चिड़िया की तरह खा रहा था।

लेकिन जब उन सबको खाने का समय आया तो वह तो बस खाता गया, खाता गया, खाता गया। कुछ को चबाते हुए, कुछ को साबुत की साबुत निगलते हुए जब तक कि उसने वहॉ रखी सारी की सारी चीज़ें खत्म नहीं कर लीं।

राजा तो उस आदमी को देखता ही रह गया। फिर उसने ताली बजा कर अपने नौकरों को बुलाया और उनसे पूछा कि रसोई में अभी कुछ बचा है क्या?

वे बोले — "थोड़ा सा ही बचा है।"

राजा ने उसको भी वहॉ मॅगवा लिया तो नौकर खाने के आखिरी टुकड़े तक को वहॉ ले आये। उस आदमी ने वह सब भी खा लिया।

राजा की समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे पर फिर कुछ सोच कर वह बोला — "हॉ अब मैं अपनी बेटी की शादी तुम्हारे साथ कर सकता हूॅ पर अभी तो इस खाने के बाद शराब भी पीनी बाकी रह गयी है।

अब मैं तुम्हारे लिये अपने तहखाने में रखी सारी शराब मँगवाता हूँ जिसको तुमको और तुम्हारी टीम को पूरा का पूरा खत्म करना होगा।"

अबकी बार उस लड़के के साथ वह नदी का पानी पीने वाला आदमी आया और उसने देखते देखते राजा की सारी शराब खत्म कर दी। फिर उसने वह शराब भी पी डाली जो राजा ने अपने लिये बचा कर रखी थी।

राजा बोला — "बहुत अच्छे। मैं इस बात के खिलाफ बिल्कुल भी नहीं हूँ कि मैं अपनी बेटी तुमको नहीं दूँगा पर अब दहेज का सवाल है जो उसके साथ जायेगा।

उसके श्रंगार करने की मेज, आलमारियाँ, पलंग, चादरें, कपड़े और घर की बहुत सारी चीज़ें हैं जो मैं उसको दूँगा। वे सब तुमको मेरी बेटी को उन सबके ऊपर बिठा कर एक ही बार में उसी समय ले जानी होंगी।"

लड़का उस आदमी की तरफ देखता हुआ बोला जिसने पहाड़ सँभाल रखा था — "क्या यह काम तुमको कोई काम लग रहा है?"

वह आदमी बोला — "क्या मुझे यह काम लग रहा है? नहीं, नहीं, यह तो मेरा शौक है।"

सब लोग महल चले गये। लड़के ने सामान लाने वालों से पूछा — "क्या तुम लोग तैयार हो? अगर तैयार हो तो सामान लादना शुरू करो।"

वे लोग कपड़ों की आलमारियॉ लाये, मेजें लाये, जवाहरात के बक्से लाये, और और भी बहुत सारा सामान लाये। सारा सामान ला कर उन्होंने उस आदमी की कमर पर लाद दिया।

उस सामान के ऊपर बैठने के लिये उस राजकुमारी को पहले अपने महल की मीनार पर चढ़ना पड़ा फिर वह उस ढेर पर आ कर बैठी।

जब वह बैठ गयी तो वह बड़ा आदमी चिल्ला कर बोला — "राजकुमारी जी, मुझे ज़रा कस कर पकड़ लीजियेगा। मैं अब चलना शुरू करता हूँ। कहीं ऐसा न हो कि मेरे चलने के धक्के से आप गिर जायें।"

इतना कह कर वह सब कुछ ले कर नाव की तरफ भाग लिया और कूद कर नाव पर चढ़ गया।

लड़का बोला — "ओ नाव, अब तुम उड़ चलो।" और नाव सड़कों, चौराहों और खेतों के ऊपर से होती हुई उड़ चली।

राजा अपनी बालकनी में खड़ा यह सब देख रहा था। वह चिल्लाया — "उनके पीछे जाओ और उन सबको पकड़ कर जंजीर में बॉध कर ले आओ।"

राजा की फौज उनके पीछे भागी परन्तु नाव के उड़ने से जो धूल का बादल उठा उससे वह उन सबको देख भी न सकी।

लड़के का पिता अपने छोटे बेटे को उसकी दुलहिन के साथ और पूरी नाव भरे सामान के साथ देख कर बहुत खुश हुआ।

फिर उस लड़के ने दुनियॉ का सबसे सुन्दर महल बनवाया जिसमें एक एक तल्ला उसने अपने पिता, भाइयों और अपने साथियों को रहने के लिये दे दिया और बाकी का महल उसने अपने और अपनी पत्नी के लिये रख लिया।

11 एक बेवकूफ और उड़ने वाला पानी का जहाज[24]

चलो हम भी चलें की इस पुस्तक की यह लोक कथा एशिया के रूस देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इस कथा में भी एक लड़का अपनी नम्र व्यवहार से एक ऐसा पानी का जहाज बनाता है जो उड़ भी सकता है।

बहुत पुरानी बात है कि रूस के किसी गॉव में एक किसान अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ रहता था। किसान के दो बड़े लड़के तो बहुत अक्लमन्द थे परन्तु तीसरे सबसे छोटे लड़के को सभी लोग संसार का सबसे बड़ा बेवकूफ कहते थे।

वह बच्चों की तरह भोला भाला और सीधा था। उसने अपने जीवन में न तो कभी किसी को कष्ट पहुॅचाया था और न ही कभी उसने कोई उतार चढ़ाव देखा था।

किसान पति पत्नी को अपने दोनों बड़े लड़कों से तो बड़ी बड़ी आशाऐं थीं परन्तु उस बेवकूफ को तो अगर रोटी भी मिल जाये तो उसकी खुशकिस्मती। पर कभी कभी मनुष्य सोचता कुछ और है और होता कुछ और है। कैसे? यह एक ऐसी ही कहानी है।

[24] A Fool and a Flying Ship – a folktale from Russia, Asia
[This folktale has been given in the Book "Russian Folk-Tales" also with the title "The Flying Ship". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.]

एक दिन रूस के राजा ज़ार[25] ने अपने राज्य में दूर दूर तक यह सन्देश पहुँचवा दिया कि वह अपनी बेटी किसी ऐसे आदमी को देगा जो उसे उड़ने वाला जहाज़ ला कर देगा। उस जहाज़ में पंख भी होने चाहिये और समुद्र में चलने की तरह ही उसको आसमान में भी उड़ना चाहिये।

यह सन्देश किसान के लड़कों ने भी सुना तो दोनों अक्लमन्द लड़कों ने सोचा "ज़ार की बेटी से शादी करने का यह हमारे लिये सुनहरा मौका है।" और वे उसी दिन उड़ने वाले जहाज की खोज में चल दिये।

उनके पिता ने उनको आशीर्वाद दिया। अपने कपड़ों में से निकाल कर अच्छे कपड़े उन्हें पहनने के लिये दिये। उनकी मॉ ने उनके रास्ते के लिये बढ़िया बढ़िया खाना बना कर रखा। कई तरह के पके गोश्त रखे और मक्का की बढ़िया शराब रखी।

जब वे जाने लगे तो वह दूर तक उन्हें छोड़ने आयी और तब तक हाथ हिलाती रही जब तक कि वे ऑखों से ओझल नहीं हो गये।

इस तरह वे खुशी खुशी अपना भाग्य आजमाने चले। उनके साथ क्या हुआ यह तो पता नहीं क्योंकि अभी तक उनकी कोई खबर नहीं आयी है।

[25] Tzar, or Tsar, pronounced as "Zaar". Title of the emperor of Russia before 1917.

पर जब उस बेवकूफ लड़के ने अपने भाइयों को जाते हुए देखा तो उसका मन भी अच्छे कपड़े पहनने, अच्छा खाना खाने तथा अच्छी शराब पीने को करने लगा।

उसने अपनी माँ से कहा — "माँ, मैं भी उड़ने वाले जहाज की खोज में जाऊँगा। मुझे भी अच्छा खाना और मकई की शराब दो। मैं भी ज़ार की बेटी से शादी करूँगा।"

माँ ने उसे झिड़का — "बेवकूफ कहीं का, तुझको क्या आता है। तू तो अगर घर से बाहर भी जायेगा न, तो भालू के चंगुल में फँस जायेगा। और अगर भालू से किसी तरह से बच भी गया तो भेड़िया तुझे खा जायेगा।"

मगर उस बेवकूफ को तो रट लगी हुई थी — "मैं तो जा रहा हूँ, मैं तो जा रहा हूँ।" उसकी माँ उसकी इस रट से परेशान हो गयी तो उसने यही ठीक समझा कि उसको भी उस उड़ने वाले जहाज की खोज में भेज दिया जाये ताकि घर में शान्ति रहे।

सो उसने उसके रास्ते में खाने के लिये सूखी काली रोटी के कुछ टुकड़े तथा एक थर्मस में पानी रख दिया। वह उसको बाहर तक छोड़ने भी नहीं आयी, उसने उसको घर के दरवाजे से ही विदा कर दिया।

और जैसे ही वह घर से बाहर निकला वह घर का दरवाजा बन्द कर के घर के जरूरी कामों में लग गयी।

उस बेवकूफ ने वह थैला अपने कन्धे पर लटकाया और गाता हुआ चल दिया। उसे इस बात का बहुत दुख था कि उसे उसके भाइयों की तरह उसकी मॉ ने अच्छा खाना, मकई की शराब आदि खाने पीने को नहीं दिया पर फिर भी वह अपनी धुन में गाता हुआ मस्त हो कर चलता चला जा रहा था।

उसको काली रोटी के मुकाबले में सफेद रोल ज़्यादा अच्छे लगते थे मगर यात्रा में सबसे जरूरी बात पास में कुछ खाने की थी न कि इस बात की कि उसके पास क्या खाना था और सो वह उसके पास था ही।

हरी हरी घास, नीले नीले आसमान को देख कर वह खुशी से गाना गाता हुआ आगे बढता जा रहा था।

कुछ दूर जाने पर उसे एक बहुत बूढ़ा आदमी दिखायी दिया। उसकी कमर झुकी हुई थी, लम्बी सफेद दाढ़ी थी और ऑखें अन्दर को धॅसी हुई थीं।

उस बूढे आदमी ने कहा — "नमस्ते बेटा।"

उस बेवकूफ ने भी जवाब दिया — "नमस्ते दादा जी।"

बूढ़े ने पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो बेटा?"

बेवकूफ ने जवाब दिया — "अरे, क्या आपने सुना नहीं कि ज़ार ने सारे राज्य में यह ढिंढोरा पिटवाया है कि जो कोई उसको

उड़ने वाला पानी का जहाज ला कर देगा उसी से वह अपनी बेटी की शादी करेगा?"

"तो क्या तुम वह जहाज बनाना जानते हो?"

"नहीं, मैं तो नहीं जानता।"

"तब फिर तुम क्या करोगे?"

"भगवान ही मालिक है।"

"अगर ऐसी बात है तो आओ यहाँ बैठते हैं। साथ साथ आराम करेंगे और कुछ खायेंगे भी। मैं बहुत थक गया हूँ। लाओ क्या है तुम्हारे थैले में? वही खाते हैं।"

"दादा जी, मेरे पास जो कुछ है वह सब तो मुझे आपको दिखाते हुए भी शर्म आ रही है। हालाँकि वह मेरे लिये तो ठीक है परन्तु किसी मेहमान के लिये ठीक नहीं है।"

"कोई बात नहीं बेटा, हमको भगवान पर भरोसा रखना चाहिये और जो कुछ वह दे उसे ही प्रेम सहित ले लेना चाहिये।"

बेवकूफ ने सकुचाते हुए अपना थैला खोला तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। सूखी काली रोटी के टुकड़ों की जगह उस थैले में ताजा पकाया गया माँस और मुलायम सफेद रोल महक रहे थे।

वही उसने उस बूढ़े आदमी को खाने के लिये दिये तो वह बूढ़ा बोला — "देखा, भगवान अपने सीधे सादे आदमियों को कितना

प्यार करता है। हालॉकि तुम्हारी मॉ तुमको इतना प्यार नहीं करती, उसने तुम्हारा हिस्सा तुमको नहीं दिया पर भगवान सबको प्यार करता है। लाओ, अब मकई की शराब का स्वाद चखा जाये।"

जब उस बेवकूफ ने अपना थर्मस खोला तो उसमें तो पानी की जगह मकई की बढ़िया शराब निकली। सो उस बेवकूफ और बूढ़े ने उस जंगल में खूब मंगल किया। एक दो गाने भी साथ साथ गाये।

फिर बूढ़ा बोला — "अब तुम मेरी बात ध्यान से सुनो। जंगल में दूर तक चले जाओ और जो तुम्हें सबसे बड़ा पेड़ खड़ा दिखायी दे वहॉ उसके सामने तीन बार क्रास का निशान बनाना।

फिर अपनी छोटी कुल्हाड़ी से उसे छूना और फिर पीछे की तरफ गिर जाना। और तब तक पैर पसार कर वहीं लेटे रहना जब तक कोई आ कर तुम्हें जगाये नहीं।

तब तुम देखोगे कि तुम्हारे लिये उड़ने वाला पानी का जहाज़ तैयार है। उसमें बैठ जाना और फिर जहॉ चाहो वहॉ उड़ना। लेकिन एक बात का ख्याल रखना, रास्ते में जो भी तुम्हें मिले तुम उन सबको अपने जहाज़ में जरूर बिठा लेना।"

उस बेवकूफ ने बूढ़े को धन्यवाद दिया और उससे विदा ले कर जंगल की तरफ चल दिया।

आगे जा कर जो उसे सबसे बड़ा पेड़ सबसे पहले दिखायी दिया उसके सामने उसने तीन बार क्रास का निशान बनाया, अपनी छोटी

कुल्हाड़ी से उसे छुआ और फिर पीछे की तरफ पैर पसार कर लेट गया। ऑखें बन्द कर लीं और सो गया।

कुछ ही देर में उसको लगा कि कोई उसको उसकी बॉह हिला कर जगा रहा है। वह जाग गया।

उसकी कुल्हाड़ी उसके पास ही पड़ी थी। वह बड़ा पेड़ तो गायब हो गया था और उसकी जगह एक छोटा सा जहाज़ उड़ने के लिये तैयार खड़ा था।

उस बेवकूफ ने कुछ भी नहीं सोचा विचारा और तुरन्त ही जहाज़ में कूद कर बैठ गया। उसके बैठते ही जहाज़ उठा और पेड़ों के ऊपर से हो कर उड़ चला।

यह जहाज़ उसी तरह आसमान में भी उड़ रहा था जैसे पानी में चलता है। उड़ते उड़ते उसने देखा कि एक आदमी ने पानी से भीगी जमीन पर कान लगा रखा है। वह बेवकूफ ऊपर से ही चिल्लाया — "नमस्ते चाचा जी, आप यहॉ क्या कर रहे हैं?"

उस आदमी ने जवाब दिया — "नमस्ते बेटा, दुनियॉ में क्या हो रहा है मैं वही सब सुनने की कोशिश कर रहा हूॅ।"

"आप मेरे जहाज़ में आ जाइये।"

वह आदमी भी उड़ने वाले पानी के जहाज़ में बैठना चाहता था सो वह भी उस जहाज़ में बैठ गया और वे दोनों गाना गाते गाते उड़ चले।

कुछ दूर आगे जाने पर उन्होंने देखा कि एक आदमी एक टॉग से चल रहा है और दूसरी टॉग उसने अपने गले से बॉधी हुई है।

बेवकूफ ने उससे पूछा — "नमस्ते बड़े चाचा जी, आप इस तरह एक टॉग पर कूद कूद कर क्यों चल रहे हैं?"

उस आदमी ने कहा — "बेटा, अगर मैं अपनी दूसरी टॉग खोल दूँ तो मैं सारी दुनियॉ को एक छलॉग में नाप सकता हूँ।"

बेवकूफ ने कहा — "आइये, तो मेरे साथ मेरे जहाज़ में आ जाइये।" वह आदमी उस जहाज़ में बैठ गया और वे सब फिर गाना गाते हुए चले।

कुछ दूर आगे जाने पर उन्होंने देखा कि एक आदमी बन्दूक लिये खड़ा है और निशाना साध रहा है। लेकिन वह निशाना किस तरफ लगा रहा है यह उनको पता नहीं चल सका।

वह बेवकूफ ऊपर से ही चिल्लाया — "नमस्ते मामा जी, आप किस पर निशाना लगा रहे हैं? मुझे तो आस पास कोई चिड़िया भी नजर नहीं आ रही।"

वह आदमी बोला — "अगर कोई ऐसी चिड़िया ऐसी हुई जो तुम्हें नजर आ गयी तो मैं उसे अपनी बन्दूक का निशाना नहीं बनाऊँगा। जो चिड़िया या जानवर यहॉ से हजारों मील दूर है वही मेरी बन्दूक का निशाना है।"

बेवकूफ ने कहा — "आइये, तो आप हमारे साथ आ जाइये।" वह आदमी भी सबके साथ उस जहाज़ में बैठ गया और वे सब लोग फिर ज़ोर ज़ोर से गाना गाते हुए उड़ चले।

आगे बढ़ने पर उन्होंने देखा कि एक आदमी एक बोरा भरी डबल रोटी लिये उदास बैठा है। जहाज़ को नीचे उतारते हुए उस बेवकूफ ने कहा — "नमस्ते बड़े मामा जी, आप इतने उदास क्यों हैं?"

"मुझे खाने के लिये डबल रोटी चाहिये बहुत भूख लगी है।"

"मगर आपकी पीठ पर तो यह पूरे का पूरा बोरा बँधा है डबल रोटी का।"

"इतना थोड़ा सा? यह तो मेरा एक कौर भी नहीं है।"

"अच्छा तो आइये मेरे साथ मेरे जहाज़ में बैठ जाइये।" वह आदमी भी उस जहाज़ में बैठ गया और उन सबके गाने की आवाज और तेज़ हो गयी।

कुछ दूर आगे जाने पर उन्होंने देखा कि एक आदमी एक झील के चारों ओर चक्कर काट रहा है। बेवकूफ बोला — "नमस्ते ताऊ जी, आप क्या खोज रहे हैं?"

"बेटा, मुझे पीने के लिये कुछ चाहिये पर मुझे पानी नहीं दिखायी दे रहा है।"

"मगर आपके सामने तो पानी की झील भरी पड़ी है, आप उसमें से पानी पी लीजिये।"

"क्या? यह पानी? यह पानी तो मेरा गला तर करने के लिये भी काफी नहीं है।"

"अच्छा तो फिर आप मेरे साथ बैठ कर मेरे इस जहाज़ की सैर करें।" और वह आदमी भी उस जहाज़ में बैठ गया और फिर वे सब कोरस गाते हुए आगे बढ़े।

उड़ते उड़ते उन्होंने देखा कि एक आदमी जंगल की तरफ लकड़ी का गट्ठर लिये जा रहा है। उस बेवकूफ ने उससे पूछा — "बड़े ताऊ जी नमस्ते, आप यह लकड़ी जंगल की तरफ क्यों लिये जा रहे हैं?"

वह आदमी बोला — "बेटा, यह कोई साधारण लकड़ी नहीं है। अगर इस लकड़ी को चारों तरफ बिखेर दिया जाये तो लकड़ी के हर टुकड़े से एक भारी सेना निकल आयेगी।"

बेवकूफ बोला — "तो फिर आइये और हमारे जहाज़ में सैर कीजिये।" और वह आदमी भी जहाज़ में चढ़ गया और जहाज़ फिर से गाते हुए लोगों को ले कर उड़ चला।

कुछ दूर आगे जाने पर उन्होंने देखा कि एक आदमी एक बोरे में भूसा भर कर लिये जा रहा है। बेवकूफ ने जहाज़ पास लाते हुए

उस आदमी से पूछा — "नमस्ते छोटे चाचा जी, आप यह भूसा कहाँ ले जा रहे हैं?"

"गाँव को।"

"क्यों क्या गाँव में भूसे की कमी हो गयी है?"

"नहीं नहीं, यह कोई मामूली भूसा नहीं है। यह करामाती भूसा है। अगर इस भूसे को किसी गर्म जगह पर फैला दिया जाये तो उसी समय वहाँ ठंडा होना शुरू हो जायेगा और बर्फ जमनी शुरू हो जायेगी।"

"आहा, तो आइये, मेरे जहाज़ में आपके लिये बहुत जगह है।"

"बड़ी कृपा होगी।" कह कर वह भी जहाज़ में बैठ गया और वह जहाज़ गाती हुई टोली को ले कर फिर आगे बढ़ चला।

उसके बाद उन्हें और कोई नहीं मिला और वे धीरे धीरे ज़ार के महल के ऊपर पहुँच गये। वहाँ पहुँच कर वे नीचे उतरे और अपने जहाज़ का लंगर डाल दिया।

ज़ार उस समय शाम का खाना खा रहा था। उसने उनके गानों की तेज़ आवाजें सुनी तो खिड़की से झाँका तो देखता क्या है कि एक उड़ने वाला पानी का जहाज़ उसके महल के आँगन में खड़ा है।

उसने अपने नौकरों को बुलाया और यह जानने के लिये बाहर भेजा कि यह उड़ने वाला जहाज़ कौन ले कर आया है और कौन ये खुशी के गाने गा रहा है।

नौकर ऑगन में आ कर जहाज को आश्चर्य से देखने लगा। उसने यह भी देखा कि जहाज़ में बैठे सभी आदमी बहुत ज़ोर ज़ोर से हॅसी मजाक कर रहे थे।

पर वे सभी साधारण किसान और मजदूर जैसे लग रहे थे सो वह बिना कोई सवाल पूछे ही वापस लौट गया और ज़ार को बताया कि उस जहाज़ में कोई भी भला आदमी नहीं था बल्कि सभी किसान और मजदूर जैसे लोग थे।

ज़ार को यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था कि वह अपनी एकलौती बेटी को किसी गॅवार किसान के पल्ले बॉध दे सो वह सोच में पड़ गया कि किस तरह इन लोगों से छुटकारा पाया जाये।

उसने सोचा कि "मैं इनको कोई ऐसा काम दे देता हूॅ जो ये कर ही न सकें और अपनी जान की भीख मॉगते नजर आयें। इस तरह मैं अपनी बेटी की शादी इन गॅवारों से करने से भी बच जाऊॅगा और मुझे यह जहाज़ भी मुफ्त में मिल जायेगा।"

ऐसा सोच कर ज़ार ने अपने एक नौकर को बुलाया और उस बेवकूफ के पास जा कर उससे यह कहने को कहा कि "ज़ार के खाना खत्म होने से पहले उस बेवकूफ को अमृत जल लाना होगा।"

अब जिस समय ज़ार यह सब अपने नौकर से कह रहा था वह तेज़ सुनने वाला यह सब सुन रहा था।

जब उसने यह बात उस बेवकूफ को बतायी तो बेवकूफ तो यह सुन कर परेशान हो गया "अब मैं क्या करूँ? एक साल तो क्या मैं तो सौ साल में भी वह जल नहीं खोज सकता और ज़ार को वह जल अपना खाना खत्म होने से पहले चाहिये।"

पर तेज़ चलने वाला बोला — "तुम चिन्ता न करो मेरे दोस्त। मैं करूँगा तुम्हारा यह काम।"

इतने में ज़ार का नौकर आया और उसने उस बेवकूफ को ज़ार का हुक्म सुनाया। बेवकूफ लापरवाही से बोला — "ज़ार को बोलो उसका यह काम हो जायेगा।"

तेज़ चलने वाले ने अपना दूसरा पैर अपनी गर्दन से खोला और एक अँगड़ाई ले कर भाग लिया। वह तो तुरन्त ही आँखों से ओझल हो गया।

हमारे कहने में देर हो सकती है, पर उसके अमृत जल को लाने में देर नहीं हो सकती। पलक झपकते ही उसने शीशी में अमृत जल भरा और सोचने लगा "मैं तो तुरन्त ही पहुँच जाऊँगा।" सो वह पास में लगी एक हवाई चक्की के पास बैठ गया और सो गया।

शाही खाना खत्म होने वाला था और उस तेज़ चलने वाले का कोई पता नहीं था। उस समय जहाज में न कोई गाना गा रहा था

और न कोई हॅस रहा था। सभी अमृत जल का इन्तजार कर रहे थे।

इतने में तेज़ सुनने वाला जहाज़ से कूदा और गीली जमीन पर कान रख कर सुनता हुआ बोला — "यह भी क्या आदमी है। जनाब हवाई चक्की के नीचे सो रहे हैं । मुझे उसके खर्राटों की आवाज साफ सुनायी पड़ रही है। उसके सिर के पास एक मक्खी भी भिनभिनाती भी सुनायी पड़ रही है।"

निशानेबाज बोला — "मैं आया।" और वह तुरन्त ही जहाज़ के ऊपर खड़ा हो कर अपनी बन्दूक सॅभालने लगा। उसने मक्खी का निशाना साधा और बन्दूक चला दी।

गोली की आवाज से वह तेज़ चलने वाला जाग गया और पल भर में जहाज़ पर हाजिर हो गया। बेवकूफ ने उससे अमृत जल ले कर ज़ार के नौकर को दे दिया और नौकर उसे ज़ार के पास ले गया। ज़ार अभी खाना खा ही रहा था इसलिये उसकी यह इच्छा पूरी हुई।

ज़ार ने सोचा "ये किस तरह के किसान हैं? अब इनको कोई दूसरा मुश्किल काम दिया जाये।"

उसने अपने नौकर को फिर बुलाया और जहाज़ के कप्तान को यह कहने को कहा — "अगर तुम इतने ही चतुर हो तो तुम्हारी भूख भी ज़्यादा होनी चाहिये। तुमको और तुम्हारे दोस्तों को एक

बार में बानवे भुने बैल तथा चालीस भट्टियों में जितनी डबल रोटी बनायी जा सकती हैं वह सब खानी होंगी।"

तेज़ सुनने वाले ने यह सन्देश सुना और बेवकूफ को बताया तो वह बेवकूफ अपना सिर पकड़ कर बैठ गया और बोला — "मैं तो एक बार में पूरी एक डबल रोटी भी नहीं खा सकता तो चालीस भट्टियों में बनी डबल रोटी कैसे खा पाऊँगा?"

ज़्यादा खाने वाले ने कहा — "तुम केवल अपनी ही भूख की ही चिन्ता क्यों कर रहे हो? मेरी भूख की चिन्ता क्यों नहीं कर रहे? तुम केवल अपनी ही चिन्ता न करो भाई, वह सब तो मेरे लिये एक कौर के समान है। आज खाने की जगह पर कुछ नाश्ता ही सही। यह भी मेरे लिये खुशी की बात होगी।"

इतने मे ज़ार का नौकर आया और उसने ज़ार का सन्देश सुनाया। बेवकूफ ने कहा — "ठीक है, ठीक है, तुरन्त खाना लाओ फिर सोचेंगे कि हमें क्या करना है।"

कुछ ही देर में बानवे भुने साबुत बैल और चालीस भट्टियों में पकी डबल रोटी वहाँ हाजिर थी। सभी साथियों के बैठते बैठते ही उस ज़्यादा खाना खाने वाले ने काफी खाना खत्म कर दिया।

ज़्यादा खाना खाने वाले ने उस नौकर से कहा — "यह क्या भाई? अगर तुमने खाना खिलाने के बारे में सोचा ही था तो ठीक से खाना खिलाना चाहिये था। यह तो मेरा नाश्ता भी नहीं हुआ। चलो हम भी याद रखेंगे कि ज़ार के महल में हमें खाना नहीं मिला।"

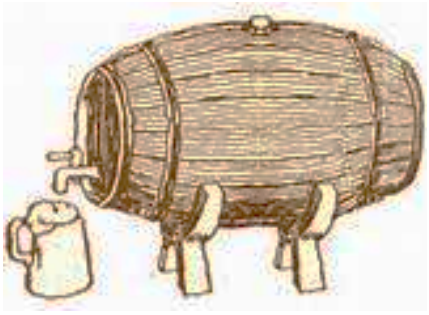

ज़ार को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतना सारा खाना उन सभी ने कैसे खा लिया पर वह भी अभी हार मानने वाला नहीं था। फिर उसने उस बेवकूफ को चालीस बैरल[26] जिनमें हर एक बैरल में चालीस बालटी शराब थी, पीने के लिये कहा।

तेज़ सुनने वाले ने फिर यह सन्देश बेवकूफ को बताया तो वह बोला — "मैंने तो आज तक अपने जीवन में एक बार में एक बालटी से ज़्यादा शराब कभी नहीं पी फिर ये चालीस बैरल... ।"

ज़्यादा पीने वाले ने कहा — "दुखी न हो मेरे दोस्त, यह काम तुम मेरे ऊपर छोड़ दो। आज मुझे थोड़ी सी शराब पीने का मौका मिला है तो उसे क्यों गॅवाया जाये।"

ज़ार के नौकरों ने चालीस बैरल ला कर रखे और हर बैरल में चालीस बालटी शराब थी। वह प्यासा आदमी चालीस घूँटों में ही वह सारी शराब पी गया और बोला — "बस, इतनी सी शराब? मैं तो अभी भी प्यासा हूँ।"

यह सब देख कर ज़ार ने अपने नौकरों से कहा — "अब उस बेवकूफ से कहो कि वह शादी के लिये तैयार हो जाये। उसको स्नान घर दिखा दो ताकि वह ताजा हो सके। मगर उस कमरे में जो

[26] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

लोहे का टब है उसे खूब गर्म लाल कर दो ताकि जैसे ही वह उसमें वह पैर रखे वह मर जाये।"

तेज सुनने वाले ने ज़ार का यह सन्देश ज्यों का त्यों उस बेवकूफ को सुना दिया। बेवकूफ के पैरों तले तो जमीन ही खिसक गयी और सारा हॅसी मजाक रुक गया।

भूसे वाला आदमी बोला — "क्या हुआ दोस्त, चिन्ता क्यों करते हो, मैं किस दिन काम आऊॅगा?"

राजा के नौकरों ने नहाने के टब को खूब गरम किया और सोचा कि अब तो यह बेवकूफ मर ही जायेगा मगर उस भूसे वाले आदमी ने बेवकूफ के अन्दर जाते ही अपना कुछ भूसा उस टब के अन्दर फैला दिया और कुछ पलों में ही उस टब का उबलता पानी बर्फ जैसा ठंडा हो गया।

वे लोग भट्टी के ऊपर ही आराम से कॉपते हुए लेटे रहे। सुबह को नौकरों ने दरवाजा खोला तो उन्होंने देखा कि बेवकूफ और उस का साथी भट्टी पर लेटे गाना गा रहे हैं।

उन्होंने जा कर जब यह ज़ार को बताया तो ज़ार बहुत गुस्सा हुआ और मुट्ठियॉ भींच कर बोला — "ओह, मैं तो इस आदमी से तंग आ गया। लगता है मैं इससे नहीं जीत सकता।

आखिरकार मुझे अपनी बेटी इसको देनी ही होगी पर उससे जा कर बोलो कि अगर वह मेरी बेटी से शादी करना ही चाहता है तो

उसे कम से कम मेरी बेटी की रक्षा का साधन, यानी सेना, तो रखनी ही चाहिये न।"

तेज़ सुनने वाले ने ज़ार की यह बात उस बेवकूफ को बतायी तो बेवकूफ बोला — "दोस्तों, कई बार आप सबकी सहायता से मैंने अपनी मुश्किलों को दूर किया है पर अबकी बार लगता है कि मैं कुछ नहीं कर पाऊँगा।"

लकड़ी के गट्ठर वाला आदमी बोला — "अरे तुम कैसे आदमी हो? मुझे तो तुम भूल ही गये। इस छोटे से काम के लिये मैं हाजिर हूँ।"

ज़ार के नौकरों ने जब बेवकूफ को ज़ार का हुकुम सुनाया तो वह बेवकूफ बोला — "अच्छा, अच्छा, सुन लिया। मगर अपने राजा से कहना कि अगर अबकी बार उसने अपनी बेटी की शादी मुझसे नहीं की तो मैं उसकी बेटी को जबरदस्ती उठा कर ले जाऊँगा।"

नौकर ने उस बेवकूफ का यह सन्देश भी जा कर ज़ार को दे दिया और इधर जहाज पर सभी हँसने और गाने लगे। रात को जब सब सो गये तो वह आदमी अपनी लकड़ियाँ ले कर इधर उधर गया और उनको फैला दिया।

जैसे ही वह कोई लकड़ी रखता वैसे ही वहाँ एक बड़ी सेना प्रगट हो जाती। कोई भी उन सेनाओं के सिपाहियों को नहीं गिन

सकता था। उन सेनाओं में पैदल तथा कई प्रकार के बन्दूक वाले सिपाही सुन्दर नयी चमकीली पोशाक पहने खड़े थे।

सुबह को जब ज़ार उठा और उसने खिड़की से झॉका तो अपने आपको एक बहुत बड़ी सेना से घिरा हुआ पाया। वह बेवकूफ उस सेना का सेनापति था जो अपने जहाज़ में बैठा हॅसी मजाक कर रहा था।

अबकी बार ज़ार के डरने की बारी थी। तुरन्त ही उसने अपने नौकरों के हाथ बेवकूफ को हीरे जवाहरात तथा वेशकीमती पोशाकों की भेंट भेजी और अपनी बेटी की शादी के लिये उसको निमन्त्रित किया।

उस बेवकूफ ने भी अपने सबसे सुन्दर कपड़े पहने और राजकुमारी के सामने राजकुमार बन कर आ खड़ा हुआ।

राजकुमारी तो उसको देखते ही मोहित हो गयी। ज़ार और उसकी पत्नी दोनों ही उस बेवकूफ को अपना दामाद बना कर खुश थे। उसी दिन उन दोनों की शादी हो गयी और वे दोनों खुशी से रहने लगे।

12 पॉच रोग[27]

साथ चलने की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि इटली के मैगली[28] नाम के गॉव में एक पति पत्नी रहते थे जिनके एक बेटा था। और उनका यह बेटा एक शैतान[29] जैसा था।

उसके दिमाग में हमेशा ही कुछ न कुछ चलता रहता या फिर वह कुछ न कुछ बेचता रहता। वह रात रात भर बाहर रहता था। इस वजह से उसके बूढ़े माता पिता उसकी तरफ से बहुत परेशान रहते थे।

एक शाम उसकी मॉ ने उसके पिता से कहा — "यह लड़का तो लगता है कि हमारे लिये मौत बन कर आया है। चाहे हमें कितना भी दुख क्यों न उठाना पड़े पर हमें इसे घर से बाहर भेज देना चाहिये।"

अगले दिन पिता ने अपने बेटे को देने के लिये एक घोड़ा खरीदा और सौ डकैट[30] कहीं से उधार लिये। फिर जब उसका बेटा दोपहर को घर आया तो वह उससे बोला — "बेटा इस तरह से

---

[27] The Five Scapegraces – a folktale from Italy from its Terra d'Otranto area.
Adapted from the book: "Italian Folktales" by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980.
[28] Maglie – a town in Italy
[29] Translated for he word "Devil"
[30] Ducat was the then currency in Italy

बहुत दिनों तक काम नहीं चल सकता। यह लो तुम सौ डकैट लो और यह घोड़ा लो और जा कर अपना कुछ कमाओ खाओ।"

बेटे ने पैसे लिये और घोड़ा लिया और बोला — "मैं नैपिल्स[31] जा रहा हूँ पिता जी।" कह कर वह घोड़े पर सवार हुआ और नैपिल्स की तरफ चल दिया।

रास्ते में एक खेत के बीच में उसको एक आदमी दिखायी दिया जो अपने चारों हाथ पैरों पर चल रहा था। मैगली वाले नौजवान ने उसको पुकारा — "ओ सुन्दर नौजवान। तुम वहाँ क्या कर रहे हो? और तुम्हारा नाम क्या है?"

वह नौजवान बोला — "मेरा नाम बिजली है।"

"और तुम्हारा पारिवारिक नाम[32]?"

बिजली बोला — "धारा[33]।"

मैंगली वाले नौजवान ने पूछा — "ऐसा नाम क्यों?"

"क्योंकि खरगोशों का पीछा करना मेरी खासियत है।"

बस उसने अभी यह बोला ही था कि उसको एक खरगोश दिखायी दे गया। वह उस खरगोश के पीछे दौड़ पड़ा और उसको पकड़ लिया।

मैगली वाले नौजवान ने सोचा "यह विचार तो बुरा नहीं है।"

[31] Naples is big historical city and sea port of Italy just south to Rome, Italy's capital, on its West coast

[32] Surname or Family name

[33] Streak – a thin long strip of water or anything else

फिर वह उससे बोला — "मुझे एक विचार आया है। तुम मेरे साथ नैपिल्स चलो। मेरे पास सौ डकैट हैं।"

बिजली भीख माँगना नहीं चाहता था सो वह उसके साथ चलने के लिये राजी हो गया और वे दोनों नैपिल्स की तरफ चल दिये – एक घोड़े पर और एक पैदल।

जल्दी ही उनको एक और आदमी मिल गया। मैगली वाले नौजवान ने पूछा — "तुम्हारा नाम क्या है?"

वह नौजवान बोला — "अन्धा सीधा[34]।"

मैगली वाला नौजवान बोला — "अरे भाई यह किस तरीके का नाम है?"

उसके मुँह से ये शब्द निकले भी नहीं थे कि उसको सामने से आता हुआ कौओं का एक झुंड दिखायी दे गया। उस झुंड के पीछे एक बाज़[35] था।

मैगली वाले नौजवान ने उससे कहा — "देखते हैं अब तुम क्या करते हो?"

वह आदमी बोला — "मैं अपने तीर को इस बाज़ की बॉयी ऑख पर रख कर उसको नीचे गिरा दूँगा।"

यह कह कर उसने अपनी कमान खींची और उस बाज़ की बॉयी ऑख में तीर मार कर उसको नीचे गिरा दिया।

---

[34] Translated for the words "Blind Straight"

[35] Translated for the word "Falcon". See its picture above

मैगली वाला नौजवान बोला — "अब क्या कहते हो दोस्त, हमारे साथ चल रहे हो?"

"यकीनन मैं आप दोनों के साथ चल रहा हूँ।"

सो अब वे तीनों नैपिल्स की तरफ चल दिये। नौजवान अपने घोड़े पर और दोनों साथी उसके पीछे पीछे।

चलते चलते वे ब्रिन्दीसी[36] पहुँचे तो वहाँ के बन्दरगाह पर सौ नौकर[37] काम कर रहे थे पर उनमें से एक नौकर उनको कुछ खास दिखायी दे रहा था। उसने एक खच्चर से भी ज़्यादा का बोझ उठा रखा था और फिर भी ऐसा लग रहा था जैसे उसको वह बोझ कुछ बोझ ही न लग रहा हो।

तीनों के मुँह से निकला "अरे उसको देखो ज़रा। वह कितनी आसानी से इतना सारा बोझ लिये जा रहा है। चलो चल कर उसका नाम पूछते हैं।"

उन्होंने उस आदमी से उसका नाम पूछा तो वह बोला — "मेरा नाम है मजबूत पीठ"[38]।

ज़रा सोचो तो फिर क्या हुआ होगा? मैगली वाले नौजवान ने उससे भी कहा — "तुम हमारे साथ चलो न। मेरे पास सौ डकैट हैं जो हम सबके खाने के लिये काफी हैं। जब मेरे पैसे खत्म हो जायेंगे तब तुम सब मुझे खाना खिला देना।"

---

[36] Brindisi – a place in Southern Italy

[37] Translated for the word "Stevedores"

[38] Strongback

इस बात से वहॉ जो मजदूर काम कर रहे थे वे बड़े दुखी हुए क्योंकि वह मजबूत पीठ उनका बहुत काम करता था। जब वह जाने लगा तो वे सब रो कर कहने लगे — "हम तुम्हें चार पैन्स ज़्यादा मजदूरी देंगे अगर तुम हमारे पास रुक जाओ तो।"

पर वह मजबूत पीठ बोला — "आराम बड़ी चीज़ है, खाना पीना और घूमना। वाह क्या मजा है। मैं अब यहॉ नहीं रुक सकता मैं इन लोगों के साथ जा रहा हूॅ।"

सो अब चारों अपनी यात्रा पर चल दिये। नौजवान अपने घोड़े पर और उसके तीन साथी उसके पीछे पीछे।

आगे जा कर वे एक सराय के पास रुके। वहॉ उन्होंने खूब खाना खाया और जितनी पी सकते थे उतनी शराब पी। खा पी कर वे सब वहॉ से फिर चल दिये।

वहॉ से वे अभी केवल पॉच छह मील ही चले होंगे कि उनको एक और नौजवान दिखायी दिया जो धरती से कान लगा कर कुछ सुनने की कोशिश कर रहा था।

मैगली वाले नौजवान ने पूछा — "तुम यहॉ नीचे क्या कर रहे हो? और तुम्हारा नाम क्या है?"

उस नौजवान ने जवाब दिया — "मेरा नाम है "खरगोश के कान"[39]। मैं यहीं बैठे बैठे दुनियॉ की सारी बातें सुन सकता हूॅ चाहे

[39] Translated for the words "Rabbit-ears"

वह कोई भी क्यों न हो। राजा हो या मन्त्री, या फिर प्रेमी हो या कोई साधारण आदमी।"

मैगली वाला नौजवान बोला — "देखते हैं कि तुम सच बोल रहे या नहीं। तुम अपने कान लगा कर सुनो कि मैगली में इस खम्भे के सामने वाले मकान में रहने वाले लोग क्या बात कर रहे हैं।"

वह बोला — "एक मिनट।"

उसने अपना कान जमीन पर लगाया और बोला — "वहाँ पर दो बूढ़े बुढ़िया आग के पास बैठे आपस में बात कर रहे हैं।

बुढ़िया बूढ़े से कह रही है — "भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि तुम्हारे ऊपर कर्जा तो हो गया पर यह भी अच्छा हुआ जो हमने उस शैतान को घर से बाहर निकाल दिया। अब कम से कम घर में शान्ति तो है।"

मैगली वाले नौजवान ने कहा — "मैं समझ सकता हूँ कि तुम झूठ नहीं बोल रहे हो। मेरे माता पिता के अलावा और कोई ऐसी बात कर ही नहीं सकता।"

सो उन्होंने उसको भी साथ लिया और आगे चल दिये। वे आगे चले तो उनको कई राज[40] काम करते दिखायी दिये। वे सब सुबह की धूप में पसीने से नहाये हुए थे।

"तुम लोग इस समय इतनी गर्मी में कैसे काम कर रहे हो?"

[40] Translated for the word "Mason" – who build buildings

"हम कैसे काम कर रहे हैं? हमारे पास एक आदमी है जो हमको ठंडक देता रहता है।"

उन सबने देखा कि एक नौजवान अपनी सॉस से सबकी हवा कर के उन लोगों को ठंडक पहुँचा रहा था – फ़ फ़ फ़।

उन्होंने उससे पूछा — "तुम्हारा नाम क्या है?"

वह बोला — "मेरा नाम पफ़रैलो[41] है और मैं सारी हवाओं की नकल कर सकता हूँ – फ़ू ऊ ऊ ऊ यह उत्तरी हवा है। पू ऊ ऊ ऊ यह दक्षिण पश्चिमी हवा है। फ़ फ़ फ़ फ़ यह पूर्वी हवा है।" और फिर उसने अपनी पूरी ताकत से उन सबको कई हवाओं की नकल कर के दिखायी।

फिर बोला — "अगर आप चाहें तो मैं हरीकेन[42] भी पैदा कर सकता हूँ।" कह कर उसने अपनी सॉस फेंकी और पेड़ टूट टूट कर जमीन पर गिरने लगे जैसे देवताओं को बहुत गुस्सा आ गया हो।

उन चारों ने कहा — "बस करो बस करो। हमारी समझ में आ गया कि तुम क्या कर सकते हो।"

मैगली वाले नौजवान ने कहा — "दोस्त मेरे पास सौ डकैट हैं। क्या तुम मेरे साथ आना पसन्द करोगे?"

पफ़रैलो बोला — "हॉ हॉ चलो चलते हैं।" और वह भी उन सबके साथ चल दिया।

---

[41] Puffrello

[42] Hurricane – a kind of wind storm

अब उनका एक अच्छा खासा झुंड बन गया था और वे सब एक दूसरे को कहानियॉ सुनाते चले जा रहे थे।

अब वे नैपिल्स आ गये थे। वहॉ आ कर उन्होंने पहला काम तो यह किया कि उन सबने खूब खाया और खूब पिया। फिर वे एक नाई के पास गये और वहॉ जा कर अपने बाल कटाये और हजामत बनवायी। उसके बाद अच्छे से कपड़े खरीदे और उनको पहन कर तैयार हो कर घूमने निकले।

तीन दिनों के अन्दर अन्दर ही मैगली वाले नौजवान के सौ डकैट खत्म होने को आ गये तो उसने अपने साथ आये लोगों से कहा — "मुझे नैपिल्स की हवा नहीं भा रही है। चलो यहॉ से पेरिस[43] चलते हैं। वह जगह ज़्यादा अच्छी है।"

काफी दूर चलने के बाद वे सब पैरिस आ गये। वहॉ के शहर के दरवाजे पर लिखा था — "जो भी आदमी राजा की बेटी को पैदल की दौड़ में हरायेगा वही उसका पति होगा पर जो कोई उससे हार जायेगा वह मारा जायेगा।"

मैगली वाला नौजवान बोला — "बिजली, यहॉ अब तुम्हारा काम है।"

सो मैगली वाला नौजवान शाही महल तक आया और वहॉ के चौकीदार से बोला — "जनाब मैं अपनी खुशी के लिये ज़रा इधर उधर घूम रहा था कि आज सुबह मैं आपके शहर में घुसा तो आपके

[43] Paris is the capital of France country

शहर के दरवाजे पर राजा की बेटी की यह चुनौती लिखी देखी तो मैं यहाँ अपनी किस्मत आजमाने चला आया।"

चौकीदार बोला — "बेटे, यह मेरे और तुम्हारे बीच की बात है किसी से कहना नहीं। यह राजकुमारी एक पागल लड़की है। वह शादी करना ही नहीं चाहती इसलिये हर समय वह ऐसी चालें सोचती रहती है जिससे कि वह शादी न कर सके और सारे लोग मरते चले जायें। मुझे बहुत दुख होगा अगर तुम भी उन मरने वालों में शामिल हो गये तो।"

मैगली वाला नौजवान बोला — "यह सब बेकार की बात है। तुम जाओ और उसको बोलो कि वह कोई भी दिन निश्चित कर ले और मुझे बता दे। मेरे लिये कोई भी दिन ठीक है।"

चौकीदार बेचारा क्या करता। उसकी सलाह बेकार गयी। मजबूरन वह अन्दर गया और राजा की बेटी से बात कर के उसने मैगली वाला नौजवान को बताया कि रविवार का दिन ठीक रहेगा।

मैगली वाला नौजवान यह सब बताने के लिये अपने साथी के पास चला गया। तय किया हुआ दिन भी आ पहुँचा। उन लोगों ने एक सराय में जा कर बहुत बढ़िया खाना खाया और फिर प्लान बनाया कि आगे क्या करना है।

बिजली बोला — "तुम्हें मालूम है न कि तुम्हें क्या करना है। तुमको मुझे शनिवार की शाम को उसके पास एक नोट ले कर भेजना

है कि तुमको बुखार आ गया है और तुम भाग नहीं सकते इसलिये अपने बदले में तुम मुझको भेज रहे हो।

अगर मैं जीत जाता हूँ तो वह तुमसे शादी कर लेगी और अगर मैं हार गया तो फिर तुम मरने के लिये जाओगे।"

और यही उन लोगों ने किया भी। मैगली वाले नौजवान ने शनिवार की शाम को राजकुमारी के पास यह चिट्ठी भेज दी कि उसको बुखार आ गया है सो अपनी जगह वह एक दूसरे आदमी को दौड़ने के लिये भेज रहा है।

रविवार की सुबह सड़क के दोनों तरफ लोगों की कतार लगी हुई थी और सड़क तेज़ भागने के लिये शीशे की तरह से चमक रही थी।

जब दौड़ का समय आया तो राजा की बेटी बैलैरीना[44] की पोशाक पहन कर आयी और बिजली के साथ आ कर खड़ी हो गयी। हर आदमी ऑखें फाड़ फाड़ कर देख रहा था।

बिगुल बजा और राजकुमारी खरगोश की तरह से वहॉ से भाग चली। पर बस चार कूद के बाद ही बिजली ने राजकुमारी को सौ फीट पीछे छोड़ दिया।

खूब तालियॉ पिटीं। लोग ज़ोर ज़ोर से चिल्लाये — "ओ इटली के नौजवान, तुम्हारी जय हो। आखिर तुमको अपना साथी मिल ही

[44] Ballerina – is a type of dance and a special costume is worn while dancing. See its picture above.

गया, ओ पागल लड़की। यह आदमी इसको जरूर दबा कर रखेगा।"

अपनी हार देख कर राजकुमारी दुखी हो कर घर चली गयी।

घर पहुँची तो उसका पिता बोला — "इस तरह का मुकाबला रखने का तुम्हारा ही विचार था और अब गुस्सा होने की भी तुम्हारी ही बारी है। जो भी तुमको अच्छा लगे।"

अब हम राजा की बेटी को तो महल में ही छोड़ते हैं और बिजली के पास चलते हैं। दौड़ में जीत कर वह सराय में वापस आ गया और अपने साथियों के साथ जीत की खुशी की दावत खाने बैठ गया।

दावत खाते खाते "खरगोश का कान" बोला — "श श श।" और अपना कान जमीन से लगा दिया जैसा कि वह हमेशा किया करता था।

कुछ सुन कर बोला — "हम लोग बड़ी मुसीबत में हैं। राजकुमारी कह रही है कि वह तुमको किसी भी कीमत पर अपना पति मानने के लिये तैयार नहीं है। वह कहती है कि ऐसी दौड़ का कोई मानी नहीं होता जिसमें उसके होने वाले पति की बजाय कोई और दौड़े।

वह अब किसी जादूगरनी से इस बारे में बात कर रही है कि तुमको कैसे हराया जाये। वह जादूगरनी उसको बता रही है कि वह एक कीमती पत्थर यानी किसी रत्न पर जादू करेगी और उसको एक

अँगूठी में लगवा कर वह अँगूठी वह तुमको पहनवा देगी ताकि तुम हार जाओ।

राजकुमारी दौड़ से पहले वह अँगूठी तुमको देगी और एक बार तुमने उसको पहन लिया तो तुम उसको अपनी उँगली से निकाल भी नहीं पाओगे और उसकी वजह से तुम्हारी टाँगें भी भागने से मना कर देंगी।"

"अन्धा सीधा" बोला — "अब काम करने की बारी मेरी है। दौड़ शुरू होने से पहले जब तुम अँगूठी पहनने के लिये अपना हाथ आगे बढ़ाओगे तब मैं एक तीर अँगूठी की तरफ फेंकूँगा इससे वह कीमती पत्थर अँगूठी में से निकल कर दूर जा पड़ेगा तब हम देखेंगे कि हमारी राजकुमारी जी क्या करती हैं।"

यह सुन कर सब चिल्लाये — "बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया।" और इस बारे में उन सबकी चिन्ता खत्म हो गयी।

अगली सुबह मैगली वाले नौजवान के पास राजकुमारी का एक सन्देश आया जिसमें उसको उसके दोस्त के दौड़ने की कला पर बधाई दी गयी थी।

इसके साथ ही उसमें यह भी कहा गया था कि अगर उसको कोई ऐतराज न हो तो अगले रविवार को वह फिर से दौड़ में हिस्सा ले। मैगली वाले नौजवान को भला क्या ऐतराज हो सकता था सो उसने अगले रविवार की दौड़ के लिये हाँ कर दी।

अगले रविवार को सड़क पर और भी ज़्यादा भीड़ थी। निश्चित समय पर राजकुमारी अपनी नंगी टॉगों के साथ आयी जैसे कलाबाजी करने वालों की या नट लोगों की होती हैं।

वह बिजली की तरफ बढ़ी और उसको अॅगूठी दी और बोली — "ओ नौजवान, क्योंकि तुम ही एक अकेले ऐसे आदमी हो जिसने दौड़ में मुझे हराया था इसलिये मैं यह अगूठी तुम्हारे दोस्त की दुलहिन के नाते तुमको देती हूॅ।"

यह कह कर उसने वह अॅगूठी बिजली को पहना दी।

अॅगूठी पहनते ही बिजली की टॉगें कॉपने लगीं और वह बैठने लगा। अन्धा सीधा जो उसकी तरफ देख रहा था चिल्लाया "अपना हाथ आगे कर।"

धीरे धीरे बड़ी मुश्किल से उसने अपना हाथ आगे किया और उसी पल दौड़ शुरू होने का बिगुल बजा तो राजकुमारी ने तो भागना शुरू कर दिया।

अन्धे सीधे ने अपनी कमान खींची, तीर चलाया और अॅगूठी बिजली की उॅगली से निकल कर दूर जा गिरी और बिजली फिर से चार कूद में ही राजकुमारी के पास पहुॅच गया। पॉचवीं कूद में उससे आगे निकल गया और राजकुमारी फिर से हार गयी।

पर असली तमाशा तो लोगों में था। लोग बहुत खुश थे। वे अपने अपने टोप हवा में उछाल रहे थे। राजकुमारी की हार देख

कर सब बहुत खुश थे। उन्होंने बिजली को ऊपर उठा लिया और सारे शहर में अपने कंधे पर उठाये घूमे।

जब ये पाँचों रोग अकेले थे तो वे एक दूसरे को गले लगा रहे थे। एक दूसरे को शाबाशी दे रहे थे।

मैगली वाले नौजवान ने कहा — "अब हम अमीर हो गये हैं। कल को मैं राजा बन जाऊँगा और मैं चाहूँगा कि हर आदमी मेरे शाही महल के बाहर रहे। बताओ कि तुम लोग क्या बनना चाहते हो?"

एक बोला — "मुझे तो शाही महल का रखवाला[45] बनना है।"

दूसरा बोला — "मुझे मिनिस्टर बनना है।"

तीसरा बोला — "और मैं तो जनरल बनूँगा।"

पर "खरगोश का कान" बोला कि वे लोग थोड़ा चुप हो जायें क्योंकि वह कुछ सुन रहा था।

जमीन पर कान लगा कर सुनने की कोशिश करते हुए वह बोला — "अभी एक सन्देश आने वाला है। वे लोग महल में बात कर रहे हैं कि वे लोग मैगली वाले नौजवान को बहुत सारा पैसा केवल इसलिये देने वाले हैं ताकि वह राजकुमारी से शादी न करे।"

"मजबूत पीठ" बोला — "अब काम करने की मेरी बारी है। मैं उनको उनका सब कुछ देने पर मजबूर कर दूँगा।"

[45] Translated for the word "Chamberlain". Chamberlain takes care of the palace.

अगली सुबह मैगली वाला नौजवान तैयार हुआ और महल गया। राज सिंहासन के कमरे के बाहर वह एक सलाहकार से मिला और उससे महल में जाने की इजाज़त माँगी।

तो वह सलाहकार बोला — "बेटे, क्या तुम अपने से किसी बड़े की सलाह मानना पसन्द करोगे? अगर तुम उस पागल लड़की से शादी करोगे तो तुम एक शैतान को अपने घर ले जाने के अलावा और कुछ नहीं करोगे।

इससे तो अच्छा यह है कि उस पागल लड़की की बजाय तुम उनसे कुछ अच्छा खासा पैसा माँग लो और शान्ति से अपने घर जाओ।"

मैगली वाला नौजवान बोला — "आपकी सलाह के लिये बहुत बहुत धन्यवाद पर मुझे इस तरह पैसा लेना पसन्द नहीं है। पर आप की सलाह के अनुसार फिर भी हम ऐसा करते हैं कि मैं अपने एक दोस्त को आपके पास भेजता हूँ।

आप उसको अपने साथ ले जाइये और उसकी पीठ पर जितना वह उठा सकता है पैसा लाद कर भेज दीजिये।"

सो वह मजबूत पीठ वहाँ आ गया। उसकी पीठ पर सौ–सौ पौंड के बोझा उठाने वाले पचास थैले रखे हुए थे।

वह आ कर बोला — "मेरे दोस्त ने मुझे आपके पास इसलिये भेजा है ताकि आप मेरी पीठ पर सामान लाद दें।"

दरबार में बैठा हर आदमी एक दूसरे की तरफ देखने लगा कि कहीं यह आदमी पागल तो नहीं हो गया है।

मजबूत पीठ बोला — "नहीं नहीं मैं पागल नहीं हूँ मैं सच कह रहा हूँ। जल्दी करो मुझे और काम भी हैं।"

सो वे शाही खजाने में घुसे और एक थैला भरना शुरू किया तो बीस आदमी उसको उठाने के लिये लगे। अन्त में जब उन्होंने उसको उठा कर मजबूत पीठ की पीठ पर रखा और पूछा "इतना काफी है?"

वह बोला — "यह क्या तुम मजाक कर रहे हो? मेरे लिये तो यह एक छोटे से तिनके के बराबर है।"

सो वे थैले भरते चले गये और सोने के ढेर के ढेर खाली होते चले गये। फिर उन्होंने चाँदी के ढेर थैलों में भरना शुरू किया तो उनकी चाँदी भी खाली होती चली गयी।

फिर उन्होंने ताँबा लिया तो वह भी खत्म हो गया। इन सबके बाद उन्होंने मोमबत्तियाँ, प्लेटें, प्यालियाँ भर कर उसकी पीठ पर लादे पर उसकी मजबूत पीठ फिर भी नही झुकी।

इसके बाद उन्होंने पूछा — "अब तुमको कैसा लग रहा है?"

मजबूत पीठ कुछ नाराज सा हो कर बोला — "क्या मैं इस बात की शर्त लगा लूँ कि मैं तुम्हारा महल भी उठा कर ले जा सकता हूँ?"

उसके साथियों ने जब उसको आते देखा तो उनको लगा कि उनके सामने तो एक पहाड़ चला आ रहा है, और वह भी अपने आप दो छोटे छोटे पैरों पर। उसको साथ ले कर वे आगे बढ़े।

वे वहॉ से अभी केवल पॉच छह मील ही गये होंगे कि "खरगोश के कान" ने सुना — "दोस्तों, अभी हमारी मुसीबतें खत्म नहीं हुई हैं। महल में लोग सलाह मशवरा कर रहे हैं। क्या तुम लोग सोच सकते हो कि वे लोग क्या कह रहे होंगे?

वे कह रहे हैं — "मैजेस्टी, क्या यह मुमकिन है कि चार बेकार के लोग हमारा सब कुछ ले कर चले जायें? हमारे पास तो अब डबल रोटी खरीदने तक के लिये भी पैसे नहीं है। वे हमारा सब कुछ ले गये हैं।"

राजा बोला — "जल्दी करो, हमको अपने कुछ सिपाही भेजने चाहिये जो उनके टुकड़े टुकड़े कर के उड़ा दें नहीं तो हमको आज शाम का खाना भी नहीं मिलेगा।"

मैगली वाला नौजवान बोला — "अगर ऐसा है तो हमारा काम तो खत्म हो गया। हमने सारी मुश्किलें तो पार कर लीं पर अब हम क्या करें?"

पफ़ैरैला बोला — "तुम बेवकूफ हो। तुम मुझको तो भूल ही गये कि मैं तो तूफान भी ला सकता हूँ और उस तूफान से हर एक

को नीचे गिरा सकता हूँ। तुम लोग चलो और फिर देखो कि मैं क्या कर सकता हूँ।"

उधर राजा ने अपने सिपाही भेजे तो उनके घोड़ों की टापों की आवाजें सुनायी पड़ने लगीं। जैसे ही वे पास आ गये पफ़रैला ने अपनी सॉस छोड़ना शुरू किया – फ़ फ़ फ़। फिर और तेज फ़ फ़ फ़। इससे धूल के बादल उठे और उसकी वजह से उन सिपाहियों को दिखायी देना बन्द हो गया।

और फिर उसने अपनी पूरी ताकत से अपनी सॉस फेंक दी – फ़ फ़ फ़ फ़ फ़। इससे सारे सिपाही अपने अपने घोड़ों से गिर पड़े, पेड़ जड़ से उखड़ कर गिर पड़े, दीवारें गिर पड़ीं और उन सिपाहियों की बन्दूकें हवा में उड़ गयीं।

जब पफ़रैला को निश्चय हो गया कि उसने राजा के सारे सिपाहियों को तहस नहस कर दिया तो वह अपने साथियों के साथ जा कर मिल गया और बोला — "फ्रांस के राजा को इस सबकी उम्मीद नहीं होगी। अब वह इन सब घटनाओं को ज़िन्दगी भर याद रखेगा और अपने बेटों को बतायेगा।"

फिर वे सब मैगली वाले नौजवान के पास आये। सारे पैसों को आपस में बॉटा। सबको चार चार मिलियन डकैट मिले। इसके बाद जब भी वे एक साथ होते वे हमेशा कहते फ्रांस के राजा को क्या नीचा दिखाया और उसकी पागल लड़की को भी।

13 मोमोटारो या खूबानी का बच्चा[46]

चलो हम भी चलें की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के जापान देश की बहुत ही लोकप्रिय बहुत ही मशहूर और बहुत ही पुरानी लोक कथा है। वहॉ का हर बच्चा इसे अपने स्कूल में पढ़ता है।

बहुत दिनों पुरानी बात है कि जापान देश में एक जगह एक बूढ़ा और एक बुढ़िया रहते थे। एक दिन वह बूढ़ा पहाड़ों पर घास काटने गया और वह बुढ़िया नदी पर कपड़े धोने गयी।

जब वह बुढ़िया कपड़े धो रही थी कि नदी में उछलती कूदती एक बहुत बड़ी सी कोई चीज़ आयी। जब बुढ़िया ने उसे देखा तो वह बहुत खुश हुई। उसने पास पड़ा एक बॉस का टुकड़ा उठाया और उससे उसे अपने पास खींच लिया।

जब उसने उसे उठाया तो देखा कि वह तो एक बहुत बड़ी खूबानी[47] थी। उसने जल्दी जल्दी अपने कपड़े धोये और वह खूबानी ले कर घर लौटी ताकि वह अपने बूढ़े को उसे खाने के लिये दे सके।

घर आ कर जब उसने वह खूबानी काटी तो उसमें से एक बच्चा निकला। उस बच्चे को देख कर वे दोनों बूढ़े लोग बहुत खुश

[46] Momotaro or Little Peachling - a folktale from Japan, Asia. Translated from the Web Site : http://www.worldoftales.com/Asian_folktales/Asian_Folktale_18.html

[47] Peach or Persian Apple. See its picture above.

हुए। उन्हों उसका नाम मोमोटारो रख दिया। मोमोटारो मानी छोटी खूबानी क्योंकि वह बड़ी खूबानी में से निकला था।

दोनों बूढ़े लोग उसको बहुत प्यार से पालने लगे। बड़ा हो कर वह बहुत ताकतवर, मजबूत और साहसी आदमी बना। उसको देख कर बूढ़े माता पिता को उससे बहुत सी उम्मीदें लग गयीं सो उन्होंने उसकी पढ़ाई पर और ज़्यादा ध्यान देना शुरू कर दिया।

जब मोमोटारो ने देखा कि वह तो अब बहुत ताकतवर हो गया है तो उसने शैतानों के टापू से उनका बहुत सारा खजाना घर लाने की सोची। उसने अपने बूढ़े माता पिता से सलाह ली तो उन्होंने भी उसकी ताकत को देखते हुए खुशी खुशी उसको वहॉ जाने की इजाज़त दे दी।

मोमोटारो ने अपनी मॉ से अपने लिये कुछ खाना बनाने को कहा तो उसकी मॉ ने उसके लिये बाजरे के पकौड़े बना दिये। वह पकौड़े उसने अपने थैले में रखे और शैतानों के टापू पर जाने के लिये उसने और भी बहुत सारी तैयारियॉ की और चल दिया।

रास्ते में सबसे पहले उसे एक कुत्ता मिला। उसने मोमोटारो से पूछा — "मोमोटारो, यह तुम्हारी कमर की पेटी में क्या बॅधा है?"

मोमोटारो बोला — "इसमें मेरे पास बाजरे के बहुत ही बढ़िया जापानी पकौड़े है।"

कुत्ता बोला — "थोड़ा से मुझे भी दो तो मैं तुम्हारे साथ चलूॅगा।" मोमोटारो ने कुछ पकौड़े अपने थैले में से निकाल कर उस

कुत्ते को दिये और वह खाना खा कर कुत्ता मोमोटारो के साथ चल दिया।

आगे चल कर उनको एक बन्दर मिला। मोमोटारो ने उसे भी बाजरे के कुछ पकौड़े दिये और वह भी उन दोनों के साथ चल दिया। इस तरह अब तीनों शैतानों के टापू पर चल दिये।

आगे चल कर उनको एक चिड़िया मिली। उसने भी मोमोटारो से पूछा कि वह अपनी कमर में क्या बॉध कर ले जा रहा था।

जब मोमोटारो ने उसे बताया कि वह बाजरे से बने बहुत ही बढ़िया जापानी पकौड़े ले जा रहा था तो उसने भी मोमोटारो से थोड़ा से पकौड़े मॉगे और उसके साथ चलने की प्रार्थना की।

सो मोमोटारो ने उसको भी थोड़ा सा खाना दिया और अपने साथ ले लिया। अब चारों शैतानों के टापू की तरफ बढ़े।

बहुत जल्दी ही चारों शैतानों के टापू पर आ पहुॅचे और सब उस टापू का एक साथ दरवाजा तोड़ते हुए टापू में घुसे। मगर सबसे आगे मोमोटारो था और उसके पीछे उसके तीनों साथी।

शैतानों के टापू पर उन्हें बहुत सारे शैतान मिले और वे सब मोमोटारो से लड़ने के लिये तैयार थे फिर भी मोमोटारो बिना लड़ाई के ही टापू में अन्दर घुसता चला गया।

आखीर में वह शैतानों के सरदार अकान्डोजी[48] के पास आ पहुॅचा। वहॉ मोमोटारो की लड़ाई अकान्डोजी से शुरू हुई।

[48] Akandoji – bame of the Chief of devils

अकान्डोजी ने मोमोटारो को एक लोहे के डंडे से मारा पर मोमोटारो पहले से ही तैयार था। वह कुछ नीचे झुक कर अकान्डोजी का वार बचा गया।

आखीर में दोनों ने एक दूसरे को पकड़ लिया और मोमोटारो ने बड़ी आसानी से उस नीचे गिरा कर रस्सी से बॉध दिया ताकि वह हिल भी न सके। और यह सब उसने बिना किसी चालबाजी के किया।

इसके बाद तो अकान्डोजी ने मोमोटारो से कह ही दिया कि वह उसको अपना सारा खजाना दे देगा।

"ठीक है।" कह कर उसने उसका सारा खजाना बटोरा, उसको ठीक से लगाया और सबको ले कर घर चल दिया।

उसने अपने तीनों साथियों को धन्यवाद दिया कि उन्हीं की वजह से वह शैतानों के टापू के सरदार को जीत सका। उसने उन सबको खजाने में से कुछ हिस्सा भी दिया।

मोमोटारो के बूढ़े माता पिता ने मोमोटारो को जब खजाने के साथ आते देखा तो वे खुशी से फूले न समाये। मोमोटारो ने भी उनको अपनी साहसी यात्रा की कहानियॉ सुनायीं। इसके बाद तो वह अपने गॉव में सबसे ज़्यादा अमीर और इज़्ज़तदार आदमी बन गया और वे सब सुख से रहने लगे।

14 एक बिल्ले और एक मुर्गी की कहानी[49]

चलो हम भी तुम्हारे साथ चलें की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के भारत देश में कही सुनी जाती है।

एक बार एक जंगली बिल्ले ने एक मुर्गी से दोस्ती करने का बहाना किया पर सच तो यह था कि वह उस मुर्गी को खाना चाहता था।

एक दिन बिल्ले ने मुर्गी से पूछा — "ओ मुर्गी, आज रात तुम कहॉ सोओगी?"

मुर्गी बोली — "आज मैं अपनी टोकरी में सोऊँगी।"

मगर जब रात हुई तो वह मुर्गी अपनी टोकरी में नहीं सोयी बल्कि वह वहॉ सोयी जहॉ बगीचे में पानी देने की पाइप रखी जाती है। जब रात हुई तो बिल्ला मुर्गी को उसकी टोकरी में ढूँढने आया पर वह तो वहॉ थी नहीं सो वह घर वापस लौट गया।

अगले दिन बिल्ला जब मुर्गी से मिला तो उसने उससे पूछा — "कल रात तुम कहॉ सोयीं थीं?"

मुर्गी बोली — "मैं तो कल रात जहॉ पानी देने वाला पाइप रखा रहता है वहॉ सोयी थी।"

[49] Story of a Cat and a Hen – a folktale of Lakher Tribe of North-Eastern part of India, Asia. Taken from the book "Discovery of North-East India: Geography, History, Culture. Vol 8. Edited by Suresh Kant Sharma, Usha Sharma. Delhi, Mittal Books.

बिल्ले ने फिर पूछा — "तुम आज रात कहाँ सोओगी?"

मुर्गी बोली — "मैं आज रात जहाँ पानी देने वाले पाइप रखे रहते हैं वहीं सोऊँगी क्योंकि वहाँ मैंने अपने अंडे दिये हुए हैं।"

पर उस रात वह वहाँ नहीं सोयी, वह तो अपनी टोकरी में सोयी।

बिल्ला रात को जहाँ पानी देने वाले पाइप रखे रहते हैं वहाँ मुर्गी को ढूँढने गया लेकिन उसको मुर्गी वहाँ नहीं मिली। मुर्गी को वहाँ न पा कर बिल्ले को बहुत गुस्सा आया और गुस्से में भरा हुआ वह घर वापस लौट गया।

अगले दिन बिल्ला जब मुर्गी से मिला तो उसने उससे फिर पूछा — "कल रात तुम कहाँ सोयीं थीं?"

मुर्गी बोली — "अपनी टोकरी में।"

बिल्ले ने पूछा — "और तुम आज रात कहाँ सोओगी?"

मुर्गी बोली वहीं अपनी टोकरी में।"

मगर जब शाम हुई तो मुर्गी पानी देने वाले पाइप रखने वाली जगह पर सोयी।

इस बार जब रात हुई तो बिल्ला मुर्गी को उसकी टोकरी में ढूँढने गया पर मुर्गी उसको वहाँ नहीं मिली सो वह उसको पाइप रखने वाली जगह पर देखने गया। वहाँ वह उसको मिल गयी। उसने उसको मार दिया और उसके शरीर को ले कर चल दिया।

उस मुर्गी ने दस अंडे दिये थे। जब उन अंडों ने देखा कि बिल्ले ने उनकी मॉ को मार दिया है तो उन्होंने बिल्ले से अपनी मॉ की मौत का बदला लेने का विचार किया।

सो उन्होंने अपनी पानी देने वाले पाइप की जगह छोड़ दी और कहीं दूसरी जगह चल दिये। जब वे सब उस जगह छोड़ कर जा रहे थे तो केवल एक अंडे को छोड़ कर सारे अंडे टूट गये। यह बचा हुआ अंडा उन सब अंडों में सबसे छोटा अंडा था सो यह अंडा अकेला ही चल पड़ा।

जब वह जा रहा था तो उसको रास्ते में ठंड की आत्मा[50] मिली। उसने अंडे से पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो?"

अंडे ने सोच रखा था कि वह बिल्ले से अपनी मॉ की हत्या का अकेला ही बदला लेगा सो जब वह ठंड की आत्मा से सड़क पर मिला और उस आत्मा ने उससे पूछा कि वह कहॉ जा रहा था तो वह बोला — "मैं किसी खास जगह नहीं जा रहा।"

पर ठंड की आत्मा बोली — "मुझे मालूम है कि तुम बिल्ले से अपनी मॉ की हत्या का बदला लेने जा रहे हो। चलो मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूॅ हो सकता है तुम्हें मेरी जरूरत पड़ जाये।" सो वह ठंड की आत्मा उसके साथ हो ली।

[50] Translated for the words "Spirit of the Cold"

थोड़ी दूर जाने पर उनको एक चूहा पकड़ने वाला चूहेदान मिल गया। उसने भी ठंड की आत्मा और अंडे से पूछा कि वे लोग कहाँ जा रहे थे।

अंडा तो कुछ नहीं बोला पर ठंड की आत्मा ने उसको सब कुछ बता दिया। यह सुन कर चूहेदान बोला — "मैं भी आप लोगों के साथ चलता हूँ शायद मैं भी आप लोगों के कुछ काम आ जाऊँ।"

सो वह भी उन लोगों के साथ हो लिया।

कुछ दूर आगे जा कर उनको एक मूसल मिला, फिर एक लाल चींटा मिला, फिर भूसा मिला और फिर एक मकड़ा मिला। सबने अंडे के साथ जाने का विचार किया और वे सभी उसके साथ हो लिये।

जल्दी ही वे सब उस जंगली बिल्ले के घर पहुँच गये जिसने उस अंडे की माँ मुर्गी को खाया था। परन्तु बिल्ला उस समय वहाँ नहीं था वह अपने खेत पर गया हुआ था।

सो ठंड की आत्मा बिल्ले के खेत पर पहुँची। वहाँ जा कर उसने देखा कि बिल्ला तो अपने खेत की जंगली घास उखाड़ रहा था। ठंड की आत्मा ने अपनी ठंड का असर फैलाया तो वह बिल्ला ठंड से काँपने लगा।

जब ठंड की आत्मा बिल्ले को ठंड से कँपकँपा रही थी तब चूहेदान आदि सभी बिल्ले के घर में थे। मूसल बिल्ले के खेत के दरवाजे के ऊपर था। अंडा अन्दर आग के पास चला गया। लाल

चींटा और भूसा भी अंडे के पास ही फर्श पर बैठ गये। मकड़ा दीवार पर चढ़ गया।

बिल्ले को जब ठंड लगने लगी तो वह घर वापस आ गया। उसको बहुत ज़्यादा ठंड लग रही थी सो वह आग के पास आ कर बैठ गया।

उधर आग की गर्मी से अंडा टूट गया। उस अंडे के टूटने की आवाज इतनी ज़्यादा हुई कि बिल्ला डर गया और भूसे के ऊपर जा पड़ा। तभी लाल चींटे ने जो वहीं बैठा था बिल्ले को काट लिया।

बिल्ला वहॉ से फिर हटा और जहॉ लाल चींटे ने उसे काटा था उस जगह को दीवार से रगड़ने लगा। लेकिन वहॉ तो वह मकड़ा बैठा था सो उसने उसको काट लिया।

बिल्ले को लगा कि जरूर कहीं कुछ गड़बड़ है।

अब बिल्ले ने घर छोड़ कर जाने का फैसला किया पर जैसे ही वह घर से बाहर निकला मूसल उसके सिर पर गिर पड़ा। बिल्ले को चोट तो बहुत आयी पर फिर भी इन सबसे बचने के लिये वह घर के नीचे की ओर चल पड़ा।

वहॉ चूहादान बैठा हुआ था। जैसे ही बिल्ला उसके पास से निकला चूहेदान ने उसको इतनी ज़ोर से पकड़ा कि वह तो मर ही गया।

इस प्रकार अंडे ने बिल्ले से अपनी मॉ की हत्या का बदला लिया।

15 बेवकूफ बन्दर और केकड़ा[51]

चलो हम भी चलें की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के जापान देश में कही सुनी जाने वाली।

बहुत समय पुरानी बात है कि जापान की किसी दूर जगह में रेत के एक ढेर के किनारे एक केकड़ा[52] रहता था।

एक दिन एक बन्दर वहॉ से आलूबुखारे[53] का एक बीज लिये हुए गुजरा। उसने देखा कि एक केकड़ा अपने घर के पास धूप में बैठा चावल खा रहा है।

बन्दर ने सोचा कि यह कोई ज़्यादा मजेदार खाना होगा सो उसने केकड़े से खाने के लिये वह चावल मॉगा। बन्दर ने केकड़े से यह भी कहा कि वह उस चावल के बदले में अपना आलूबुखारे का बीज उसको दे देगा।

केकड़ा राजी हो गया। उसने अपना चावल बन्दर को दे दिया और उससे उसका आलूबुखारे का बीज ले लिया।

अब कंकड़े ने सोचा कि उस आलूबुखारे के बीज को बो दिया जाये। सो उसने वह बीज बो दिया और कुछ ही दिनों में उस बीज में से एक छोटा सा पौधा ऊपर निकल आया।

---

[51] The Foolish Monkey and the Crab – a folktale from Japan, Asia.

[52] Translated for the word “Crab”

[53] Translated for the word “Plum”. See its picture above.

केकड़ा उस पौधे की बड़ी देखभाल करता। उसको रोज पानी देता। उसको जंगली जानवरों से बचाता। जल्दी ही वह पौधा बड़ा हो गया और उसने फल भी देना शुरू कर दिया।

काफी दिनों बाद बन्दर एक बार फिर केकड़े से मिलने आया। केकड़े के आलूबुखारे के पेड़ को देख कर बन्दर बहुत खुश हुआ और उसके फल तो उसे बहुत ही अच्छे लगे। उसके फल देख कर उसके मुँह में पानी भर आया सो उसने केकड़े से कुछ आलूबुखारे माँगे।

केकड़ा बोला — "एक शर्त पर। मैं बहुत छोटा हूँ और फल तोड़ने के लिये ऊपर तक नहीं जा सकता। तुम ऊपर चढ़ जाओ तो जितने फल तुम पेड़ पर से तोड़ोगे उनमें से आधे तुम्हारे और आधे मेरे।" बन्दर राजी हो गया।

बन्दर तुरन्त ही पेड़ पर चढ़ गया और उस पर से पके पके फल तोड़ने लगा। नीचे खड़ा केकड़ा ऊपर की तरफ देखता रहा कि कब बन्दर फल तोड़ कर नीचे फेंकेगा और कब वह उन मीठे फलों का स्वाद चखेगा।

पर बन्दर बहुत ही चालाक था उसने बहुत सारे फल तोड़ कर अपने कोट की जेब में भर लिये और जो फल बहुत रसीले थे उनको उसने अपने मुँह में ठूँस लिये।

कुछ कच्चे और हरे फल उसने तोड़ कर केकड़े की तरफ फेंक दिये। और वे फल भी उसने इतने ज़ोर से फेंके कि केकड़े बेचारे का तो ऊपर का खोल ही टूट गया।

केकड़े को यह सब देख कर बहुत ही बुरा लगा कि बन्दर ने उसको इस तरह धोखा दिया। उसने अपने आप तो फल खा लिये और उसको कच्चे कच्चे फल तोड़ कर फेंक दिये और वे भी इतने ज़ोर से फेंके कि उस बेचारे का तो ऊपर का खोल ही टूट गया।

वह पहले तो बेचारा लाचार सा देखता रहा फिर उसके दिमाग में एक बात आयी।

वह बन्दर से बोला — "तुम समझते हो कि तुम बहुत होशियार और चालाक हो पर मुझे लगता है कि तुम पेड़ से सिर नीचा कर के नहीं उतर सकते।"

बन्दर ने पहले कभी किसी शर्त को मना नहीं किया था और न ही वह अब यह सब शुरू करना चाहता था सो वह घमंड से बोला — "ओ बेवकूफ केकड़े, तुम आज केवल भूखे ही नहीं रहोगे बल्कि अपनी शर्त भी हार जाओगे।"

कह कर बन्दर ने सिर नीचे करके पेड़ से नीचे उतरना शुरू किया। केकड़ा तो यह चाहता ही था कि बन्दर इस तरह से पेड़ पर से नीचे उतरे।

क्योंकि जैसे ही बन्दर ने उलटे उतरना शुरू किया तो उसकी कोट की जेबों में से सारे फल नीचे गिर पड़े और जमीन पर बिखर गये। केकड़े ने सारे फल समेट लिये और अपने घर में घुस गया।

अबकी बार बन्दर की बारी थी। उसने जब यह देखा कि केंकड़े जैसे बेवकूफ जानवर ने उसे बेवकूफ बना दिया तो उसे बहुत गुस्सा आया।

वह उस रेत के ढेर के पास पहुँचा जहाँ केकड़ा रहता था और उस केकड़े के घर के सामने इस तरह आग जला दी कि उस आग का सारा धुँआ केकड़े के घर के अन्दर जाने लगा।

आखिर केकड़ा खाँसता हुआ अपने घर में से बाहर निकला पर बन्दर अभी भी सन्तुष्ट नहीं था। उसने केकड़े को घूँसे मारे, लात मारी और उसको अधमरा सा छोड़ कर वहाँ से चला गया।

वह केकड़ा अपनी घायल और अधमरी हालत में बहुत देर तक वहीं पड़ा रहा। कमजोरी की वजह से वह बेचारा हिल डुल भी नहीं सका और न ही किसी को पुकार सका।

थोड़ी ही देर में उसने किसी के पैरों की आवाज सुनी। उसने देखा कि तीन यात्री चले आ रहे थे – एक अंडा, एक मधुमक्खी और एक चावल कूटने वाली ओखली[54]।

[54] Translated for the word “Mortar”. See its picture above.

वे उस रेत के ढेर के पास से गुजर रहे थे कि उन्होंने केकड़े को बहुत बुरी हालत में पड़े देखा। उसको देख कर वे सब सकते में आ गये।

उन्होंने दया कर के उसको उठा लिया और उसको उस रेत के ढेर के अन्दर उसके घर में ले गये। वहाँ उन्होंने उसके घावों पर मरहम लगाया और उसको उसके बिस्तर पर लिटा दिया।

बाद में केकड़े ने उनको सारा हाल बताया। उसका हाल सुन कर तीनों यात्री बहुत गुस्सा हुए। यह सब सुन कर उन सबने मिल कर यह सोचना शुरू किया कि उस चालाक बन्दर से कैसे बदला लिया जाये।

केकड़ा अभी ठीक नहीं था सो वह तो आराम कर रहा था तब तक तीनों यात्रियों ने कई प्याले हरी चाय[55] पी। चाय पीते पीते उन्होंने बन्दर से बदला लेने की एक योजना सोच ली।

अगले दिन उन्होंने खूब अच्छी तरह आराम किया और फिर उस घायल केकड़े को उठा कर वे उसे उस किले में ले गये जहाँ वह बन्दर रहता था।

वहाँ जा कर मधुमक्खी खिड़की के ऊपर तक उड़ी और लौट कर आ कर सबको बताया कि उनका दुश्मन घर पर नहीं था। यह उनकी योजना के अनुसार बिल्कुल ठीक था।

[55] Translated for he words “Green Tea” – a popular Chinese drink

वे सब किले के अन्दर घुस गये और छिप कर अपने दुश्मन के आने का इन्तजार करने लगे।

अंडे ने भट्टी की राख में अपना घर बना लिया था और अपने आपको कालिख से पूरी तरह से ढक लिया था जिससे वह बिल्कुल काला हो गया था और किसी को पहचान में नहीं आ सकता था।

मधुमक्खी नहाने वाले कमरे में चली गयी और वहॉ एक अलमारी में छिप कर बन्दर का इन्तजार करने लगी। चावल कूटने वाली ओखली किले के बड़े से लकड़ी के दरवाजे के पीछे छिप गयी। और केकड़ा बन्दर का स्वागत करने के लिये आग के पास बैठ गया।

जब अॅधेरा हो आया तो बन्दर घर वापस लौटा। उसने केटली में पानी भरा और चाय बनाने के लिये भट्टी में आग जलायी।

वह वहीं पास में बैठ गया और केकड़े से बोला — "ओ बेवकूफ केकड़े, तुम सचमुच ही बेवकूफ लगते हो। क्या तुम कोई दूसरी शर्त लगाने यहॉ आये हो? क्या तुम मेरी जीत इतनी जल्दी भूल गये?"

इसी समय आग में बैठा हुआ अंडा फूट गया और उसका सारा पीला हिस्सा बन्दर के मुॅह पर फैल गया। वह उसकी ऑखों में भी चला गया इससे वह करीब करीब अन्धा सा हो गया।

तुरन्त भाग कर वह नहाने वाले कमरे में अपना मुॅह धोने गया तो अलमारी में छिपी मधुमक्खी ने बाहर निकल कर उसकी नाक पर

कई बार काट लिया। मधुमक्खी के काटने से बन्दर को बहुत दर्द हुआ और इस सबसे वह बहुत परेशान हुआ।

वह समझ गया कि वह दुश्मनों से घिर गया है सो वह घर से बाहर निकल भागने के लिये किले के बाहर वाले दरवाजे की तरफ भागा। मधुमक्खी उसको फिर से काटने के लिये उसके पीछे भागी।

जैसे ही वह दरवाजे के पास पहुँचा तो चावल कूटने वाली ओखली दरवाजे के पीछे से निकल आयी और उसके पीछे दौड़ती हुई और उसको पीटती हुई बाहर तक खदेड़ आयी।

बन्दर उसको देख कर डर के मारे वहाँ से दूर भाग गया।

वहाँ ऐसा कोई और नहीं था जो बन्दर की सहायता करता और अगर होता भी तो भी कोई उसकी सहायता करता नहीं क्योंकि सब जानते कि वह कितना नीच और चालाक था। इस तरह वह बन्दर कई सालों तक अपने घर के बाहर ही घूमता रहा।

केकड़े ने अपने साथियों के साथ खूब खुशियाँ मनायीं और उसके बाद वे सब बहुत अच्छे दोस्त बन गये और सब बन्दर वाले किले में एक साथ ही रहने लगे। कुछ समय में केकड़े के सब घाव भर गये और वह बिल्कुल ठीक हो गया।

पास की जगह में एक अमीर केकड़ा रहता था। जब उस अमीर केकड़े ने इस केकड़े की बहादुरी की कहानी सुनी तो उसने अपनी बेटी की शादी उस केकड़े से कर दी। केकड़े की शादी वाले दिन बहुत सारे मीठे मीठे आलूबुखारे मेहमानों को खिलाये गये।

कुछ समय बाद उनके घर एक छोटा केकड़ा पैदा हुआ जो चावल कूटने वाली ओखली के साथ खूब खेलता था। इस तरह वे सब वहाँ बहुत दिनों तक बहुत आनन्द से रहे।

16 दस्ताने[56]

एक बार की बात है कि एक छोटे बच्चे ने अपनी दादी से अपने लिये दस्ताने बनाने के लिये कहा ताकि बर्फ में उसके हाथ गर्म रह सकें।

उसकी दादी बोली — "ठीक है मैं तुम्हारे लिये लाल दस्ताने बना दूँगी।"

बच्चा बोला — "पर दादी मुझे तो सफेद दस्ताने चाहिये।"

दादी बोली — "नहीं नहीं, अगर तुम्हारा सफेद दस्ताना कहीं बर्फ में गिर गया तो फिर तुमको वह कभी मिलेगा भी नहीं। चलो मैं तुम्हारे लिये गुलाबी दस्ताने बना दूँगी।"

बच्चे ने फिर जिद की — "पर दादी मुझे तो सफेद दस्ताने ही चाहिये।"

वह बच्चा उसका पोता था और वह दादी अपने पोते को बहुत प्यार करती थी सो उस ने अपने पोते के लिये बर्फ जैसे सफेद रंग के दस्ताने बना दिये।

उस बच्चे ने अपने वे सफेद दस्ताने पहने और बाहर बर्फ में खेलने चला गया।

---

[56] The Mittens – a folktale from Ukraine, Asia. Translated from http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=180 Retold and written by Mike Lockett. A book by Jan Brett is available through Scholastic. It retells this beautiful folk tale.

वहॉ जा कर उसने बर्फ का एक आदमी[57] बनाया और एक ऐन्जिल[58] बनाया और कुछ बर्फ की गेंदें बनायीं उन पर मारने के लिये।

खेलते खेलते उसे कुछ गर्म लगने लगा तो उसने अपने दस्ताने उतार दिये और उतार कर उनको अपनी जेब में रख लिया। कम से कम उसको तो ऐसा ही लगा कि वे उसकी जेब में रखे गये।

पर उसको पता ही नहीं चला कि उन दो दस्तानों में से एक दस्ताना वहीं नीचे जमीन पर गिर पड़ा। दस्ताने जेब में रख कर वह कहीं और खेलने के लिये भाग गया।

एक छोटे से जानवर बड़े से चूहे[59] को वह दस्ताना मिल गया। वह उसको बहुत गर्म और आरामदेह लगा सो उसने अपनी नाक उसके अन्दर घुसा ली।

फिर उसने अपने कान भी उसके अन्दर घुसा लिये। इसके बाद उसने अपना पूरा सिर अन्दर घुसा लिया। उसको पहन कर वह चारों तरफ घूमने लगा और वह दस्ताना और बड़ा हो गया।

वह दस्ताना अभी भी गर्म और आरामदेह था सो उस बड़े खरगोश को नींद आने लगी कि तभी वहॉ एक खरगोश आया।

खरगोश ने पूछा — "क्या मैं भी इसके अन्दर आ सकता हूँ?"

---

[57] Snowman

[58] Snow Angel

[59] Translated for the word "Mole". Mole is big rat type animal. See its picture above.

वह छोटा खरगोश "ना" कहना चाह रहा था पर बाहर ठंड बहुत थी और ठंड में सबके साथ बॉट कर रहना चाहिये सो उसने कहा — "आ जाओ अगर तुम इसके अन्दर आ सकते हो तो।"

खरगोश ने भी उसके अन्दर पहले अपनी नाक घुसायी□फिर अपने कान घुसाये और फिर अपना पूरा सिर घुसा दिया। वह भी उसको पहन कर चारों तरफ घूम गया और वह दस्ताना और बड़ा हो गया। जल्दी ही वह दोनों जानवरों के लिये काफी बड़ा हो गया।

वह दस्ताना अभी भी गर्म और आरामदेह था सो उसमें उन दोनों जानवरों को नींद आने लगी कि तभी वहॉ एक लोमड़ा आया।

लोमड़े ने पूछा — "क्या मैं भी इसके अन्दर आ सकता हूँ?"

वे दोनों उस लोमड़े को "ना" कहना चाह रहे थे पर बाहर ठंड बहुत थी और ठंड में सबके साथ मिल बॉट कर रहना चाहिये सो उन्होंने उससे कहा — "हॉ हॉ आ जाओ अगर तुम इसके अन्दर आ सकते हो तो।"

लोमड़े ने भी उस दस्ताने के अन्दर पहले अपनी नाक घुसायी□ फिर अपने कान घुसाये और फिर अपना सारा सिर ही उसके अन्दर घुसा दिया।

वह भी उसके अन्दर घुसने के बाद उसमें चारों तरफ को घूमा और वह दस्ताना और भी ज़्यादा बड़ा हो गया। अब वह तीन जानवरों के लिये भी काफी बड़ा था।

वह दस्ताना अभी भी गर्म और आरामदेह था सो उन तीनों जानवरों को नींद आने लगी कि तभी वहॉ एक भालू आया।

भालू ने पूछा — "क्या मैं इसके अन्दर आ सकता हूँ?"

वे तीनों उस भालू को "ना" कहना चाह रहे थे पर बाहर ठंड बहुत थी और ठंड में सबके साथ मिल बॉट कर रहना चाहिये सो उन्होंने उससे कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। आ जाओ अगर तुम इसके अन्दर आ सकते हो तो।"

भालू अपनी भारी सी आवाज में बोला — "ओह हॉ, मैं इसमें आ सकता हूँ।"

भालू ने भी उस दस्ताने के अन्दर पहले अपनी नाक घुसायी फिर अपने कान घुसाये और फिर अपना सारा सिर ही उसके अन्दर घुसा दिया।

वह भी चारों तरफ को घूमा और वह दस्ताना और भी ज्यादा बड़ा और बड़ा और बड़ा हो गया। अब वह चार जानवरों के लिये काफी था।

वह दस्ताना अभी भी गर्म और आरामदेह था सो उन चारों जानवरों को नींद आने लगी वे सब सोने ही वाले थे कि तभी वहॉ एक छोटा चूहा आया।

चूहे ने पूछा — "क्या मैं इसके अन्दर आ सकता हूँ?"

वे चारों उस चूहे को "ना" कहना चाह रहे थे पर बाहर ठंड बहुत थी और ठंड में सबके साथ बॉट कर रहना चाहिये सो उन्होंने

उससे कहा — "आ जाओ अगर तुम इसके अन्दर आ सकते हो तो।"

भालू बोला — "जब मैं इसके अन्दर आ सकता हूँ तो यह चूहा तो अन्दर आ ही सकता है।"

सो चूहे ने भी उस दस्ताने के अन्दर पहले अपनी नाक घुसायी□ फिर अपने कान घुसाये और फिर अपना सारा सिर ही उसके अन्दर घुसा दिया।

वह भी चारों तरफ को घूमा और वह दस्ताना और भी ज्यादा बड़ा और बड़ा और बड़ा हो गया। अब वह पॉच जानवरों के लिये भी काफी बड़ा था।

तभी "पाउ" और वह दस्ताना तो पलट गया और सारे जानवर उसमें से बाहर निकल आये।

भालू तो एक गुफा में जा कर गिरा जहॉ जा कर वह सो गया। लोमड़ा एक पेड़ के पास एक गड्ढे में जा कर गिरा। वह वहॉ जा कर सो गया।

खरगोश कहीं घास में जा कर गिरा था सो वह वहॉ सो गया और वह बड़ा खरगोश बर्फ में जा कर गिरा जहॉ उसको अपने घर का रास्ता मिल गया सो वह अपने घर में जा कर सो गया।

और चूहा□वह बेचारा अभी तक अपना घर ढूँढ रहा है। शायद वह तुम्हारे घर आ जाये। अगर वह आ जाये तो उसे ठंड से बचा लेना।

उधर वह दस्ताना हवा में उड़ा और उड़ कर सीधा बच्चे के पैरों के पास जा पड़ा।

उसने वह दस्ताना उठाया अपने हाथ में पहना और अपने घर भाग गया दादी को यह बताने के लिये कि सफेद दस्ताने पहनने के लिये उस पर विश्वास किया जा सकता था और वह उनको खो नहीं सकता था।

दादी अपने पोते से बहुत खुश थी कि उसका पोता बर्फ में सफेद दस्ताने पहन सकता था और उनको खो नहीं सकता था पर वह बेचारी यह कभी नहीं जान सकी कि उसके पोते का एक दस्ताना दूसरे दस्ताने से इतना ज़्यादा बड़ा क्यों था।

17 बड़ा दिल और तीन इम्तिहान[60]

पुराने समय में एक बार की बात है कि समुद्र के किनारे के पास एक लड़का अपने माता पिता के साथ रहता है। उसके कोई भाई बहिन नहीं था। वह अकेला ही था। उसका पिता एक बहुत बड़ा शिकारी था। वह हमेशा ही अपने शिकार मारने में बहुत ही सफल रहता था।

उसकी मॉ उसके बारे में कहती थी कि एक दिन वह बहुत बड़ा आदमी बनेगा। इसके जन्म से पहले मैंने एक रात सपने में देखा कि मेरा बेटा एक दिन बहुत मशहूर आदमी बनेगा। परियों ने उसके पालने में भेंटें भी रखी थीं।"

पिता ने जब अपनी पत्नी से जब उसकी यह बात सुनी तो बोला — "यह बात तो समय ही बतायेगा कि वह बड़ा आदमी बनेगा या नहीं। अगर वह बड़ा आदमी बना भी तो केवल अपने कामों से ही बनेगा तुम्हारे शान बघारने से नहीं।"

जैसे जैसे बच्चा बड़ा होता गया वह तो असाधारण रूप से सुन्दर होता गया और बहुत ताकतवर भी। उसके पिता ने कहा कि अब यह अपनी किस्मत अपने आप बनाने लायक हो गया है। मैं

[60] Great Heart and the Three Tests. A tale from Canada. Taken from "Canadian Fairy Tales". From : https://fairytalez.com/great-heart-three-tests/

भी इसी उम्र का था जब मैं जंगल में अपनी किस्मत आजमाने गया था।"

पत्नी बोली — "थोड़ा धीरज रखो। अभी इतने उतावले न हो। वह अभी छोटा है। अभी काफी समय है।"

अब ऐसा हुआ कि दूर के किसी गॉव में एक लड़की रहती थी जो बहुत सुन्दर थी। लड़की का पिता एक बड़ा सरदार था पर अब वह ज़िन्दा नहीं था। उसकी मॉ भी मर गयी थी तो अब वह इस दुनियॉ में अकेली थी। मगर उसके माता पिता उसके लिये बहुत सारी जमीन बहुत सारा सामान और बहुत सारे नौकर छोड़ गये थे।

उसकी सुन्दरता और उसके खजाने की वजह से बहुत सारे लड़के उससे शादी करना चाहते थे। पर वह उन सब आने वालों में से किसी से खुश नहीं थी। वह कई तरह से उनकी वफादारी और योग्यता की जॉच करना चाहती थी।

एक बुढ़िया उसकी सुरक्षा के लिये हमेशा ही उसके साथ रहती थी और बहुत सारे नौकर ऐसे लोगों को दूर रखने के लिये उसके साथ रहते थे जो उसको परेशान करें।

बहुत जल्दी ही उस लड़की की सुन्दरता और सम्पत्ति की चर्चा बहुत दूर दूर तक फैल गयी। वह उस गॉव में भी पहुॅची जो समुद्र के किनारे था और जिसमें वह लड़का रहता था।

लड़के के पिता ने सोचा कि "यह मौका तो बहुत अच्छा है जहॉ मेरा बेटा अपनी योग्यता साबित कर सकता है।"

सो उसने अपने बेटे को बुलाया और उससे कहा — "अब समय है जब तुम दुनियॉ में अपनी किस्मत आजमाने जा सकते हो। अपनी योग्यता साबित कर सकते हो। इस समय तुम अपने लिये एक पत्नी भी ढूँढ सकते हो।

अब तुम्हारा वसन्त जा रहा है पतझड़ आने वाला है और जाड़ा भी पास ही है। पास के गॉव में एक सुन्दर अमीर लड़की रहती है। जाओ और उसे अपनी पत्नी बना लाओ।"

उसकी मॉ ने उसको वे भेंटें दीं जो परियों ने उसे तब दी थीं जब वह पालने में ही था। उसने भी अपने माता पिता को विदा कहा और अपनी लम्बी यात्रा पर चल दिया। उसे अपने बारे में कोई शक नहीं था क्योंकि वह बहुत सुन्दर था और अपनी ताकत पर उसे विश्वास था।

जब वह जा रहा था तो उसे एक आदमी मिला जो लाल कपड़े पहने एक पहाड़ी चट्टान के पास बैठा था और अपने पैरों में पत्थर बॉध रहा था।

लड़के को यह देख कर बहुत अजीब लगा तो उसने उस आदमी से पूछा — "आप अपने पैरों में ये पत्थर क्यों बॉध रहे हैं?"

आदमी बोला — "मैं एक शिकारी हूँ। जब मैं अपने शिकार के पीछे भागता हूँ तो बहुत जल्दी ही मैं उससे आगे पहुँच जाता हूँ बजाय इसके कि मैं उसके पीछे रहूँ। तो मैं ये भारी भारी पत्थर

इसलिये अपने पैरों में बॉध रहा हूँ ताकि मैं बहुत तेज़ न भाग सकूँ और उससे आगे न निकल जाऊँ।"

लड़का बोला — "आप तो बहुत ही बढ़िया आदमी हैं। मैं अकेला हूँ। मुझे एक साथी की जरूरत है। चलिये हम एक साथ चलते हैं।"

आदमी बोला — "तुम कौन हो?"

लड़का बोला — "मैं बड़े दिल वाला लड़का हूँ। मैं बहुत बड़े बड़े काम कर सकता हूँ। मैं आपके लिये बहुत सारा पैसा जीत सकता हूँ।" सो लाल कपड़े पहने वाला भागने वाला आदमी उसके साथ चल दिया।

शाम तक वे काफी दूर चल लिये थे। अब वे एक झील के पास आ गये थे। झील के किनारे पर पेड़ लगे थे। वहीं एक बड़ा मोटा आदमी पेट के बल लेटा हुआ था और झील में से बड़ी मुश्किल से पानी पीने की कोशिश कर रहा था।

कुछ देर तक तो वे उसे देखते रहे। उन्होंने देखा कि जैसे जैसे वह पानी पीता जा रहा था झील छोटी होती जा रही थी पर उसकी प्यास नहीं बुझ पा रही थी। इस दृश्य को देख कर दोनों वहॉ मुस्कुराते खड़े रहे।

फिर वे उसके पास गये। लड़के ने पूछा — "आप वहॉ लेटे हुए इतना सारा पानी क्यों पी रहे हैं?"

मोटे आदमी ने कहा — "कई बार ऐसा होता है कि मुझे पीने के लिये काफी पानी नहीं मिलता तो जब भी मुझे काफी पानी मिल जाता है में उसे पी लेता हूँ। आज कई दिन बाद मुझे यह झील मिली है इसलिये मैं आज इसका पानी पी रहा हूँ। इसको खाली करने के बाद भी मेरी प्यास नहीं बुझेगी।"

लड़के ने पूछा — "आप कौन हैं?"

मोटा आदमी बोला — "मैं "बड़ी प्यास का आदमी" हूँ।"

बड़ा दिल बोला — "ठीक है। हम दोनों को एक तीसरा साथी चाहिये। हम दोनों बहुत बड़े बड़े काम कर सकते हैं और आपके लिये बहुत सारे पैसे जीत सकते हैं।"

सो तीनों एक साथ चल दिये। वे अभी बहुत दूर नहीं गये थे कि वे एक मैदान में आ निकले। वहाँ उनको एक आदमी मिला जो अपना सिर उठाये हुए आसमान में नजर गड़ाये घूम रहा था।

वह बहुत तेज़ तेज़ घूम रहा था जिससे ऐसा लग रहा था जैसे वह बिना आँखों के रास्ता ढूँढने की कोशिश कर रहा हो क्योंकि वह लगातार आसमान की तरफ ही घूरे जा रहा था। बड़ा दिल उसकी तरफ बढ़ा कि तभी वह आसमान की तरफ देखने वाला आदमी उसके बराबर से निकल गया।

बड़ा दिल उससे बोला — "आप इतनी ध्यान से क्या देख रहे हैं?"

आदमी बोला — "असल में मैंने एक तीर आसमान में फेंका था मैं उसके नीचे गिरने का इन्तजार कर रहा हूँ। वह इतनी दूर चला गया है कि उसे वापस आने में कुछ समय लगेगा।"

लड़के ने पूछा — "आप कौन हैं?"

आदमी बोला — "मैं दूर निशाना लगाने वाला हूँ।"

लड़का बोला — "हम तीनों को एक चौथे साथी की जरूरत है। हम लोग बहुत बड़े बड़े काम कर सकते हैं और आपके लिये बहुत सारा पैसा जीत सकते हैं। आप आइये हमारे साथ आइये।"

सो अब वे चारों एक साथ चलने लगे। वे लोग कुछ ही दूर गये होंगे कि मैदान के आखीर में एक जंगल का किनारा आ पहुँचा। वहाँ एक आदमी अपने एक हाथ जमीन पर रखे लेटा हुआ था। उसके हाथ का एक किनारा जमीन से लगा हुआ था और उसकी हथेली कान से लगी हुई थी।

जैसे ही उसने चार आदमियों को अपनी तरफ आते देखा तो उसने तुरन्त ही अपने मुँह पर उँगली रख कर उन्हें चुप रहने का इशारा किया।

बड़े दिल ने फुसफुसा कर उससे पूछा — "आप यहाँ जमीन पर लेटे हुए कान जमीन से लगाये हुए क्या कर रहे हैं?"

आदमी बोला — "मैं दूर जंगल के पौधों को बढ़ते हुए सुन रहा हूँ। एक खास सुन्दर सा फूल है जिसे मैं ढूँढ रहा हूँ। मैं उसकी साँसों को सुनने की कोशिश कर रहा हूँ ताकि मैं उसे ले सकूँ।

अहा। वह मुझे सुनायी दे रहा है।" कह कर वह वहॉ से उठ गया।

लड़के ने पूछा — "आप कौन हैं?"

आदमी बोला — "मेरा नाम "ध्यान से सुनने वाला" है।"

बड़ा दिल बोला — "हम चारों को एक साथी की जरूरत है। हम बहुत बड़े बड़े काम कर सकते हैं। हम आपको बहुत सारा पैसा जीत सकते हैं।"

सो चार आदमी और लड़का सब साथ साथ चल दिये – ध्यान से सुनने वाला, लाल भागने वाला, दूर निशाना लगाने वाला और अधिक पानी पीने वाला।

उसके बाद लड़के ने उनको अपना प्लान उस लड़की के बारे में बताया कि किस तरह वह उस अमीर लड़की को जीतने जा रहा था जो पास के गॉव में रहती थी।

उन्होंने उससे वायदा किया कि वे इस काम में उसकी पूरी मदद करेंगे।

जब वे लोग गॉव पहुॅचे तो गॉव वालों ने पॉच अजनबियों को देखा तो वे उनके बारे में जानने के लिये बहुत उत्सुक हो गये। उन्होंने बड़े दिल की सुन्दरता की बहुत प्रशंसा की।

पर जब उन्होंने सुना कि वह उनके सरदार की बेटी की शादी करने की इच्छा से यहॉ आया है उन्होंने बड़ी गम्भीरता से अपना सिर

ना में हिलाया और कहा — "यह कभी नहीं होगा। उसने अपने उम्मीदवारों के लिये बहुत ही कठिन शर्तें लगा रखी हैं।

जो उनको पूरा नहीं कर सकेगा उसे मौत की सजा मिलेगी। बहुत सारे उम्मीदवार यहाँ आये और मौत के घाट उतार दिये गये।"

बड़ा दिल यह सुन कर ज़रा भी परेशान नहीं हुआ। वह अपने चारों साथियों के साथ उसके घर गया। वह स्त्री जो उसकी रक्षा करती थी उसे घर के दरवाजे पर मिली तो उसने उससे अपनी इच्छा बतायी।

स्त्री उसकी सुन्दरता देख कर बहुत ज़ोर से हँसी और बोली — "तुम तो योद्धा कम और लड़की ज़्यादा लगते हो। तुम इन इम्तिहानों को पास नहीं कर सकते।"

पर बड़ा दिल अपनी जिद पर अड़ा रहा और अपनी इच्छा लड़की को बताने की जिद करता रहा।

उस स्त्री ने कहा — "अगर तुम उसके इम्तिहानों में फेल हो गये तो तुम मारे जाओगे।"

बड़ा दिल बोला — "मैं तैयार हूँ।"

स्त्री बोली — "अगर तुम लड़की को जीतना चाहते हो तो सबसे पहले उसकी खिड़की के सामने यह जो बड़ा पत्थर पहले तुम्हें उसे हटाना पड़ेगा। इसकी वजह से उसके घर में सुबह को धूप नहीं आती।"

यह सुन कर बड़ा दिल ने अपनी परियों की भेंटों को बुलाया अपना बड़ा कन्धा उसके नीचे लगाया और उसे उठा कर दूर रख दिया। एक ऊँची आवाज करता हुआ वह लुढ़कता हुआ पहाड़ी के नीचे चला गया और चकनाचूर हो गया। उसी चट्टान के टुकड़े आज भी धरती के ऊपर नजर आते हैं।

चट्टान के टूटते ही सरदार की बेटी के घर में धूप आने लगी। यह देख कर लड़की को पता चल गया कि उसके उम्मीदवार ने उसकी पहली शर्त पूरी कर दी है।

अब दूसरी शर्त की बारी आयी। लड़की के नौकर उनके लिये बहुत सारा खाना और पीने के लिये ले कर आये और उन अजनबियों से कहा कि वे उसे एक बार में ही खत्म कर दें। क्योंकि उन्होंने सुबह से कुछ खाया नहीं था सो उन सबने मिल कर उस खाने को आसानी से खत्म कर दिया।

पर जब बड़ा दिल ने कई बैरल भर कर पानी देखा तो उसका दिल और साहस दोनों डूब गये। वह बोला — "मुझे लगता है कि यहाँ तो मैं हार गया।"

पर ज़्यादा प्यास वाले आदमी ने कहा — "इतनी जल्दी हार मत मानो मेरे दोस्त। मुझे फिर से बहुत प्यास लग आयी है। मैं बहुत सूखा सूखा महसूस कर रहा हूँ जैसे मेरे पेट में आग लगी हो। तुम मुझे इसे पीने का एक मौका तो दो।"

वह एक बैरल से दूसरे बैरल तक गया और पलक झपकते ही सारे बैरल का पानी पी गया। यह देख कर देखने वाले लोगों ने दाँतों तले उँगली दबा ली।

स्त्री ने बड़ा दिल से कहा — "अभी एक इम्तिहान और बाकी है। तुम लोगों में से किसी एक को दौड़ दौड़नी है।" कह कर वह एक आदमी को ले आयी जो कभी दौड़ में नहीं हारा था।

वह फिर बड़ा दिल से बोली — "तुम्हारी तरफ से यह दौड़ कौन दौड़ेगा? उसको यह दौड़ इस आदमी के साथ दौड़नी होगी। अगर वह जीत जायेगा तो यह लड़की और उसका खजाना तुम्हारा हो जायेगा क्योंकि यह अन्तिम इम्तिहान है पर अगर वह हार गया तो तुम मार दिये जाओगे।"

बड़ा दिल ने लाल भागने वाले को बुलाया और स्त्री से कहा कि उसकी तरफ से यह आदमी दौड़ेगा। उस आदमी ने अपने पैरों से पत्थर खोले और दौड़ने के लिये तैयार हो गया।

उनका रास्ता मैदानों से हो कर कई मील तक जाता था उस पर जा कर और फिर जहाँ से दौड़ शुरू होनी थी वहीं वापस आना था। कुछ देर तक तो वे दोस्तों की तरह से दौड़े पर जब वे गाँव वालों की नजरों से ओझल हो गये तो लड़की के दौड़ने वाले ने कहा — "आज दिन बहुत गर्म है यहाँ थोड़ा आराम कर लेते हैं।" सो दोनों एक पेड़ के नीचे आराम करने बैठ गये।

दिन सचमुच में बहुत गर्म था सो लाल भागने वाला तो तुरन्त ही सो गया। लड़की के भागने वाले की यह पुरानी चाल थी जो बजाय अपनी गति के हमेशा अपनी इस चाल से जीत जाता था।

जैसे ही उसने देखा कि लाल भागने वाला गहरी नींद सो गया वह जितनी तेज़ी से भाग सकता था उतनी तेज़ी से गॉव की तरफ भाग गया।

गॉव के लोगों ने देखा कि उनका भागने वाला तो वापस आ रहा है पर अजनबी दौड़ने वाले का कोई पता नहीं है। यह देख कर उनको लगा कि बेचारा अबकी बार यह उम्मीदवार भी मारा जायेगा।

बड़ा दिल यह देख कर बहुत परेशान हुआ कि लाल भागने वाला अभी तक वहॉ नहीं आया था। उसको लगा कि वह तो अब हार गया है। यह देख कर ज़्यादा सुनने वाले ने तुरन्त ही अपना कान जमीन से लगा दिया और बताया कि वह तो फलॉ जगह सो रहा है। मुझे उसके खर्राटों की आवाज सुनायी दे रही है।

दूर निशाना लगाने वाला बोला "मैं इसे अभी जगाता हूॅ।" कह कर उसने तुरन्त ही उस जगह का निशाना बॉध कर अपना तीर चला दिया।

यह देख कर लोगों ने समझा कि यह आदमी पागल है क्योंकि निशाना तो सामने है ही नहीं यह तीर कहॉ चला रहा है। पर दूर निशाना लगाने वाले ने तुरन्त ही अपना तीर चला दिया।

उसका निशाना इतना ठीक था कि वह लाल भागने वाले की ठीक नाक पर जा कर लगा। इसने उसे सोते से जगा दिया। जब वह उठा तो उसने देखा कि लड़की का भागने वाला तो वहॉ से जा चुका है।

कुछ तो लड़की के भागने वाले के धोखे के बारे में सोच कर और कुछ नाक के दर्द के बार में सोच कर वह वहॉ से बिजली की भॉति भाग लिया। उसने लड़की के भागने वाले को पीछे छोड़ दिया और दौड़ शुरू होने की जगह आ पहुॅचा।

लोग अजनबियों के इन आश्चर्यजनक कामों को देख कर आश्चर्य में पड़ गये थे।

स्त्री ने बड़े दिल से कहा — "तुमने लड़की की तीनों शर्तें पूरी कर के लड़की को जीत लिया है। वह अब तुम्हारी पत्नी है।"

बड़ी धूमधाम से दोनों की शादी हो गयी। बड़े दिल ने अपने साथियों को बहुत सारा खजाना दिया। बदले में उन्होंने भी उससे वायदा किया कि वे हमेशा उसकी सहायता करेंगे।

अपनी पत्नी खजाना और नौकर चाकरों को ले कर वह समुद्र के रास्ते से अपने गॉव पहुॅचा। उसके माता पिता उसे फिर से देख कर और उसकी सफलता देख कर बहुत खुश हुए।

उसकी मॉ बोली — "मैंने तो पहले ही कहा था कि परियों की भेंटों की वजह से मेरा बेटा बहुत ही मशहूर होगा।"

उसके बाद सभी बहुत दिनों तक हॅसी खुशी रहे।

18 सुनहरी बतख[61]

एक आदमी था जिसके तीन बेटे थे। उनमें से उनका सबसे छोटा बेटा बहुत सीधा था। लोग हर मौके पर उससे बात भी करना पसन्द नहीं करते थे। उसके ऊपर हॅसते थे। उससे कतराते थे।

एक दिन ऐसा हुआ कि उनमें से सबसे बड़े भाई ने लकड़ी काटने के लिये जंगल में जाने का विचार किया तो उसकी मॉ ने उसे एक बहुत ही स्वादिष्ट पैनकेक दिया और एक शीशी वाइन दी ताकि जब उसे भूख लगे तो वह पैनकेक खा ले और जब प्यास लगे तो वाइन पी ले।

जब वह जंगल में पहुॅचा तो वहॉ उसे एक बूढ़ा मिला। बूढ़े ने उससे कहा "गुड डे। मुझे अपनी जेब में से थोड़ी सी पैनकेक दो और थोड़ी सी वाइन पीने को दो। मुझे बहुत भूख और प्यास लगी है।"

पर उस घमंडी लड़के ने जवाब दिया — "मैं अपनी केक और वाइन तुम्हें दूॅ? जाओ जाओ मेरे पास कुछ भी नहीं है।" कह कर वह वहॉ से चला गया। फिर वह एक पेड़ के पास पहुॅचा और उसे काटने लगा।

---

[61] The Golden Goose. A tale from Germany, Europe. Written by Grimm Brothers. Taken from the Website : https://www.grimmstories.com/en/grimm_fairy-tales/pdf/the_golden_goose.pdf

वहॉ उसे लकड़ी काटते हुए अभी बहुत देर नहीं हुई थी कि उसकी कुल्हाड़ी का एक गलत वार लगा और उससे उसकी बॉह घायल हो गयी। इससे उसे घर जाना पड़ा और अपनी बॉह के घाव की पट्टी करानी पड़ी। यह उस बूढ़े का कमाल था।

इसके कुछ समय बाद लकड़ी काटने के लिये बीच वाला भाई जंगल गया तो उनकी मॉ ने उसे भी स्वादिष्ट पैनकेक बना कर दी और एक बोतल वाइन दी।

जंगल जाते समय उसे भी वही बूढ़ा मिला। उसने उससे भी थोड़ी सी केक और वाइन मॉगी तो अपने बड़े भाई की तरह से उसने भी उसे केक और वाइन देने से मना कर दिया और आगे चला गया।

उसको भी लकड़ी काटते हुए अधिक देर नहीं हुई थी कि उसकी कुल्हाड़ी से एक गलत वार हुआ और उसकी टॉग में चोट लग गयी। चोट इतनी अधिक थी कि उसको लोगों को उठा कर ले जाना पड़ा।

अबकी बार उनके सीधे लड़के ने जंगल जाने की सोची। उसने कहा — "पिता जी। मेहरबानी कर के लकड़ी काटने के लिये एक बार मुझे जंगल जाने की इजाज़त दें।"

पिता बोले — "बेटा। तुम्हारे दोनों भाई जंगल जा कर पहले ही चोट खा कर आ चुके हैं इसलिये अच्छा यही है कि तुम अपनी इस जिद को छोड़ दो। तुम तो इस बारे में कुछ जानते भी नहीं।"

पर वह सीधा लड़का बहुत देर तक अपने पिता से जंगल जाने के लिये विनती करता रहा कि उसके पिता को आखिर उसे वहाँ जाने की इजाज़त देनी ही पड़ी। पिता ने कहा — "ठीक है तुम अपने आप ही वहाँ जाओ। जब तुम इस काम को करोगे तभी तुम सीखोगे।"

चलते समय उसकी माँ ने उसे पानी में बनी हुई और राख में पकी हुई एक केक दे दी और एक बोतल खट्टी बीयर दे दी।

जब वह जंगल में आया तो रास्ते में उसे भी वही बूढ़ा मिला। बूढ़े ने उससे कहा — "गुड डे बेटे। क्या तुम मुझे थोड़ी सी केक और अपनी बोतल में से कुछ पीने के लिये दे सकते हो? मैं बहुत भूखा और प्यासा हूँ।"

सीधे सादे ने जवाब दिया — "मेरे पास केवल आटे की बनी रोटी है और खट्टी बीयर है अगर आपको पसन्द हो तो चलिये कहीं बैठते हैं और खाते हैं।"

"हाँ हाँ चलो।"

सो दोनों वहीं पास में ही बैठ गये और लड़के ने अपना खाना निकाला। जैसे ही उसने अपना खाना निकाला तो लो वह रोटी तो एक बहुत ही बढ़िया पैनकेक में बदल गयी और उसकी खट्टी बीयर की बढ़िया वाइन बन गयी।

सो उन दोनों ने वह खाना बहुत प्रेम से खाया। खाने पीने के बाद छोटा बूढ़ा बोला — "तुम्हारा दिल इतना अच्छा है कि तुम्हारे

पास जो कुछ भी है वह तुम दूसरों के साथ बॉटने के लिये तैयार रहते हो इसलिये मैं तुम्हें अच्छे भाग्य का वरदान देता हूँ। वहॉ देखो एक पेड़ खड़ा हुआ है तुम उसे काट लो। उसकी जड़ में तुम्हें कुछ मिलेगा।" यह कह कर वह छोटा बूढ़ा वहॉ से चला गया।

इसके बाद सीधा सादा उस पेड़ के पास चला गया और उसे काटने लगा। जब वह कट कर गिर गया तो उसने देखा कि उसकी जड़ों में तो एक बतख बैठी हुई है जिसके सारे पंख सोने के हैं। उसने उसे वहॉ से उठाया और उस सराय में ले गया जहॉ वह उस रात ठहरना चाहता था।

अब सराय के मालिक की तीन बेटियॉ थीं। उन्होंने जब उस सोने की बतख को देखा तो उन्हें यह जानने की उत्सुकता हुई कि वह कैसी आश्चर्यजनक चिड़िया थी। और उनकी यह उत्सुकता इतनी बढ़ी कि उनमें से हर एक की यह इच्छा हुई कि वे उसका कम से कम एक एक पंख तो ले ही ले।

उनमें से सबसे बड़ी बेटी ने सोचा कि "मैं उस मौके का इन्तजार करूँगी जब मैं उसका एक पंख ले सकूँ और फिर एक अच्छा मौका देख कर अपने लिये इसका एक पंख खींच लूँगी।"

सो जब वह सीधा सादा कहीं बाहर चला गया तो उसने उसे उसके पंखों से पकड़ लिया। पर यह क्या उससे तो उसके हाथ ही चिपक गये थे।

बहुत जल्दी ही उसकी छोटी बहिन आ गयी। वह भी इसी विचार से आयी थी कि वह सीधे सादे की अनुपस्थिति में उस सोने की बतख का एक पंख ले लेगी। पर बहिन को इस तरह बतख से चिपका देख कर वह बहिन को छुड़ाने के लिये दौड़ी। बहिन को तो वह नहीं छुड़ा पायी पर हॉ उसको पकड़ने पर वह खुद भी अपनी बहिन से चिपक कर रह गयी।

सबसे बाद में सबसे छोटी बहिन आयी। वह भी बतख का एक पंख लेने के इरादे से आयी थी। जब दोनों बहिनों ने उसे आते देखा तो वे वहीं से चिल्लायीं — "यहॉ नहीं आना। भगवान के लिये हमसे दूर रहो।"

पर उसकी यह समझ में नहीं आया कि वह ऐसा क्यों करे। उसने सोचा कि "अगर वे बतख का पंख ले सकती हैं तो वह क्यों नहीं ले सकती।" और वह उनकी तरफ बढ़ी। जैसे ही वह उनके पास तक पहुॅची तो उसने देखा कि वह भी उनसे चिपक गयी है। सो सारी रात उन सबको वहीं रहना पड़ा।

अगले दिन सीधे सादे ने अपनी बतख उठा कर अपनी बगल में दबायी और चल दिया। उसने इस बात पर भी ध्यान नहीं दिया कि उसकी बतख से तीन लड़कियॉ चिपकी हुई हैं। अब उन तीनों लड़कियों को उस लड़के के पीछे दौड़ना पड़ा। कभी बॉये तो कभी दॉये जिस तरफ भी वह लड़का जाता।

मैदानों के बीच उन्हें एक पादरी मिला जिसने जब वह जुलूस देखा तो बोला — "लड़कियों तुम लोगों को शर्म आनी चाहिये कि तुम लोग एक लड़के के पीछे इस तरह भाग रही हो।" कह कर उसने सबस पीछे वाली सबसे छोटी लड़की का हाथ पकड़ लिया ताकि वह उन्हें खींच कर छुड़ा सके। पर जैसे ही उसने उसे छुआ कि साथ में वह भी उनके पीछे भागने लगा।

कुछ देर बाद एक तलवार चलाने वाला उधर से गुजरा तो वह एक आदरणीय सज्जन को तीन लड़कियों के पीछे भागता देख कर आश्चर्य में पड़ गया।

वह चिल्लाया — "ओ माननीय। यह आप इतनी जल्दी जल्दी कहॉ कहॉ भागे जा रहे हैं? आप भूल रहे हैं कि आज क्रिस्टिनिंग की एक और रस्म बाकी है।" और उसने जल्दी से भागते हुए पादरी का गाउन पकड़ लिया। पर जैसे ही उसने उसका गाउन छुआ कि वह भी उनके पीछे भागने के लिये मजबूर हो गया।

अब पॉच लोग एक दूसरे के पीछे कूद कूद कर भागे जा रहे थे कि दो किसान अपना हल ले कर उधर से गुजर रहे थे। पादरी ने उन्हें देखा तो उसने उससे बहुत ज़ोर से चिल्ला कर कहा कि वे आ कर उसे और तलवार चलाने वाले को उस बन्धन से आजाद करा दें।

वे बेचारे आये और उन्होंने तलवार चलाने को पकड़ कर खींचने की कोशिश की कि वे खुद भी उनके पीछे पीछे भागने लग

गये। अब लड़के और उसकी सोने की बतख के पीछे सात लोग भाग रहे थे। क्या ही सुन्दर दृश्य था।

धीरे धीरे वे एक शहर में आये जहॉ उस देश का राजा रहता था। उस राजा के एक अकेली बेटी थी जो हमेशा उदास रहती थी। वह बहुत दिनों से कभी नहीं हॅसी थी। राजा ने उसके बारे में यह मुनादी पिटवा दी थी कि "जो कोई उसे हॅसायेगा वह अपनी बेटी की शादी उसी के साथ कर देगा।"

सीधे सादे लड़के ने भी यह मुनादी सुनी तो वह अपनी बतख और अपने साथ लटकने वालों को साथ लिये हुए राजा के महल की ओर चल दिया।

जैसे ही राजकुमारी ने लड़के को उसके जुलूस के साथ देखा तो खिलखिला कर हॅस पड़ी। उसे ऐसा लगा जैसे उसकी हॅसी रुक ही नहीं पायेगी। इस तरह उसने राजा की बेटी से शादी करने का अधिकार पा लिया था पर राजा को वह अपने दामाद की तरह पसन्द नहीं था सो उसने उनकी शादी में कई अड़ंगे लगाये।

उसने लड़के से कहा कि वह एक आदमी को ले कर आये जो पूरा का पूरा एक कमरा भर कर शराब पी जाये। लड़के ने सोचा कि शायद वह बूढ़ा जिससे वह पहली बार मिला था वह उसकी सहायता कर सके।

सो वह जंगल की तरफ चल दिया और वह उसी जगह पहुॅचा जहॉ उसने पेड़ काट कर गिराया था। वहॉ उसने एक बहुत ही दुखी

आदमी बैठा हुआ देखा। उसने उस आदमी से पूछा कि वह इतना दुखी क्यों बैठा है।

वह आदमी बोला — "क्या करूँ। मुझे बहुत ज़ोर की प्यास लगी है। मेरी प्यास ही नहीं बुझ रही है। ठंडा पानी मुझे भाता नहीं। मैंने एक बड़ी बोतल भर कर शराब पी ली है पर फिर भी मैं प्यासा हूँ। वह तो मेरे लिये एक बूँद जैसी थी।"

सीधा सादा लड़का बोला — "चलो मेरे साथ चलो मैं तुम्हारी प्यास बुझाऊँगा।"

वह उसे सीधा राजा के उस कमरे की तरफ ले गया जिसमें उसकी शराब रखी रहती थी। वह प्यासा आदमी वहाँ शराब की बड़ी बड़ी बोतलों के सामने बैठ गया और दिन खत्म होने से पहले पहले उसने राजा का शराब से भरा वह पूरा कमरा खाली कर दिया।

इसके बाद सीधे सादे ने राजा से राजकुमारी का हाथ माँगा पर राजा अभी भी इस नीच लड़के को अपनी बेटी देने के लिये तैयार नहीं था सो उसने एक और नयी शर्त रखी कि अबकी बार वह एक ऐसा आदमी ढूँढ कर ले कर आये जो रोटी का पहाड़ खा सके तभी वह उसको अपनी बेटी दे पायेगा।

सीधा सादा एक पल को भी नहीं हिचकिचाया और तुरन्त ही उसी जंगल की ओर उसी पेड़ की तरफ भाग गया जिसे उसने काटा था। जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने देखा कि एक आदमी बहुत

बेचैन सा बैठा हुआ है। उसने अपने सारे शरीर को पट्टियों से बॉधा हुआ है।

उसने उस आदमी से पूछा कि वह इस तरह अपने सारे शरीर पर पट्टियॉ बॉधे क्यों बैठा है तो उसने कहा — "मैंने एक पूरी बेकरी भर कर रोटियॉ खा ली हैं पर मैं अभी तक भूखा हूॅ। मैं क्या करूॅ। मुझे बहुत भूख लगी है। मेरा पेट खाली है। मैं इस तरह से पट्टियॉ बॉधने पर मजबूर हूॅ ताकि मैं भूख से मर न जाऊॅ।"

सीधा सादा लड़का तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया। वह बोला — "तो चलो जल्दी उठो। मेरे साथ चलो मैं तुम्हें पेट भर कर रोटियॉ खिलाता हूॅ। वहॉ बहुत सारी रोटियॉ हैं।"

वह उसे सीधा राजा के महल के ऑगन में ले गया जहॉ रोटियों का एक पहाड़ सा लगा हुआ था। वह आदमी उस पहाड़ के सामने बैठ गया और जल्दी जल्दी रोटियॉ खाने लगा। दिन खत्म होने से पहले ही रोटियों का वह पहाड़ भी खत्म हो चुका था।

लड़के ने फिर से राजा से राजकुमारी का हाथ मॉगा। दोनों शर्तें पूरी करने के बाद भी राजा ने अपनी बेटी को उसे न देने का एक और बहाना ढूॅढ ही लिया।

राजा ने उससे कहा — "अब तुम्हारे पास एक ऐसा जहाज़ और होना चाहिये जो धरती पर भी चले और पानी में भी चले। जितनी जल्दी तुम ऐसा जहाज़ ले आओगे मैं अपनी बेटी की शादी तुम्हारे साथ कर दूॅगा।"

सीधा सादा तुरन्त ही फिर से जंगल में उसी पेड़ के पास जा पहुँचा जिसे उसने काटा था। अबकी बार वहाँ वही बूढ़ा बैठा हुआ था जिसको उसने रोटियाँ खिलायी थीं।

उसे देखते ही बूढ़ा बोला — "तुमने अपना खाना मेरे साथ बाँटा था। मैंने तुम्हारे लिये खाना खाया। मैंने तुम्हारे लिये शराब पी अब मैं तुम्हें ऐसा जहाज़ भी दूँगा जैसा तुम्हें चाहिये। यह सब केवल इसलिये क्योंकि पहले तुमने मेरे ऊपर दया की थी।"

उसके बाद उसने उसे एक ऐसा जहाज़ दिया जो जमीन पर भी चल सकता था और पानी पर भी। जब राजा ने ऐसा जहाज़ उसके पास देखा तो वह उसे अपनी बेटी देने से नहीं रोक सका।

शादी तुरन्त ही हो गयी। राजा की मृत्यु के बाद सीधा सादा उस देश का राजा बन गया और बहुत दिनों तक अपनी पती के साथ खुशी खुशी जिया।

19 जैक ने अपनी किस्मत कैसे बनायी[62]

यह बहुत पुरानी बात है कि कहीं एक लड़का रहता था। उसका नाम था जैक। एक सुबह उसने सोचा कि चल कर अपनी किस्मत बनायी जाये। सो वह अपनी किस्मत बनाने चल दिया।

वह अभी बहुत दूर नहीं गया था कि रास्ते में उसको एक बिल्ला मिला। बिल्ले ने पूछा — "जैक तुम कहाँ जा रहे हो?"

जैक बोला — "मैं अपनी किस्मत बनाने जा रहा हूँ।"

बिल्ले ने पूछा — "क्या मैं भी तुम्हारे साथ चलूँ?"

जैक बोला — "क्यों नहीं। जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही आनन्द रहेगा।"

सो वे दोनों उछलते कूदते चल दिये। अभी वे कुछ दूर ही गये होंगे तो उन्हें एक कुत्ता मिला।

कुत्ते ने पूछा — "कहाँ चल दिये जैक?"

जैक बोला — "मैं अपनी किस्मत बनाने जा रहा हूँ।"

कुत्ते ने पूछा — "क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूँ?"

जैक ने कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं। जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही ज़्यादा आनन्द रहेगा।"

---

[62] How Jack Went to Seek His Fortune – a folktale Taken from the book "English Fairy Rales " collected by Joseph Jacobs, 1892. Book available at : https://www.worldoftales.com/English_fairy_tales.html

सो कुत्ता भी उनके साथ चल दिया। अब तीनों उछलते कूदते चल दिये। वे कुछ ही दूर और गये थे कि उनको एक बकरा मिला।

बकरे ने पूछा — "कहाँ जा रहे हो प्यारे जैक?"

जैक बोला — "मैं अपनी किस्मत बनाने जा रहा हूँ।"

बकरे ने पूछा — "क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूँ?"

जैक ने कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं। जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही ज़्यादा आनन्द रहेगा।"

फिर वे सब साथ साथ चल दिये। अब चार हो गये थे – जैक बिल्ला कुत्ता बकरा। वे लोग कुछ दूर और आगे चले तो उनको एक बैल मिला।

बैल ने पूछा — "जैक भाई कहाँ चले?"

जैक बोला — "मैं अपनी किस्मत बनाने जा रहा हूँ।"

बैल ने पूछा — "क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूँ?"

जैक ने कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं। जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही ज़्यादा आनन्द रहेगा चलो तुम भी चलो।"

सो अब पाँच लोग चल दिये। अभी वे ज़्यादा दूर नहीं गये थे कि उनको एक मुर्गा मिल गया।

मुर्गे ने भी पूछा — "जैक कहाँ चल दिये?"

जैक बोला — "मैं अपनी किस्मत बनाने जा रहा हूँ।"

मुर्गे ने पूछा — "क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूँ?"

जैक ने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। जितने ज़्यादा लोग होंगे उतना ही ज़्यादा आनन्द रहेगा। तुम भी चलो हमारे साथ।"

सो अब छह लोग चल दिये। सब इसी तरह से चलते रहे चलते रहे कि अब शाम होने आयी। अब उन्हें कोई ऐसी जगह चाहिये थी जहॉ वे आराम से अपनी रात बिता सकें।

तभी उनको एक घर दिखायी दिया। जैक ने उनसे कहा कि वे सब वहीं चुपचाप खड़े रहें वह ज़रा घर को अन्दर से देखता है। उसने खिड़की से झॉका तो उसने देखा कि कुछ डाकू उसमें बैठे बैठे अपने पैसे गिन रहे थे।

जैक वापस गया और जा कर उन सबसे कहा कि थोड़ा ठहरो। जब मैं कहूँ तब तुम लोग बहुत ज़ोर का शोर मचाना। सो जब सब तैयार हो गये तो जैक ने इशारा किया तो बिल्ले ने म्याऊँ बोला, कुत्ते ने ज़ोर से भौंका, बकरे ने "मैं मैं" कहा, बैल रॅभाया और मुर्गे ने ज़ोर से कुकड़ूँ कू की आवाज लगायी।

ये सब आवाजें मिल कर इतना शोर कर रही थीं कि डाकू बेचारे बहुत डर गये और घर छोड़ कर भाग गये। तब मुर्गा अन्दर गया और उसने सारा घर सॅभाल लिया।

जैक को डर लग रहा था कि डाकू रात में घर वापस आयेंगे। सो जब रात हो गयी तो उसने बिल्ले को तो झूलने वाली कुर्सी पर

बिठा दिया। कुत्ते को मेज के नीचे बिठा दिया। बकरे को उसने ऊपर चढ़ा दिया।

बैल को उसने नीचे वाले कमरे में भेज दिया। मुर्गा घर की छत पर बैठ गया। जैक खुद बिस्तर पर सोने चला गया।

जैक का सोचना ठीक था। धीर धीरे जब रात हो गयी तो डाकुओं ने घर लौटना चाहा तो उन्होंने एक आदमी को यह देखने के लिये घर भेजा कि वह यह देख कर आये कि घर ठीकठाक है या नहीं।

थोड़ी ही देर में वह वापस आ गया और उसने अपने साथियों को बताया — "मैं जब वापस घर पहुँचा तो मैं अन्दर गया और अपनी झूलती हुई कुर्सी पर बैठने की कोशिश की तो वहाँ तो एक बुढ़िया कुछ बुन रही थी। उसने अपनी बुनाई की सलाइयाँ मेरे शरीर में चुभो दीं। यह बिल्ला था।

फिर मैं पैसे देखने के लिये मेज के पास गया तो उसके नीचे एक जूता बनाने वाला बैठा था उसने अपने जूता सिलने वाला औजार मुझे मारा। यह कुता था।

फिर मैं ऊपर गया तो वहाँ एक आदमी था जो कुछ पीट रहा था उसने अपने पीटने वाले हथियार से मुझे मारा। यह बकरा था।

फिर मैंने नीचे वाले कमरे में जाने की कोशिश की तो वहाँ कोई लकड़ी काट रहा था उसने मुझे अपनी कुल्हाड़ी से मारा। यह बैल था।

पर मुझे इन सबकी चिन्ता नहीं होती अगर वह छोटा आदमी घर की छत पर न मिलता तो। वह बस बोले जा रहा था "कुकड़ूँ कू। कुकड़ूँ कू।" और यह तो मुर्गा था।

20 जैक और उसके साथी[63]

आओ साथ चलें की इन कहानियों में यह कहानी ब्रिटेन की है। एक बार की बात है कि ब्रिटेन के किसी गॉव में एक गरीब विधवा रहती थी और जैसा कि अक्सर होता है उसके एक ही बेटा था। एक बार बहुत ही मुश्किल गर्मी आयी। उनको नहीं पता था कि जब तक नया आलू खाने के लिये तैयार होता है तब तक वे क्या खायेंगे।

सो एक शाम जैक ने अपनी मॉ से कहा — "मॉ मेरे लिये एक केक बेक कर दो मेरी मुर्गी मार दो जब तक मैं अपनी किस्मत आजमा कर आता हूँ। और अगर वह मुझे कहीं मिल गयी तो फिर डरना नहीं मैं उसे तुम्हारे साथ बॉटने के लिये बहुत जल्दी ही वापस आऊँगा।

जैसा उसने कहा था उसकी मॉ ने वैसा ही कर दिया और अगले दिन सुबह ही वह अपनी यात्रा पर चल दिया। उसकी मॉ उसको ऑगन के दरवाजे तक छोड़ने के लिये आयी और बोली — "जैक तुम क्या लेना पसन्द करोगे बेटा आधी केक और आधी मुर्गी के साथ मेरा आशीर्वाद या फिर सारी केक और सारी मुर्गी के साथ मेरी बद्दुआ।"

---

[63] Jack and His Comrades. Taken from the Book : "Celtic Fairy Tales". By Joseph Jacobs. 1892. This story's language is in a bit slang. I offer my apology if the translation is not up to the mark. Taken from the Web Site : https://www.sacred-texts.com/neu/celt/cft/index.htm

जैक बोला — "ओह मॉ। तुम मुझसे ऐसा सवाल क्यों पूछती हो। तुम्हें तो मालूम ही है कि मैं तुम्हारी बद्दुआ के साथ तो डैमर का राज्य[64] भी नहीं लूँगा।"

मॉ बोली — "ठीक है। तब तुम मेरे हजारों आशीर्वादों के साथ यह सारी केक और सारी मुर्गी ले कर जाओ।" यह कह कर वह अपने घर के ऑगन की चहारदीवारी पर खड़ी हुई उसको तब तक आशीर्वाद देती रही जब तक वह उसको दिखायी देता रहा।

जैक चलता चलता गया जब तक वह थक नहीं गया। अब वह एक किसान के घर के पास खड़ा था। उसको एक लड़के की जरूरत थी पर वह उसके घर नहीं गया।

यह सड़क एक दलदल के किनारे से जाती थी। वहॉ बेचारा एक गधा एक बड़े घास के ढेर के पास कन्धे तक दलदल में फॅसा खड़ा था। वह उसमें से निकलने की कोशिश कर रहा था।

वह जैक से बोला — "ओ जैक मेहरबानी कर के मुझे निकालो नहीं तो मैं इसमें डूब जाऊँगा।"

जैक बोला — "बस दोबारा मत कहना।"

उसने दलदल में कुछ बड़े पत्थर डाले और उन पर पैर रखते हुए दलदल की तरफ चल दिया। वह गधे को तब तक खींच खींच कर निकालता रहा जब तक उसके पैरों के नीचे सख्त जमीन नहीं आ गयी।

---

[64] Damer's Estate

गधा जब सख्त सड़क पर आ गया तो बोला — "धन्यवाद जैक। समय आने पर मैं तुम्हारे लिये इससे ज़्यादा करने की कोशिश करूँगा। तुम कहाँ जा रहे हो?"

जैक बोला — "जब तक आलू की नयी फसल आती है तब तक के लिये मैं अपनी किस्मत सँवारने जा रहा हूँ। भगवान का आशीर्वाद है।"

गधा बोला — "अगर तुम्हें अच्छा लगे तो मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ। कौन जानता है हमारी किस्मत में क्या लिखा है।"

जैक बोला — "खुशी से। हमें देर हो रही है चलो दौड़ दौड़ कर चलते हैं।"

चलते चलते वे एक गाँव में से गुजरे तो देखा कि बहुत सारे लड़के एक कुत्ते को ढूँढ रहे थे जिसकी पूँछ में एक बरर्तन बँधा हुआ था। वह बेचारा रक्षा के लिये जैक के पास आया तो गधे ने उन बहुत सारे लड़कों की तरफ देख कर इतने ज़ोर से ढेंचू ढेंचू किया कि वे सभी डर के मारे भाग गये।

कुत्ता बोला — "तुम बहुत ताकतवर हो जैक। मैं तुम्हारा बहुत ऋणी हूँ। तुम और यह जानवर किधर जा रहे हो?"

जैक बोला — "जब तक आलू की नयी फसल आती है तब तक के लिये हम अपनी किस्मत आजमाने जा रहे हैं।"

गधा बोला — "तुम इन सब बदतमीज लड़कों को मेरे पीछे आने से रोक दो तो मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।"

जैक बोला — "ठीक है ठीक है। तुम अपनी पूँछ दबा लो और हमारे साथ चलो।"

चलते चलते वे शहर के बाहर आ गये और एक पुरानी दीवार के पास बैठ गये। जैक ने अपनी रोटी और मॉस निकाला। उसने खुद भी खाया और कुत्ते को भी खिलाया। गधे ने वहॉ थोड़ी सी घास चर ली।

जब वे खा रहे थे और बात कर रहे थे तब बताओ तो भला वहॉ कौन आया? एक भूखा बिल्ला। वह भूखा बिल्ला इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि उसकी आवाज सुन कर तो किसी का भी दिल रो पड़ता।

जैक बोला — "ऐसा लगता है जैसे कि तुमने नाश्ते के बाद से कुछ खाया नहीं है। यह लो हड्डी और उस पर लगा हुआ कुछ मॉस।"

टौम[65] बोला — "भगवान करे तुम्हारे बच्चे कभी भूखे नहीं रहें। अभी तो मुझे तुम्हारी जरूरत है। पर क्या मैं तुम सबसे यह पूछने की हिम्मत कर सकता हूँ कि तुम सब जा कहॉ रहे हो।"

जैक बोला — "जब तक आलू की नयी उपज आती है तब तक हम अपनी किस्मत आजमाने जा रहे हैं। तुम चाहो तो तुम भी हमारे साथ चल सकते हो।"

[65] Tom is just a nickname of any male cat in Northern European culture.

बिल्ला बोला — "ओह यह काम तो मैं बड़े मन से करूँगा तुमने मुझसे कहा इसके लिये धन्यवाद।"

अब वे सब चल दिये। जब पेड़ों के साये उनकी खुद की लम्बाई से तिगुने हो गये तो उन्होंने पास के मैदान से कोई आवाज सुनी। उन्होंने देखा कि एक गड्ढे के ऊपर से कूदता हुआ एक लोमड़ा आया। उसके मुँह में एक बहुत ही बढ़िया काला मुर्गा लगा हुआ था।

गधा उस पर बादलों की तरह से गर्जा — "ओ मेरे दुश्मन।"

जैक बोला — "ओ अच्छे कुत्ते। पकड़ लो उसको।"

अभी उसके शब्द उसके मुँह से बाहर भी निकले थे कि कुत्ता उसके ऊपर कूद पड़ा। रेनार्ड[66] ने अपना इनाम तुरन्त ही वहाँ ऐसे छोड़ दिया जैसे वह कोई गर्म आलू हो और बन्दूक की गोली की तरह से भाग गया। बेचारा मुर्गा अपने पंख फड़फड़ाता और काँपता हुआ जैक और उसके साथियों के पास आ कर खड़ा हो गया।

मुर्गा बोला — "आह। पड़ोसियो क्या यह मेरी अच्छी किस्मत नहीं थी कि उसने तुम्हें मेरे रास्ते में मिला दिया। हो सकता है कि जब मैं किसी कठिनाई में होऊँ तो तुम्हारी दया को न याद रखूँ पर तुम सब जा कहाँ रहे हो।"

"हम सब जब तक आलू की नयी फसल तैयार होती है तब तक के लिये अपनी किस्मत बनाने जा रहे हैं। तुम भी हमारी पार्टी

[66] Reynard is nickname of any wolf, like Tom is for a cat.

में शामिल हो सकते हो अगर चाहो तो। और जब तुम्हारी टॉगें और पंख थक जायें तो नैडी[67] के ऊपर बैठ सकते हो।"

अब वे सब एक साथ आगे चलने लगे और जैसे ही सूरज डूबा तो उन्होंने चारों तरफ देखा तो न तो उन्हें कोई केबिन नजर आया और न ही कोई खेतों वाला घर।

जैक बोला — "इस समय हमारी किस्मत ठीक नहीं है पर अगली बार हमारी किस्मत जरूर काम करेगी। और फिर यह तो गर्मियों की रात है। हम लोग जंगल में चलते हैं वहॉ ऊॅची ऊॅची घास पर लेटेंगे।"

बस तुरन्त ही वे सब एक जंगल में थे। जैक ऊॅची ऊॅची घास पर लेटा हुआ था। गधा उसके पास ही लेटा हुआ था। कुत्ता और बिल्ला गधे की गर्म गर्म गोद में लेटे हुए थे और मुर्गा अगले पेड़ पर आराम करने चला गया था।

बहुत जल्दी ही वे गहरी नींद सो गये। और अब तो मुर्गे के बोलने का समय भी आ गया था।

गधा बोला — "ओ काले मुर्गे तुमने मुझे इतनी मीठी नींद से जगा दिया मैं तो भूसा खा रहा था। बोलो क्या बात है।"

मुर्गा बोला — "दिन निकल आया है यह बात है। क्या तुम्हें चारों तरफ रोशनी नहीं दिखायी देती।"

[67] Neddy is an Irish slang for "ass".

जैक बोला — "हॉ हॉ रोशनी तो दिखायी दे रही है पर यह तो किसी मोमबत्ती की रोशनी है सूरज की नहीं। अब क्योंकि तुमने मुझे उठा ही दिया है तो फिर चलो हम अपना चलना शुरू करते हैं और रहने की जगह खोजते हैं।"

सो उन सबने अपने को हिला हिला कर जगाया और घास पत्थरों और कॉटों वाली झाड़ियों में से हो कर चल दिये। वे एक खोखली जगह आ पहुँचे जहॉ एक साये में से हो कर रोशनी आ रही थी। और उसके साथ आ रही थीं गाने हॅसने और एक दूसरे को गालियॉ देने की आवाजें।

जैक बोला — "शान्ति से। आराम से। तुम सब अपने पंजों के बल चलो जब तक हम यह न देख लें कि हमें कैसे लोगों के साथ बर्तना है।"

सो वे सब खिड़की के नीचे तक रेंग कर चले गये। वहॉ उन्होंने छह डाकू देखे जिनके पास पिस्तौलें थीं छोटी छोटी बन्दूकें थीं और कटलस[68] थे। वे सब एक मेज पर बैठे हुए थे और भुनी हुई गाय और सूअर खा रहे थे और बीयर वाइन और व्हिस्की पी रहे थे।

[68] Cutlass or matchet is a long blade, about 1 1/5 – 2' long blade. See its picture above.

उनमें से एक बदसूरत आदमी ने खाना भरे हुए मुँह से कहा — "आज हमने कितना अच्छा दॉव लगाया डनलाविन[69] के लौर्ड के घर में पर हम उस ईमानदार पोर्टर के लिये बहुत थोड़ा ही रख सके।"

जैक फुसफुसाया — "ठीक है ठीक है। और अब तुम मेरे हुक्म का इन्तजार करो।"

सो गधे ने अपने आगे वाले खुर खिड़की की सिल पर रखे। कुत्ता गधे के सिर पर चढ़ गया। बिल्ला कुत्ते के सिर पर बैठ गया और मुर्गा बिल्ले के ऊपर चढ़ गया।

जैसे ही जैक ने इशारा किया तो सबने एक साथ ज़ोर से गाना शुरू कर दिया। गधा चिल्लाया ढेंचू ढेंचू। कुत्ता बोला भौं भौं। बिल्ला बोला म्याऊॅ म्याऊॅ और मुर्गा ज़ोर से चिल्लाया कुकडूॅ कू कुकडूॅ कू।

इनके बाद जैक ज़ोर से बोला — "अपनी अपनी पिस्तौल उठाओ और सबको भून डालो। किसी आदमी को ज़िन्दा मत छोड़ना। तैयार। चलाओ गोली।"

इसके साथ ही सब जानवर एक बार फिर एक साथ चिल्लाये और उनकी खिड़की तोड़ कर कमरे के अन्दर कूद गये। डाकू तो डर के मारे मर से ही गये। उन्होंने मोमबत्ती बुझायी मोमबत्तियों को मेज के नीचे फेंका और पिछले दरवाजे निकल कर ऐसे भाग गये जैसे ईमानदार लोग भाग जाते हैं।

[69] Dunlavin is the name of place.

वे तब तक नहीं रुके जब तक वे जंगल नहीं पहुँच गये।

जैक और उसके साथी अन्दर घुसे। खिड़की दरवाजे बन्द किये। मोमबत्तियाँ जलायीं। खाया पिया और सोने के लिये लेट गये।

जैक पलंग पर लेट गया। गधा घुड़साल में चला गया। कुत्ता बाहर दरवाजे पर बैठ गया। बिल्ला आग के पास जा कर बैठ गया। और मुर्गा एक डंडे पर जा कर बैठ गया।

पहले तो डाकू बहुत खुश हुए कि वे जंगल में बिल्कुल सुरक्षित थे पर बहुत जल्दी ही वे दुखी होने लगे। एक बोला — "यह नम घास तो हमारे कमरे के फर्श से बहुत अलग है।"

दूसरा बोला — "मुझे तो सूअर का एक स्वादिष्ट पैर ही छोड़ना पड़ गया।"

तीसरा बोला — "मेरी शराब का तो आखिरी घूँट ही गिलास में रह गया।"

आखिरी चौथा बोला — "और डनलाविन के लौर्ड का सोना चाँदी जो हमने लूटा था उसका क्या?"

उनका कप्तान बोला — "मैं वहाँ फिर से जाऊँगा और देखता हूँ कि वहाँ से हम कुछ वापस ला सकते हैं या नहीं।"

सब बोले — "यह तुमने एक अच्छे बच्चे की तरह बात की।"

और वह जंगल से उठ कर घर चल दिया।

घर की रोशनी बुझी हुई थी सो वह आग की तरफ बढ़ा तो वहॉ तो बिल्ला कूद कर उसके चेहरे पर गिर गया। उसने उसका चेहरा अपने पंजों से खरोंच कर लहू लुहान कर दिया। वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया और कमरे के दरवाजे की तरफ बढ़ा ताकि वह रोशनी करने के लिये मोमबत्ती ढूँढ सके।

अब यहॉ तो कुत्ता बैठा था। उसका पैर कुत्ते की पूँछ पर पड़ गया तो कुत्ते ने उसे उसकी बॉहों टॉगों और जॉघों पर काट लिया। वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "उफ़। काश मैं इस घर से बाहर ही रहता।"

जब वह सामने वाले दरवाजे पर पहुँचा तो मुर्गा उसके ऊपर आ कर गिर गया और उसको अपने पंजों और चोंच से घायल कर दिया। कुत्ते और बिल्ले ने तो उस मुर्गे के मुकाबले में उसके साथ कुछ खास नहीं किया था।

वह चिल्लाया — "तुम सब मरो ओ खानाबदोशों की तरह घूमने वालो।"

जब उसकी सॉस में सॉस आयी तो वह लड़खड़ाता हुआ और चकरी की तरह घूमता हुआ घुड़साल में पहुँचा। वहॉ तो गधा था सो उसने उसको इतनी ज़ोर से लात मारी जिससे वह गोबर के ऊपर जा गिरा।

वहॉ से भी जब उसे कुछ होश आया तो उसने अपना सिर खुजलाया और सोचने लगा कि क्या और कैसे सब हुआ था। जैसे

ही उसकी टॉगों में थोड़ी सी जान आयी वह वहॉ से एक पैर को घसीटता हुआ चला गया। फिर उसने जंगल जा कर ही दम लिया।

जब वह अपने साथियों के पास आ गया तो सबने पूछा — "क्या हुआ। क्या हमारे सामान मिलने का कोई मौका है?"

वह बोला — "मौका। तुम मौका कह सकते हो पर कोई मौका नहीं है। उफ़। तुममें से कोई क्या मेरे लिये सूखी घास का बिछौना बनायेगा। ऐनिसकोर्थी[70] में जितना भी प्लास्टर है वह भी मेरे घावों के लिये कम है।

उफ़। काश तुम सब जान पाते कि मुझे वहॉ क्या क्या भुगतना पड़ा। जब मैं रोशनी के लिये रसोई में एक जलती हुई लकड़ी लेने गया तो वहॉ तो एक बुढ़िया ऊन साफ कर रही थी। तुम लोग मेरे चेहरे पर ये निशान देख सकते हो जो उसने अपने उस ऊन को साफ करने वाले औजार से बनाये हैं।

फिर मैं जितनी जल्दी हो सकता था कमरे के दरवाजे की तरफ बढ़ा तो मैं किससे टकराया? एक चमार और उसके बैठने की जगह से। और अगर उसने अपने औजारों से मेरे ऊपर काम न किया होता तो तुम मुझे एक रोग कह सकते थे।

खैर किसी तरह से मैं वहॉ से निकला तो जब मैं दरवाजे में से हो कर जा रहा था तो लगता है कि शैतान वहा खुद ॅ बैठा हुआ था वह मेरे ऊपर कूद पड़ा और उसने मुझे अपने पंजों से घायल कर

[70] Enniscorthy – name of the place

दिया। उसके नाखून तो उसके छहपैनी[71] जैसे थे और उसके पंख? भगवान उसको रास्ते में बहुत सारी मुश्किलें दे। उफ़।

किसी तरह मैं घुड़साल में पहुँचा तो वहाँ तो मेरा स्ले[72] के हथौड़े से स्वागत हुआ जिससे मैं आधा मील दूर जा कर पड़ा।

अगर तुम्हें मेरा विश्वास नहीं होता तो मैं तुम्हें यहाँ से वहाँ जाने की छुट्टी देता हूँ तुम लोग खुद वहाँ जा कर देख सकते हो।

सबके मुँह से निकला — "ओह बेचारा कप्तान। हमें तुम पर पूरा विश्वास है। हमको उस बदकिस्मत केबिन में मत जाने दो।"

अगले दिन सूरज निकलने से पहले ही जैक और उसके साथी जाग गये थे। रात का जो कुछ बच गया था उससे उन्होंने खूब पेट भर कर नाश्ता किया और फिर सबने निश्चय किया कि वे डनलाविन के लौर्ड के महल जायेंगे और उसको उसका सोना चाँदी वापस कर देंगे।

जैक ने वहाँ पड़ा सारा सोना चाँदी एक थैले में रख कर उसे नैडी[73] की पीठ पर लाद दिया और सब लौर्ड के महल की तरफ चल पड़े। पहाड़ियों के ऊपर घाटियों से गुजरते हुए पीली सड़कों पर चलते हुए वे लौर्ड के महल तक आ पहुँचे।

---

[71] Sixpenny

[72] Sleigh is a wheelless slipping carriage, drawn by horses or dogs in icy regions. See its picture above

[73] Neddy, the ass.

और वहॉ था कौन हवा में सिर हिलाता हुआ सफेद मोजे पहने हुआ लाल ब्रीचेज़ पहने हुआ? पोर्टर।

उसने आने वालों की तरफ टेढ़ी नजर से देखा और जैक से पूछा — "यहॉ से तुम्हें क्या चाहिये मेरे अच्छे साथियो। यहॉ तुम सबके लिये जगह काफी नहीं है।"

जैक बोला — "हम यहॉ वह चाहते हैं जिसका हमें पता है कि तुम हमें नहीं दे रहे हो – और वह है सामान्य बर्ताव।"

पोर्टर बोला — "ठीक है ठीक है अन्दर आओ और जल्दी कहो जो कहना है वरना मैं अपने कुत्ते तुम्हारे ऊपर छोड़ दूँगा।"

मुर्गा जो गधे पर बैठा हुआ था बोला — "क्या आप बता सकते हैं कि कल रात घर का दरवाजा चोरों के लिये किसने खोला था।"

यह सुन कर पोर्टर के चेहरे का रंग लाल हो गया। पोर्टर को इस बात का पता नहीं था कि डनलाविन का लौर्ड अपनी सुन्दर बेटी के साथ कमरे की खिड़की पर अपना सिर बाहर निकाले खड़ा हुआ था और सब सुन रहा था।

वह बोला — "मुझे खुशी होगी बार्नी अगर तुम इस भले आदमी के सवाल का जवाब दोगे जो इस लाल कलगी वाले ने पूछा है।"

पोर्टर बोला — "इस गधे की बातों पर विश्वास मत कीजिये। यकीनन मैंने उन छह डाकुओं के लिये दरवाजा नहीं खोला।"

लौर्ड बोले — "ओ भोले आदमी। तुम्हें कैसे पता कि वे छह थे।"

जैक बोला — "जाने दीजिये। आपका सारा सोना और चॉदी यहॉ है इस थैले में। मुझे लगता नहीं कि इतनी लम्बी यात्रा के बाद यानी कि पूरा अथलासाच[74] का जंगल पार करने के बाद आपको हमें खाना और रहने की जगह देने में कोई परेशानी होगी।"

"परेशानी? अगर मैं तुम्हारी सहायता करूँगा तो तुम सब एक दिन के लिये भी बिना खाने पीने और रहने की जगह नहीं रहोगे।"

सो सबने खूब पेट भर कर खाना खाया। गधे कुत्ते और मुर्गे को खेत पर रख लिया गया। बिल्ले को रसोईघर में जगह मिल गयी। लौर्ड जैक का हाथ पकड़ कर ले गया उसे बर्फ से सफेद बहुत अच्छे कपड़े पहनाये एक बहुत अच्छी घड़ी बॉधी।

जब वे खाना खाने बैठे घर की स्त्री ने कहा कि जैक तो लगता है कि जन्म से है भला आदमी है। लौर्ड ने कहा कि वह उसे अपना खास नौकर बना लेगा। फिर जैक अपनी मॉ को भी वहीं ले आया और महल के पास ही उसको रहने की जगह दे दी गयी।

और फिर सब खुशी खुशी रहे।

[74] Athlasach – the name of a place

21 भेड़ा और सूअर...[75]

एक बार की बात है एक भेड़ा था जिसे मारने के लिये बहुत मोटा किया जा रहा था। क्योंकि उसके पास खाने के लिये बहुत मॉस था जिसको खा कर उसके ऊपर बहुत सारा मॉस चढ़ जाता।

एक दिन एक दूध वाली आयी तो उसने उसे और खाना दिया और बोली — "ओ भेड़े यह सब तो तुम्हें आज खाना ही पड़ेगा। तुम यहॉ बहुत समय तक नहीं रहोगे क्योंकि कल हम तुम्हें काटने जा रहे हैं।"

भेड़े ने अपने मन में सोचा "यह एक पुरानी कहावत है कि किसी बुढ़िया की सलाह का मजाक नहीं बनाना चाहिये। और वह सलाह सिवाय मौत के किसी भी चीज़ के लिये हो सकती है। पर हो सकता है कि आज मैं इससे बच कर भाग सकता हूँ।"

ऐसा सोचते हुए उसने उसे खाना शुरू कर दिया। उसने तब तक खाया जब तक उसका पेट बहुत नहीं भर गया। जब उसका पेट बहुत भर गया तब उसने अपने सींग दरवाजे में मारे दरवाजा खोला और पड़ोस के खेत की तरफ भाग गया।

---

[75] The Ram and the Pig Who Went into the Woods to Live by Themselves. By Peter Chr Asbjørnsen. From His Book "Fairy Tales from the Far North". 1897. From the Web Site : https://archive.org/details/fairytalesfromfa00asbj/page/n10/mode/1up
Ram is the male sheep.

वहॉ जा कर वह सूअरों के घर की तरफ भाग गया जहॉ उसने एक सूअर से दोस्ती कर रखी थी। वे लोग काफी दिनों से दोस्त थे और उनकी खूब बनती भी थी।

भेड़ा वहॉ पहुँच कर बोला — "सूअर भाई धन्यवाद। जबसे हम पहले मिले थे।"

सूअर बोला — "तुमको भी धन्यवाद भेंसे भाई।"

भेड़ा बोला — "क्या तुम्हें मालूम है कि वे तुम्हें इतने आराम से क्यों रखते हैं।"

नहीं मुझे तो नहीं मालूम।"

"क्योंकि इस खेत पर खाने वाले कई हैं तो वे तुम्हें मारने वाले हैं और खाने वाले हैं।"

सूअर ने पूछा — "क्या वे ऐसा ही करेंगे? भगवान उनका भला करे।"

भेड़ा बोला — "अगर तुम वही सोच रहे हो जो मैं सोच रहा हूँ तो चलो जंगल भाग चलते हैं वहीं जा कर अपना एक घर बनायेंगे और वहॉ अकेले रहेंगे। अपने बनाये घर से ज़्यादा अच्छा कुछ नहीं।"

सूअर ने हॉ कर दी दोनों राजी हो गये। सूअर बोला — "अच्छे साथ में रहना तो बहुत ही अच्छा है।" और वे वहॉ से चल दिये।

वे आगे बढ़े तो उन्हें एक बतख मिली। बतख बोली — "गुड डे साथियो। और पिछली बार जब हम मिले थे तबकी मेहरबानियों के लिये बहुत बहुत धन्यवाद।"

भेड़ा बोला — "गुड डे और तुमको भी धन्यवाद। हम लोग अपनी जगह पर कुछ ज़रा ज़्यादा ही आराम से थे सो अब हम लोग जंगल में अकेले रहने जा रहे हैं। यह तो तुम्हें मालूम ही है कि अपने घर में आदमी अपना मालिक खुद ही होता है।"

बतख बोली — "मैं तो आजकल जहॉ रह रही हूॅ बड़े आराम से रह रही हूॅ। पर फिर भी मैं तुम्हारे साथ क्यों न चलूॅ। साथ अच्छा हो तो दिन जल्दी बीत जाता है।"

सूअर बोला — "पर खाली उड़ने और क्वैक क्वैक बोलने से न ही घर बनता है न ही झोंपड़ी। तुम क्या सोचती हो कि तुम क्या कर सकती हो।"

"अच्छी सलाह और होशियारी भी उतना ही काम करती है जितना कि कोई राक्षस काम करता है। मैं मौस घास तोड़ कर उसे झिरियों में ठूॅस सकती हूॅ।"

सूअर ने सोचा तब तो यह बतख हमारे साथ चल सकती है क्योंकि उसको गर्म घर पसन्द था। बतख उनके साथ साथ नहीं चल पा रही थी। वह थोड़ा धीमे चल रही थी।

जब वे कुछ दूर चल लिये तो कहीं से बड़ा खरगोश धम धम करता वहॉ आ पहुॅचा।

वह बोला — "गुड डे लोगों। तुम लोगों की मेहरबानियों के लिये धन्यवाद जब हम आखिरी बार मिले थे। तुम लोग आज कितनी दूर तक जा रहे हो।"

भेड़ा बोला — "तुमको भी गुड डे और धन्यवाद। हम लोग अपनी अपनी जगह बहुत आराम से रह रहे थे पर अब हम जंगल में अपना एक घर बनाने और उसमें अकेले रहने जा रहे हैं। जब तुमने दुनियॉ देख ली हो तो तुमको पता चलेगा कि अपना घर तो अपना घर ही होता है और वही सबसे अच्छा होता है।"

बड़ा खरगोश बोला — "हालॉकि हर झाड़ी मेरा घर है पर जाड़ों में मैंने अक्सर सोचा है कि अगर मैं गर्मियों तक ज़िन्दा रहा तो मैं अपना घर जरूर बनाऊॅगा। सो मैं तुम लोगों के साथ चलूॅगा और एक घर बनाऊॅगा।"

सूअर बोला — "अगर हमारे साथ कुछ बुरा हुआ तो हम तुहें कुत्तों को डराने के लिये काम में तो ला ही सकते हैं। यह हमें मालूम है कि तुम हमारी घर बनाने में तो कोई सहायता कर नहीं सकते।"

बड़ा खरगोश बोला — "जिनको काम करने की इच्छा होती है उनके लिये इस दुनियॉ में कुछ न कुछ करने के लिये जरूर होता है।

मेरे दॉत इतने तेज़ है कि मैं तुम लोगों के लिये लकड़ी के डंडे काट सकता हूॅ। दीवार पर मारने के लिये मेरे पंजे बहुत अच्छे हैं। मैं बढ़ईगीरी का काम अच्छी तरह कर सकता हूॅ। जैसा कि आदमी

लोग जब वे अपनी घोड़ी की खाल साफ करते हैं तो कहते हैं कि अच्छे औजार अच्छा काम करते हैं।"

सूअर ने सोचा "यह हमारे साथ आ सकता है और हमारा घर बनाने में हमारी सहायता कर सकता है। इसमें कोई नुकसान नहीं है।"

इसके बाद वे सब थोड़ा और आगे चले तो उनको एक मुर्गा मिला। मुर्गा बोला — "गुड डे लोगों। तुम लोगों की मेहरबानियों को लिये धन्यवाद जब हम आखिरी बार मिले थे। तुम सब लोग आज कहॉ जा रहे हो।"

भेड़ा बोला — "तुमको भी गुड डे और धन्यवाद। हम लोग अपनी अपनी जगह बहुत आराम से रह रहे थे पर अब हम जंगल में अपना एक घर बनाने और उसमें अकेले रहने जा रहे हैं। क्योंकि अगर तुम घर में खाना न बनाओ तो आग और केक दोनों ही खो देते हो।"

मुर्गा बोला — "मैं अपनी जगह जहॉ भी मैं इस समय हूॅ वहॉ बहुत अच्छे से रह रहा हूॅ पर दूसरे के घर में रहने से तो अपने घर में रहना बहुत अच्छा है। और फिर मुझे तुम जैसों का साथ मिल जाये तब तो बहुत ही अच्छा है। मैं भी तुम लोगों के साथ जंगल जा कर घर बनाना चाहूॅगा।"

सूअर बोला — "पंख फड़फड़ाना और बॉग देना शोर मचाने के लिये तो ठीक है पर इससे छत के तख्ते तो नहीं कट सकते न। तुम मकान बनाने में हमारी कोई सहायता नहीं कर सकते।"

इस पर मुर्गा बोला — "ऐसे घर में रहना ठीक नहीं है जिसमें न तो कोई कुत्ता हो और न कोई मुर्गा। मैं जल्दी उठता हूँ और जल्दी ही बॉग देता हूँ।"

क्योंकि सूअर तो हमेशा से ही बहुत सोने वाला था। सूअर बोला — "जल्दी उठना किसी को भी तन्दुरुस्त अमीर और अक्लमन्द बनाता है सो तुम हमारे साथ आ सकते हो। सोना तो बहुत बड़ा चोर है। वह किसी की भी ज़िन्दगी का आधा हिस्सा चुरा लेता है।"

सो वे सब जंगल की तरफ चल दिये और वहॉ जा कर घर बनाया। सूअर ने पेड़ गिराये और भेड़ा घसीट घसीट कर उनको घर बनाने की जगह तक ले कर आया। बड़े खरगोश ने बढ़ई का काम किया। उसने खूँटियॉ काटीं और उनको दीवार में लगाया।

बतख मौस की घास ले कर आयी और उसे लट्ठों के बीच की झिरियों में भरा। और मुर्गा जब तब बॉग दे दे कर सबको जगाये रखता था ताकि कोई ज़्यादा न सो जाये।

जब मकान बन गया तो बिर्च के पेड़ की छाल से उस पर छत डाल दी गयी और घास फूस से उसे ढक दिया गया। अब वे लोग वहॉ अपने आपसे रह सकते थे। सब उसमें खुश और सन्तुष्ट थे।

भेड़ा बोला — "यह तो सच है कि पूर्व घूम आओ या पश्चिम घूम आओ पर जो आराम अपने घर में है वह कहीं नहीं है।"

उसी जंगल में कुछ दूरी पर दो भेड़िये रहते थे। उन्होंने जब यह देखा कि उनके पड़ोस में एक नया घर बना है तो उनके दिल में यह इच्छा पैदा हुई कि वे यह जानें कि उनके पड़ोसी किस तरह के लोग थे।

उनका सोचना था कि एक अच्छा पड़ोसी दूर रहते हुए भाई से ज़्यादा अच्छा होता है। इसके अलावा एक अच्छे पड़ोसी के साथ रहना ज़्यादा अच्छा है बजाय दूर तक अपना नाम फैलाने के।

सो उनमें से एक ने सोचा कि वह उनसे अपने पाइप के लिये आग माँग कर उनसे जान पहचान बढ़ायेगा।

जैसे ही वह घर के दरवाजे से अन्दर घुसा तो भेड़ा उसके ऊपर दौड़ा और अपने सींगों से एक ऐसा धक्का मारा कि भेड़िया अँगीठी में जा कर गिरा। सूअर ने उसको मारा और काटा। बतख ने भी उसको अपनी चोंच मारी। मुर्गा ऊपर चढ़ कर बैठ गया और ज़ोर ज़ोर से बोलने लगा।

पर खरगोश तो उसे देख कर इतना डर गया कि वह तो इधर उधर कूदने लगा। कभी वह ऊँचा कूद जाता तो कभी नीचा। एक कोने से दूसरे कोने में छिपने लगा।

किसी तरह से भेड़िया उनके घर से बाहर निकलने में सफल हुआ। भेड़िया जो घर के बाहर खड़ा दूसरे भेड़िये का इन्तजार कर रहा था बोला — "अपने पड़ोसी को जानना तो अपनी अक्लमन्दी बढ़ाना है। मुझे लगता है कि तुम्हारा वहॉ खासा शानदार स्वागत हुआ है क्योंकि तुम तो वहॉ काफी देर रुक कर आ रहे हो। पर आग का क्या हुआ। मुझे तो न तुम्हारा पाइप दिखायी दे रहा है और न कोई धुऑ ही।"

दूसरा भेड़िया बोला — "मुझे तो वहॉ बहुत अच्छी आग मिली और वे लोग भी कितने अच्छे थे। मैंने इससे पहले ऐसा स्वागत कभी नहीं देखा। जब तुम अपना बिस्तर बिछाते हो तो तुम्हें उस पर लेटना ही चाहिये और जो अचानक आने वाला मेहमान होता है उसको उसी से सन्तुष्ट होना चाहिये जो उसे मिल जाये।

जैसे ही मैं अन्दर पहुॅचा जूता बनाने वाले ने मेरे ऊपर अपना आखिरी जूता फेंका और मैं एक भट्टी में जा कर पड़ा। वहॉ दो लोहार बैठे थे जो आग जलाने के लिये धौंकनी चला रहे थे और साथ में चिमटे से मेरा मॉस भी नोचते जा रहे थे।

एक शिकारी अपनी बन्दूक ढूॅढने के लिये इधर उधर घूम रहा था पर मेरी खुशकिस्मती से वह उसे मिली नहीं। और ऊपर छत पर कोई बैठा बैठा हाथ मल रहा था और चिल्ला रहा था "इसे पकड़ लो। इसे पकड़ लो। इसे ऊपर टॉग दो इसे ऊपर टॉग दो।

अगर कहीं उसने मुझे पकड़ लिया होता तो मैं तो कभी वहाँ से वापस आ ही नहीं पाता।"

List of Stories of "Go Together" Book

1. Anansi and Talking Melon
2. Crystal Rooster
3. Half Rooster
4. The Spider and the Flea
5. The Mouse and the Cat
6. The Little Old Grandmother
7. The Goats in the Garden
8. The World's Reward
9. Long, Broad and the Sharpsighted
10. A Boat For Land and Water
11. A Fool and a Flying Ship
12. The Five Scapegraces
13. Momotaro or Little Peachling
14. Story of a Cat and a Hen
15. The Foolish Monkey and the Crab
16. The Mittens
17. Great Heart and the Three Tests
18. The Golden Goose
19. Hoe Jack Made His Fortune
20. Jack and His Comrades
21. The Ram and the Pig…

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में सौ से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
जून 2022